भारत [illegible]न्दकी

[illegible]

सन् १[illegible]३[illegible] ई०

## संवत् १६८७ माघ कृष्णपक्ष

| तिथि | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | ३[illegible] |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वार | चं | मं | बु | गु | शु | श | र | चं | मं | बु | गु | शु | श | [illegible] |
| नक्षत्र | पु | पु | आ | म | पू | उ | ह | चि | वि | ऽनु | ज्ये | मू | पू | [illegible] |

## संवत् १६८७ फाल्गुन कृष्णपक्ष

| तिथि | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १[illegible] |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वार | मं | बु | गु | शु | श | र | चं | मं | बु | गु | शु | श | र | चं |
| नक्षत्र | श्रा | म | पू | उ | ह | चि | स्वा | वि | ऽनु | ज्ये | मू | पू | उ | [illegible] |

## संवत् १६८७ चैत्र कृष्णपक्ष

| तिथि | १ | २ | ३ | ४ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १२ | १३ | १[illegible] |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वार | गु | शु | श | र | चं | मं | बु | गु | शु | श | र | चं | मं | [illegible] |
| नक्षत्र | उ | ह | चि | स्वा | वि | ऽनु | ज्ये | मू | पू | उ | श्र | ध | श | [illegible] |

## संवत् १६८८ वैशाख कृष्णपक्ष

| तिथि | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | [illegible] |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वार | शु | श | र | चं | मं | बु | गु | शु | श | र | चं | मं | बु | [illegible] |
| नक्षत्र | ह | चि | वि | ऽनु | ज्ये | मू | पू | उ | उ | श्र | ध | श | पू | [illegible] |

## संवत् १६८८ ज्येष्ठ कृष्णपक्ष

| तिथि | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वार | र | चं | मं | बु | गु | शु | श | र | चं | मं | बु | गु | शु |
| [illegible]त्र | वि | ऽनु | ज्ये | मू | पू | उ | श्र | ध | श | पू | उ | रे | श्र |

## संवत् १६८८ प्रथम आषाढ़ कृष्णपक्ष

| | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | ११ | १[illegible] |
| [illegible] | [illegible] | शु | श | र | चं | मं | बु | गु | शु | श[illegible] |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | ध | श | पू | पू | उ | रे | श्र | भ[illegible] |

## संवत् १९८७ माघ शुक्लपक्ष

| | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २ | ३ | ४ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | ❀ |
| मं | बु | गु | शु | श | र | चं | मं | बु | गु | शु | श | र | चं | ❀ |
| अ | ध | श | पू | उ | रे | अ | भ | कृ | रो | मृ | आ | पु | पु | ❀ |

## संवत् १९८७ फाल्गुन शुक्लपक्ष

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ |
| [illegible] | बु | गु | शु | श | र | चं | मं | बु | गु | शु | श | र | चं | मं | बु |
| [illegible] | श | पू | उ | रे | रे | अ | भ | कृ | रो | मृ | आ | पु | पु | आ | पू |

## संवत् १९८८ चैत्र शुक्लपक्ष

| | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १५ | ❀ |
| शु | श | र | चं | मं | बु | गु | शु | श | र | चं | मं | बु | गु | ❀ |
| उ | रे | अ | भ | कृ | रो | मृ | आ | पु | पु | आ | म | पू | उ | ❀ |

## संवत् १९८८ वैशाख शुक्लपक्ष

| | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ |
| श | र | चं | मं | बु | गु | शु | श | र | चं | मं | बु | गु | शु | श |
| अ | भ | कृ | रो | मृ | आ | पु | पु | आ | म | पू | उ | ह | चि | स्वा |

## संवत् १९८८ ज्येष्ठ शुक्लपक्ष

| | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | ❀ |
| चं | मं | बु | गु | शु | श | र | चं | मं | बु | गु | शु | श | र | ❀ |
| कृ | रो | मृ | आ | पु | पु | आ | पू | उ | ह | चि | स्वा | वि | ऽनु | ❀ |

## संवत् १९८८ प्रथम आषाढ़ शुक्लपक्ष

| | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३० | १ | २ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ |
| मं | बु | गु | शु | श | र | चं | मं | बु | गु | शु | श | र | चं | मं |
| मृ | आ | पु | पु | आ | म | पू | उ | ह | चि | स्वा | ऽनु | ज्ये | मू | पू |

# गीता-दैनन्दिनी

## [ गीताडायरी ]

## सन् १९३१ ई०

मूल्य ।) सजिल्द ।-)

| सन् १९३१ | जनवरी | | | | | फरवरी | | | | | | मार्च | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रविवार | ० | ४ | ११ | १८ | २५ | ० | १ | ८ | १५ | २२ | ० | १ | ८ | १५ | २२ | २९ | ० |
| सोमवार | ० | ५ | १२ | १९ | २६ | ० | २ | ९ | १६ | २३ | ० | २ | ९ | १६ | २३ | ३० | ० |
| मंगलवार | ० | ६ | १३ | २० | २७ | ० | ३ | १० | १७ | २४ | ० | ३ | १० | १७ | २४ | ३१ | ० |
| बुधवार | ० | ७ | १४ | २१ | २८ | ० | ४ | ११ | १८ | २५ | ० | ४ | ११ | १८ | २५ | ० | ० |
| बृहस्पतिवार | १ | ८ | १५ | २२ | २९ | ० | ५ | १२ | १९ | २६ | ० | ५ | १२ | १९ | २६ | ० | ० |
| शुक्रवार | २ | ९ | १६ | २३ | ३० | ० | ६ | १३ | २० | २७ | ० | ६ | १३ | २० | २७ | ० | ० |
| शनिवार | ३ | १० | १७ | २४ | ३१ | ० | ७ | १४ | २१ | २८ | ० | ७ | १४ | २१ | २८ | ० | ० |

| | अप्रैल | | | | | मई | | | | | | जून | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रविवार | ० | ५ | १२ | १९ | २६ | ० | ३ | १० | १७ | २४ | ३१ | ० | ७ | १४ | २१ | २८ | ० |
| सोमवार | ० | ६ | १३ | २० | २७ | ० | ४ | ११ | १८ | २५ | ० | १ | ८ | १५ | २२ | २९ | ० |
| मंगलवार | ० | ७ | १४ | २१ | २८ | ० | ५ | १२ | १९ | २६ | ० | २ | ९ | १६ | २३ | ३० | ० |
| बुधवार | १ | ८ | १५ | २२ | २९ | ० | ६ | १३ | २० | २७ | ० | ३ | १० | १७ | २४ | ० | ० |
| बृहस्पतिवार | २ | ९ | १६ | २३ | ३० | ० | ७ | १४ | २१ | २८ | ० | ४ | ११ | १८ | २५ | ० | ० |
| शुक्रवार | ३ | १० | १७ | २४ | ० | १ | ८ | १५ | २२ | २९ | ० | ५ | १२ | १९ | २६ | ० | ० |
| शनिवार | ४ | ११ | १८ | २५ | ० | २ | ९ | १६ | २३ | ३० | ० | ६ | १३ | २० | २७ | ० | ० |

प्रथम वर्ष सं० १९८४, ५०००
द्वितीय वर्ष सन् १९२८, ५०००
तृतीय वर्ष सन् १९२९, ८०००
चतुर्थ वर्ष सन् १९३०, १००००
पञ्चम वर्ष सन् १९३१, ७२५०

मुद्रक तथा प्रकाशक
घनश्यामदास
गीताप्रेस, गोरखपुर

ॐ श्रीपरमात्मने नमः

# मनुष्य-जीवनका उद्देश्य

हमारा उद्देश्य है सच्चे सुखको पाना, सच्चा सुख एक परमात्माके सिवा और किसी भी वस्तुमें नहीं है। जब परमात्माकी प्राप्ति हो जाती है तब जगत्की सब वस्तुओंमें भी परमात्मा व्याप्त दीखते हैं, इस अवस्थामें भक्तको सारा ही जगत् सुखमय प्रतीत होता है। इस उद्देश्यकी पूर्तिके लिये चोरी, व्यभिचार, झूठ, कपट, छल, हिंसा, अभक्ष्यभोजन और प्रमाद आदि शास्त्र-विरुद्ध नीच कर्मोंको मन, वाणी और शरीरसे त्यागकर, मनु-कथित दश धर्म अथवा पतञ्जलि-कथित दश यम-नियमादिका पालन करते हुए अपने-अपने मतके अनुसार भगवान्को सर्वव्यापी, सर्वान्तर्यामी, एकमात्र जगदीश्वर जानकर उनके साकार या निराकार रूपकी भक्ति करनी चाहिये। और साथ ही वर्णाश्रमके अनुसार अपने सारे कर्म निष्काम-भावसे भगवान्के लिये उनकी आज्ञा समझकर करने चाहिये! सर्वव्यापी भगवान्की अपने स्वकर्मोंके द्वारा निष्काम-भावसे पूजा करना ही जीवनके इस उद्देश्यकी पूर्तिका सहज उपाय है।

मनु महाराजके बतलाये हुए दश धर्म—

१ धृति—भारी विपत्तिमें भी विचलित न होना,

प्रथम वर्ष सं० १९८४, ५०००
द्वितीय वर्ष सन् १९२८, ५०००
तृतीय वर्ष सन् १९२९, ८०००
चतुर्थ वर्ष सन् १९३०, १००००
पञ्चम वर्ष सन् १९३१, ७२५०

मुद्रक तथा प्रकाशक
घनश्यामदास
गीताप्रेस, गोरखपुर

ॐ श्रीपरमात्मने नमः

# मनुष्य-जीवनका उद्देश्य

हमारा उद्देश्य है सच्चे सुखको पाना, सच्चा सुख एक परमात्माके सिवा और किसी भी वस्तुमें नहीं है। जब परमात्माकी प्राप्ति हो जाती है तब जगत्की सब वस्तुओंमें भी परमात्मा व्याप्त दीखते हैं, इस अवस्थामें भक्तको सारा ही जगत् सुखमय प्रतीत होता है। इस उद्देश्यकी पूर्तिके लिये चोरी, व्यभिचार, झूठ, कपट, छल, हिंसा, अभक्ष्यभोजन और प्रमाद आदि शास्त्र-विरुद्ध नीच कर्मोंको मन, वाणी और शरीरसे त्यागकर, मनु-कथित दश धर्म अथवा पतञ्जलि-कथित दश यम-नियमादिका पालन करते हुए अपने अपने मतके अनुसार भगवान्को सर्वव्यापी, सर्वान्तर्यामी, एकमात्र जगदीश्वर जानकर उनके साकार या निराकार रूपकी भक्ति करनी चाहिये। और साथ ही वर्णाश्रमके अनुसार अपने सारे कर्म निष्काम-भावसे भगवान्के लिये उनकी आज्ञा समझकर करने चाहिये! सर्वव्यापी भगवान्की अपने स्वकर्मोंके द्वारा निष्काम-भावसे पूजा करना ही जीवनके इस उद्देश्यकी पूर्तिका सहज उपाय है।

मनु महाराजके बतलाये हुए दश धर्म—

१ धृति—भारी विपत्तिमें भी विचलित न होना,

राम भजनमें एकसे, वर्ण चार नर-नार।
जड़ मूरख भी हों तुरत, भवसागरसे पार॥

—रामदासजी

'सब सुखदाता राम हैं, दूसर नाहिंन कोइ।
कहु नानक सुनु रे मना! तेहि सुमिरत गति होइ॥'

—गुरु नानक

'...जो शान्तिकी खोजमें है, उसको तो अवश्य राम-नाम पारसमणि बना सकता है। ...देहधारीके लिये नामका सहारा अत्यावश्यक है। ...नाम-महिमा बुद्धिवादसे सिद्ध नहीं हो सकती, श्रद्धासे अनुभवसाध्य है।' —महात्मा गांधी

'...व्याकुल होकर उसका नाम अवश्य लेते रहो। बस, नामकी शक्तिसे अपने आप निरपराध बन जाओगे, कुछ आँसू तो अवश्य खर्च करने पड़ेंगे। ...नामके प्रतापसे ही भक्तिका आविर्भाव होता है। ...पर सावधान! अपना भजन दुनियाको दिखाते मत फिरना।' —श्रीभूपेन्द्रनाथ संन्याल



# याद रखनेकी बातें

( १ ) दुःख मनुष्यत्वके विकाशका साधन है। सच्चे मनुष्यका जीवन दुःखमें ही खिल उठता है। सोनेका रङ्ग तपानेपर ही चमकता है।

( २ ) सर्वत्र परमात्माकी मधुर मूर्ति देखकर आनन्दमें मग्न रहो, जिसको उसकी मूर्ति सब जगह दीखती है वह तो स्वयं आदि अपना डेरा न जमा ले !

( ३ ) शान्ति तो तुम्हारे अन्दर है। कामनारूप डाकिनीका आवेश उतरा कि शान्तिके दर्शन हुए। वैराग्यके महामन्त्रसे कामनाको भगा दो, फिर देखो सर्वत्र शान्तिकी शान्त मूरति।

( ४ ) परमात्मापर विश्वास रखकर अपनी जीवन-डोर उसके चरणोंमें बाँध दो, फिर निर्भयता तो तुम्हारे चरणोंकी दासी बन जायगी।

( ५ ) बीते हुएकी चिन्ता न करो, जो अब करना है उसे विचारो और विचारो यही कि बाकीका सारा जीवन केवल उस परमात्माके ही काममें आवे।

( ६ ) भक्त वही है जिसका अन्तःकरण समस्त पापतापोंसे रहित होकर केवल अपने इष्टदेव परमात्माका नित्य निकेतन बन गया है।

( ७ ) भक्तका हृदय ही जब पापोंसे शून्य होता है तब उसकी शारीरिक क्रियाओंमें तो पापको स्थान ही कहाँ है ? जो रातदिन पापमें लगे रहकर भी अपनेको भक्त समझते हैं वे या तो जगत्को ठगनेके लिये ऐसा करते हैं अथवा स्वयं अपनी विवेकहीन बुद्धिसे ठगे गये हैं।

( ८ ) भक्त और साधु बनना चाहिये, कहलाना [illegible] लिये भक्त बनना चाहते

'...जो शान्तिकी खोजमें

हैं, वे पापोंसे ठगे जाते हैं, ऐसे लोगोंपर सबसे पहला आक्रमण दम्भका होता है।

( ९ ) भक्ति अपने सुखके लिये हुआ करती है, दुनियाको दिखलानेके लिये नहीं, जहाँ दिखलानेका भाव है वहीं कृत्रिमता है।

( १० ) शरीरका नाश तो होगा ही फिर कोई ऐसी मौत क्यों न ढूँढ़ लो, जिससे किसी दूसरेका उपकार हो।

( ११ ) जो आत्माको अमर नहीं जानते, वही मृत्युसे काँपा करते हैं।

( १२ ) पराये पापोंके प्रायश्चित्तकी चिन्ता न करो, पहिले अपने पापोंका प्रायश्चित्त करो।

( १३ ) दूसरेके पापोंको प्रकाश करनेके बदले, सुहृद् बनकर उनको ढको, सुई छेद करती है, पर धागा अपने

शरीरका अंश देकर भी उस छेदको भर देता है। इसी प्रकार दूसरेके छिद्रोंको भर देनेके लिये अपना शरीर अर्पण कर दो, पर छिद्र न करो, धागा बनो सुई नहीं।

(१४) अपने हृदयको सदा टटोलते रहना ही साधकका कर्तव्य है, उसमें घृणा, द्वेष, हिंसा और वैर, मान, अहंकार, कामना आदि अपना डेरा न जमा लें ! बुरा कहलाना अच्छा है परन्तु अच्छा कहलाकर बुरा बने रहना बहुत ही बुरा है।

(१५) किसीके मुंहसे कोई बात अपने विरुद्ध सुनते ही उसे अपना विरोधी मत मान बैठो, विरोधका कारण ढूँढ़ो और उसे मिटानेकी सच्चे हृदयसे चेष्टा करो, हो सकता है तुममें ही कोई दोष हो, जो तुम्हें अब तक न दीख पड़ा हो अथवा वही बिना बुरी नियतके भी किसी परिस्थितिके प्रवाहमें बह गया हो, ऐसी स्थितिमें शान्ति और प्रेमसे काम लेना चाहिये।

(१६) कर्तव्यमें प्रमाद न करना ही सफलताकी कुंजी है और उसीपर परमात्माकी कृपा होती है, आलसी और कर्तव्यविमुख लोग उसके योग्य नहीं।

(१७) बाहरसे निर्दोष कहलानेका प्रयत्न न कर मनसे निर्दोष बनना चाहिये। मनसे निर्दोष मनुष्यको

दुनिया दोषी बतलावे तो भी कोई हानि नहीं, परन्तु मनमें दोष रखकर बाहरसे निर्दोष कहलाना हानिकारक है।

(१८) चाहे जैसी प्रतिकूल, विकट और विपत्तिकी अवस्थामें भी जो न घबराकर अपने साधु-प्रयत्नको जारी रखता है और भगवान्‌से प्रार्थना करता है, उसकी प्रार्थना भगवान् अवश्य सुनते हैं।

(१९) संसारका काम करते हुए उस कामका बुरा मालूम होना केवल वैराग्य नहीं है, इसमें हरामीपन भी है, यदि केवल वैराग्य ही होता तो संसारका कुछ भी काम न करनेके समय निरन्तर भजन ध्यान ही हुआ करता।

(२०) मनुष्यको समयकी कीमत जाननी चाहिये, समय क्षण क्षणमें घट रहा है। मनुष्य-शरीरका समय अमूल्य है, इसे भजन, ध्यान, सत्संगरूप अमूल्य कामोंमें ही लगाना चाहिये। जिनका समय केवल पेट-पालनेमें ही जाता है वे तो महान्‌पशु हैं।

(२१) धनकी प्राप्तिके उद्देश्यसे काम करनेपर मन संसारमें रम जाता है, इसलिये सांसारिक कार्य बड़ी सावधानीसे करना चाहिये। इस प्रकारसे भी अधिक कार्य नहीं करना चाहिये, कार्यकी अधिकतासे उद्देश्यमें परिवर्तन हो जाता है।

# शान्ति-सन्देश !

सारे संसारको शान्ति, समत्व और एकत्वका उपदेश देनेवाली दिव्य-दुन्दुभि, विश्व-ज्ञान-प्रबोधिनी गुटिका, मोहन-मुरलीसे मुखरित सर्वोपनिषत्-सार-संगीत, सर्वशास्त्र-मयी, भगवान्‌की साक्षात् वाङ्मयी-मूर्ति ऐसे भावी विश्व-धर्मके एकमात्र सर्वोत्तम धर्मग्रन्थ–

'श्रीमद्भगवद्गीता'

का अभ्यास, पठनपाठन प्राणीमात्रको अवश्य ही करना चाहिये।

उसकी दिव्य-वाणीका नमूना देखिये।

१–"जो सब भूतोंमें द्वेषभावसे रहित, स्वार्थरहित सबका प्रेमी, हेतुरहित दयालु, ममतासे रहित, अहंकारसे रहित, सुख-दुःखोंकी प्राप्तिमें सम और क्षमावान् है अर्थात् अपराध करनेवालेको भी अभय देनेवाला है तथा जो ध्यानयोगमें युक्त हुआ निरन्तर :लाभ-हानिमें सन्तुष्ट, मन और

इन्द्रियोंसहित शरीरको वशमें किये हुए, मेरेमें दृढ़ निश्चयवाला है, वह मेरेमें अर्पण किये हुए मन-बुद्धिवाला मेरा भक्त मुझे प्रिय है।"—गीता अ० १२। १३-१४

२—"जो न कभी हर्षित होता है, न द्वेष करता है, न शोच करता है, न कामना करता है और जो शुभ-अशुभ सम्पूर्ण कर्मोंके फलका त्यागी है, वह भक्तियुक्त पुरुष मुझे प्रिय है"—गीता १२। १७

३—"सर्वथा भयका अभाव, अन्तःकरणकी अच्छी प्रकारसे स्वच्छता, तत्त्वज्ञानके लिये ध्यानयोगमें निरन्तर दृढ़ स्थिति, सात्त्विक दान, इन्द्रियोंका दमन, भगवत्-पूजा और अग्निहोत्रादि उत्तम कर्मोंका आचरण, वेद-शास्त्रोंके पठन-पाठनपूर्वक भगवत्के नाम और गुणोंका कीर्तन, स्वधर्म-पालनके लिये कष्ट सहन करना, शरीर और इन्द्रियोंसहित अन्तःकरणकी सरलता।" गी० १६।१

४—"मन, वाणी, शरीरसे किसी प्रकार भी

किसीको कष्ट न देना, यथार्थ और प्रिय भाषण, अपना अपकार करनेवालेपर भी क्रोधका न होना, कर्मोंमें कर्तापनके अभिमानका त्याग, अन्तःकरणकी उपरामता अर्थात् चित्तकी चञ्चलताका अभाव, किसीकी भी निन्दादि न करना, सब भूत प्राणियोंमें हेतुरहित दया, इन्द्रियोंका विषयोंके साथ संयोग होनेपर भी आसक्तिका न होना, कोमलता, लोक और शास्त्रके विरुद्ध आचरणमें लज्जा और व्यर्थ चेष्टाओंका अभाव।" गी० १६।२

५—"तेज, क्षमा, धैर्य, बाहर-भीतरकी शुद्धि, किसीमें भी शत्रु-भावका न होना, अपनेमें पूज्यताके अभिमानका अभाव। हे अर्जुन! यह सब दैवी-सम्पदाको प्राप्त हुए पुरुषके लक्षण हैं।" गी० १६।३

६—"काम, क्रोध तथा लोभ यह तीन प्रकारके नरकके द्वार आत्माका नाश करनेवाले हैं अर्थात् अधोगतिमें ले जानेवाले हैं। इससे इन तीनोंको त्याग देना चाहिए।" गी० १६।२१

# कुछ जानने योग्य बातें

रेल—रेल-यात्रामें प्रत्येक १०० मीलके बाद २४ घंटे तक, कहीं भी ठहरकर, यात्री फिर उसी टिकटसे आगे जा सकता है।

२—बिछौनेको छोड़कर, पहिले दरजेका यात्री १॥ मन, दूसरेका १ मन, डेवढ़ेका ३० सेर और तीसरेका २५ सेर असबाब बिना किराये साथ ले जा सकता है। ज्यादा हो तो तौलाकर महसूल दे देना चाहिये।

३—रेल कर्मचारी बिना रसीद दिये कोई रकम नहीं ले सकता। अनुचित ली हुई रकम रसीदके आधारसे लिखा पढ़ी करके वापस ले सकते हैं।

४—यदि कोई कर्मचारी यात्रीसे असभ्यताका व्यवहार करे, तो उसी लाइनके डिस्ट्रिक्टट्राफिक सुपरिन्टेन्डेन्ट या ट्राफिक मैनेजरसे शिकायत करनी चाहिये।

डाक—२॥तोलेतककी चिट्ठीपर-)का, इसके बाद प्रति २॥ तोले या उससे कम पर भी -) का टिकट अधिक लगाना पड़ता है। भारत, बर्मा और सीलोन तीनोंके लिये एक ही नियम है।

२—पोस्टकार्डपर दाहिनी तरफके आधेमें पानेवालेके पतेके सिवा और कुछ भी न लिखना चाहिये।

३–पुस्तक या पत्रादि, पैकेटके रूपमें दोनों ओर खुला पैक करके भेजनेसे तथा नमूनेका पैकेट बन्द करके भेजनेसे भी प्रति ५ तोला )॥ लगता है। नमूनेका पैकेट २०० तोले तक जा सकता है।

४–रजिष्ट्री किये हुए सामयिक पत्रोंका ८तोलेतक )।, २० तोले तक )॥, इसके बाद प्रति २० तोले या उससे कमपर भी )॥ लगता है।

५–बैरंग होनेसे दूना महसूल लगता है।

६–बीमा करानेके प्रति १००) का या उससे कमतीके भी =) अलग लगते हैं। बिना रजिस्ट्री बीमा और वी० पी० नहीं होता। दो ( चपड़ीकी )मोहरोंके बीचमें २ इञ्चसे अधिक अन्तर नहीं होना चाहिये।

७–रजिष्ट्री करानेके =) अलग लगते हैं और जवाबी रजिष्ट्रीके ≡) लगते हैं।

८–पार्सलके २०तोले तक=), ४०तोले तक≡), इसके बाद ४४०तोले तक प्रति ४० तोले ≡), इसके बाद ८०० तोले तक प्रति ४० तोले।) लगते हैं।

९–मनिआर्डरकी दर १०)रुपये तक =),२५)तक ।), ३५) तक ।=), ५०) तक॥), १००) की १) है।

१०–सर्टिफिकेटका नियम–बिना रजिष्ट्रीका

पारसल, चिट्ठी, पैकेट या कार्ड डाकघरकी सर्टिफिकेट लेकर भेजे जा सकते हैं। एक पैसेमें पारसल ६ और चिट्ठी, कार्ड, पैकट ३ तकका सर्टिफिकेट मिलता है।

११-वी०पी०-रजिष्ट्री पारसल, रजिष्ट्री चिट्ठी वी० पी०से जा सकती है। जिनका रुपया पानेवालेसे वसूल करके पोष्टआफिस मनीआर्डरसे भेजनेवालेके पास पहुँचा देती है। इसकी दर १०) तक =), १०)से २५) तक।) इसके बाद हर १०) ज्यादा तक =) और फिर हर २५)तक।); वी०पी० १०००) तककी भेजी जा सकती है। वी० पी० खर्च भेजनेवालेका नहीं लगता।

वी० पी० की बीमा भी बिकती है, बीमा वी० पी०की कीमतसे ज्यादाकी भी बिक सकती है।

तार-१२ शब्दके साधारण तारका ॥।), जल्दी जानेवालेका १॥) लगता है, १२से अधिक शब्दोंका दर-) और=) लगता है। जवाबी तारके लिये पहलेका ।॥) और दूसरेका १॥)और अधिक लगता है। जवाबी फारम काममें न लाया जाय, तो दो महीने तक (तार डाइरेक्टर जनरल, कलकत्तासे) दाम वापिस मंगा सकते हैं। भारत और वर्माके तारका एकही नियम है।

२–प्रेसके लिये ४८ शब्दके साधारण तारका ॥),
जल्दी जानेवालेका १) लगता है, ४८ से अधिक
शब्दोंका प्रति ६ शब्दका दर –) और =) है।

३–डाक और तारकी शिकायतें, पोष्टमास्टर जनरल
को करनी चाहिये। शिकायती चिट्ठी बैरङ्ग जा सकती है।

अदालत-दावाका रसूम ५) रुपये तक ।=),
१००) तक प्रति ५) का ।=) की दरसे, १०००) तक
प्रति १०) का ॥।), ५०००) तक प्रति १००) का ५),
१००००) तक प्रति २५०) का १०), २००००) तक
प्रति ५००) का १५), ३००००) तक प्रति हजारका
२०) की दरसे लगता है।

# इनकम टैक्सकी दर

सालाना २०००) से कम आमदनीपर टैक्स नहीं
लगता। सालाना २०००) से ४९९९) तक प्रति
रुपया पांच पाई, ५०००) से ९९९९) तक प्रति
रुपया छः पाई यानी दो पैसे, १००००) से १४९९९)
तक प्रति रुपया नौ पाई यानी तीन पैसे, १५०००) से
१९९९९) तक प्रति रुपया दस पाई २००००)
से २९९९९) तक तेरह पाई। ३००००) से ३९९९९)
तक प्रति रुपया सोलह पाई। ४००००) से ऊपर १९ पाई
५००००) से ऊपर सुपर टैक्स अलग लगता है।

# घरेलू नुसखे

सर्दीका बुखार—तुलसीके पत्ते १० काली मिरच १० खूबकला १ तोला, पोदीना ॥) भर, धनिया १ तोला आध सेर पानीमें चढ़ाकर, आध पाव रह जानेपर १ तोला मिश्री मिलाकर देना चाहिये।

बुखारमें जलन—पेटमें जलन हो तो सफेद चन्दन घिसकर दो तोले अन्दाज नाभिमें डाल दे। सारे शरीरमें जलन हो तो नाभिपर कांसेकी कटोरी रखकर एक हाथ ऊंचेसे उसमें पानीकी धार छोड़े; दस मिनिटमें जलन मिट सकती है।

मलेरिया ज्वर—( काली ) तुलसीके पत्ते ११ और काली मिरच ११ बुखार चढ़े रहने और उतरने पर भी। अपामार्गकी जड़ लाल रेशमसे भुजापर बांधनी चाहिये। तुलसीके २० पत्ते २० काली मिरचके साथ रोज चवाने चाहिये।

उदरामय—सौंफ तवेपर सेककर १ भर और कच्ची १ भर मिलाकर ॥) भर मिश्रीके साथ पीसकर फाँके।

पेट फूलना—नमक एक आना भर और अजवायन ॥) भर मिलाकर खाय।

मन्दाग्नि–सैन्धव नमकके साथ, हींग भूंजकर प्रतिदिन भोजनके पहले ग्रासके साथ खाय, मात्रा दोनों एक एक आना भर। भोजनके कुछ पहिले नमकके साथ थोड़ीसी अदरख सेवन करे।

आँवके दस्त–सूखा बेल, पुराना गुड़, काली मिरच पीसकर बराबर, मात्रा १ तोला अथवा इसबगोलके साथ मिश्री मिलाकर फाँक ले। मात्रा एक एक तोला। खून पड़ता हो तो दूबका रस २ तोले पीवे।

कृमि–विडंगचूर्ण आधा तोला शहदके साथ ले, या नीमके पत्तीका रस आधा तोला पी ले।

नहरुवा–दो आना भर कपूर, दहीमें घोलकर कुछ दिन पीनामात्र ही इसकी अक्सीर दवा है। वमन हो तो घबराये नहीं।

बवासीर–खून पड़ता हो तो, दूबका रस १ छटांक चीनी मिलाकर या नागकेशर एक तोला चीनी मिला कर पीसकर ले। दर्दमें भांगकी धूंई दे। खून न पड़ता हो तो हर्रे २ तोले गोमूत्रमें पीसकर गुड़के साथ सात दिनतक ले। खून पड़ता हो तो फिटकिरीके जलसे शौचके समय अंग धोना चाहिये।

सर्दी–थोड़ासा कपूर खाना और सूंघना चाहिये।

खांसी–तेजपत्ता, काली मिरच, मुलेठी तीन तीन तोले आधसेर पानीमें आगपर चढ़ाकर आध पाव रहनेपर छानकर शामके वक्त पी ले। मिश्री भी मिला सकते हैं। अदरखके रसके साथ शहद मिलाकर पीनेसे भी लाभ होता है।

श्वास–मोरपंखकी भस्म एक आना, शहद एक आना मिलाकर चाटे।

किसी जगह कट जानेपर–बरफ या पानीकी पट्टी रक्खे या गेंदेके फूल पीसकर बांधनेसे खून बन्द हो सकता है।

खुजली–दो रत्ती शुद्ध गन्धक रोज सेवन करे। चावलमोगरेका तेल लगाये। नीमपत्तोंके जलसे धोये।

दाद–माजूफलका चूर्ण आठ तोला, इमलीकी छाल-की भस्म १ तोला, नारियलके तेलमें मिलाकर लगावे।

फोड़ा–चिकनी मिट्टी पानीमें सानकर उसे फोड़े-पर बांध ले, या अनन्तमूलकी जड़ पीसकर उसका चारों ओर लेप करे।

मेह–कच्ची हलदीका रस आधी छटाक रोज पीवे।



हिचकी और मूर्छा–तेज सात काली मिरच

सूईकी नोकमें पिरोकर रोगीके नाकमें उसका धूआं दे।

सिरदुखना-पुराने गुड़के साथ सोंठका चूर्ण मिलाकर सूंघे। सोंठ, बादाम, अफीम, कपूर, सफेद चन्दनके साथ पीसकर जरा सा गरम करके लेप करे, अफीम बहुत थोड़ा डाले।

वात-आधी छटाक धतूरेके बीज कूटकर तीन पाव खालिस सरसोंके तेलमें सात दिन भिगो-छानकर उस तेलका मालिस करे।

प्रदर-मुलेठी २ तोला, चीनी २ तोला, चावल धोये हुए जलमें पीसकर दिनमें दो बार सेवन करे इससे रक्तप्रदर भी मिट सकता है। अशोकछालके काथसे भी प्रदर आराम होता है।

रक्तस्राव-रज बहुत पड़ता हो तो नागकेशरकी फांकी या दूबका रस पीना चाहिये। पेटपर ठण्ढे पानीकी पट्टी रखनी चाहिये।

बहुमूत्र-पुराने गुड़के साथ काले तिल भूंजकर लड्डू बना ले, रोज दो लड्डू खाय।

पारसल, चिट्ठी, पैकेट या कार्ड डाकघरकी सर्टिफिकेट लेकर भेजे जा सकते हैं। एक पैसेमें पारसल ६ और चिट्ठी, कार्ड, पैकट ३ तकका सर्टिफिकेट मिलता है।

११-वी०पी०-रजिष्ट्री पारसल, रजिष्ट्री चिट्ठी वी० पी०से जा सकती है। जिनका रुपया पानेवालेसे वसूल करके पोष्टआफिस मनीआर्डरसे भेजनेवालेके पास पहुँचा देती है। इसकी दर १०) तक =), १०)से २५) तक।) इसके बाद हर १०) ज्यादा तक =) और फिर हर २५)तक।); वी०पी० १०००) तककी भेजी जा सकती है। वी० पी० खर्च भेजनेवालेका नहीं लगता।

वी० पी० की बीमा भी बिकती है, बीमा वी० पी०की कीमतसे ज्यादाकी भी बिक सकती है।

तार-१२ शब्दके साधारण तारका ॥।), जल्दी जानेवालेका १॥) लगता है, १२से अधिक शब्दोंका दर-) और=) लगता है। जवाबी तारके लिये पहलेका ॥।) और दूसरेका १॥)और अधिक लगता है। जवाबी फारम काममें न लाया जाय, तो दो महीने तक (तार डाइरेक्टर जनरल, कलकत्तासे ) दाम वापिस मंगा सकते हैं। भारत और वर्माके तारका एक ही नियम है।

२–प्रेसके लिये ४८ शब्दके साधारण तारका ॥), जल्दी जानेवालेका १) लगता है, ४८ से अधिक शब्दोंका प्रति ६ शब्दका दर -) और =) है।

३–डाक और तारकी शिकायतें, पोष्टमास्टर जनरल को करनी चाहिये। शिकायती चिट्ठी बैरङ्ग जा सकती है।

अदालत-दावाका रसूम ५) रुपये तक ।=), १००) तक प्रति ५) का ।=) की दरसे, १०००) तक प्रति १०) का ॥।), ५०००) तक प्रति १००) का ५), १००००) तक प्रति २५०) का १०), २००००) तक प्रति ५००) का १५), ३००००) तक प्रति हजारका २०) की दरसे लगता है।

# इनकम टैक्सकी दर

सालाना २०००) से कम आमदनीपर टैक्स नहीं लगता। सालाना २०००) से ४९९९) तक प्रति रुपया पांच पाई, ५०००) से ९९९९) तक प्रति रुपया छः पाई यानी दो पैसे, १००००) से १४९९९) तक प्रति रुपया नौ पाई यानी तीन पैसे, १५०००) से १९९९९) तक प्रति रुपया दस पाई २००००) से २९९९९) तक तेरह पाई। ३००००) से ३९९९९) तक प्रति रुपया सोलह पाई। ४००००) से ऊपर १९ पाई ५००००) से ऊपर सुपर टैक्स अलग लगता है।

# घरेलू नुसखे

सर्दीका बुखार–तुलसीके पत्ते १० काली मिरच १० खूबकला १ तोला, पोदीना ॥) भर, धनिया १ तोला आध सेर पानीमें चढ़ाकर, आध पाव रह जानेपर १ तोला मिश्री मिलाकर देना चाहिये।

बुखारमें जलन-पेटमें जलन हो तो सफेद चन्दन घिसकर दो तोले अन्दाज नाभिमें डाल दे। सारे शरीरमें जलन हो तो नाभिपर कांसेकी कटोरी रखकर एक हाथ ऊंचेसे उसमें पानीकी धार छोड़े; दस मिनिटमें जलन मिट सकती है।

मलेरिया ज्वर–(काली) तुलसीके पत्ते ११ और काली मिरच ११ बुखार चढ़े रहने और उतरने पर भी। अपामार्गकी जड़ लाल रेशमसे भुजापर बांधनी चाहिये। तुलसीके २० पत्ते २० काली मिरचके साथ रोज चबाने चाहिये।

उदरामय–सौंफ तवेपर सेककर १ भर और कच्ची १ भर मिलाकर ॥) भर मिश्रीके साथ पीसकर फाँके।

पेट फूलना–नमक एक आना भर और अजवायन ॥) भर मिलाकर खाय।

मन्दाग्नि–सैन्धव नमकके साथ, हींग भूंजकर
तिदिन भोजनके पहले ग्रासके साथ खाय, मात्रा
ोनों एक एक आना भर। भोजनके कुछ पहिले
मकके साथ थोड़ीसी अदरख सेवन करे।

आँवके दस्त–सूखा बेल, पुराना गुड़, काली
मरच पीसकर बराबर, मात्रा १ तोला अथवा इसब-
ोलके साथ मिश्री मिलाकर फाँक ले। मात्रा एक एक
ोला। खून पड़ता हो तो दूबका रस २ तोले पीवे।

कृमि–विडंगचूर्ण आधा तोला शहदके साथ ले,
ा नीमके पत्तीका रस आधा तोला पी ले।

नहरुवा–दो आना भर कपूर, दहीमें घोलकर
छ दिन पीनामात्र ही इसकी अक्सीर दवा है। वमन
ो तो घबराये नहीं।

बवासीर–खून पड़ता हो तो, दूबका रस १ छटांक
ीनी मिलाकर या नागकेशर एक तोला चीनी मिला
र पीसकर ले। दर्दमें भांगकी धूंई दे। खून न पड़ता
ो तो हर्रे २ तोले गोमूत्रमें पीसकर गुड़के साथ
ात दिनतक ले। खून पड़ता हो तो फिटकिरीके
लसे शौचके समय अंग धोना चाहिये।

सर्दी–थोड़ासा कपूर खाना और सूंघना चाहिये।

पारसल, चिट्ठी, पैकेट या कार्ड डाकघरकी सर्टिफिकेट लेकर भेजे जा सकते हैं। एक पैसेमें पारसल ६ और चिट्ठी, कार्ड, पैकट ३ तकका सर्टिफिकेट मिलता है।

११-वी०पी०-रजिष्ट्री पारसल, रजिष्ट्री चिट्ठी वी० पी०से जा सकती है। जिनका रुपया पानेवालेसे वसूल करके पोष्टआफिस मनीआर्डरसे भेजनेवालेके पास पहुँचा देती है। इसकी दर १०) तक =), १०)से २५) तक ।) इसके बाद हर १०) ज्यादा तक =) और फिर हर २५)तक ।); वी०पी० १०००) तककी भेजी जा सकती है। वी० पी० खर्च भेजनेवालेका नहीं लगता।

वी० पी० की बीमा भी बिकती है, बीमा वी० पी०की कीमतसे ज्यादाकी भी बिक सकती है।

तार-१२ शब्दके साधारण तारका ॥।), जल्दी जानेवालेका १॥) लगता है, १२से अधिक शब्दोंका दर-) और=) लगता है। जवाबी तारके लिये पहलेका ।॥) और दूसरेका १॥)और अधिक लगता है। जवाबी फारम काममें न लाया जाय, तो दो महीने तक (तार डाइरेक्टर जनरल, कलकत्तासे) दाम वापिस मंगा सकते हैं। भारत और वर्माके तारका एक ही नियम है।

२–प्रेसके लिये ४८ शब्दके साधारण तारका ॥), जल्दी जानेवालेका १) लगता है, ४८ से अधिक शब्दोंका प्रति ६ शब्दका दर –) और =) है।

३–डाक और तारकी शिकायतें, पोष्टमास्टर जनरल को करनी चाहिये। शिकायती चिट्ठी बैरङ्ग जा सकती है।

अदालत-दावाका रसूम ५) रुपये तक ।=), १००) तक प्रति ५) का ।=) की दरसे, १०००) तक प्रति १०) का ॥।), ५०००) तक प्रति १००) का ५), १००००) तक प्रति २५०) का १०), २००००) तक प्रति ५००) का १५), ३००००) तक प्रति हजारका २०) की दरसे लगता है।

# इनकम टैक्सकी दर

सालाना २०००) से कम आमदनीपर टैक्स नहीं लगता। सालाना २०००) से ४९९९) तक प्रति रुपया पांच पाई, ५०००) से ९९९९) तक प्रति रुपया छः पाई यानी दो पैसे, १००००) से १४९९९) तक प्रति रुपया नौ पाई यानी तीन पैसे, १५०००) से १९९९९) तक प्रति रुपया दस पाई २००००) से २९९९९) तक तेरह पाई। ३००००) से ३९९९९) तक प्रति रुपया सोलह पाई। ४००००) से ऊपर १९ पाई ५००००) से ऊपर सुपर टैक्स अलग लगता है।

# घरेलू नुसखे

सर्दीका बुखार-तुलसीके पत्ते १० काली मिरच १० खूबकला १ तोला, पोदीना ॥) भर, धनिया १ तोला आध सेर पानीमें चढ़ाकर, आध पाव रह जानेपर १ तोला मिश्री मिलाकर देना चाहिये।

बुखारमें जलन--पेटमें जलन हो तो सफेद चन्दन घिसकर दो तोले अन्दाज नाभिमें डाल दे। सारे शरीरमें जलन हो तो नाभिपर कांसेकी कटोरी रखकर एक हाथ ऊंचेसे उसमें पानीकी धार छोड़े; दस मिनिटमें जलन मिट सकती है।

मलेरिया ज्वर-( काली ) तुलसीके पत्ते ११ और काली मिरच ११ बुखार चढ़े रहने और उतरने पर भी। अपामार्गकी जड़ लाल रेशमसे भुजापर बांधनी चाहिये। तुलसीके २० पत्ते २० काली मिरचके साथ रोज चबाने चाहिये।

उदरामय-सौंफ तवेपर सेककर १ भर और कची १ भर मिलाकर ॥) भर मिश्रीके साथ पीसकर फाँके।

पेट फूलना-नमक एक आना भर और अजवायन ॥) भर मिलाकर खाय।

मन्दाग्नि–सैन्धव नमकके साथ, हींग भूंजकर प्रतिदिन भोजनके पहले ग्रासके साथ खाय, मात्रा दोनों एक एक आना भर। भोजनके कुछ पहिले नमकके साथ थोड़ीसी अदरख सेवन करे।

आँवके दस्त–सूखा बेल, पुराना गुड़, काली मिरच पीसकर बराबर, मात्रा १ तोला अथवा इसबगोलके साथ मिश्री मिलाकर फाँक ले। मात्रा एक एक तोला। खून पड़ता हो तो दूबका रस २ तोले पीवे।

कृमि–विडंगचूर्ण आधा तोला शहदके साथ ले, या नीमके पत्तीका रस आधा तोला पी ले।

नहरुवा–दो आना भर कपूर, दहीमें घोलकर कुछ दिन पीनामात्र ही इसकी अक्सीर दवा है। वमन हो तो घबराये नहीं।

बवासीर–खून पड़ता हो तो, दूबका रस १ छटांक चीनी मिलाकर या नागकेशर एक तोला चीनी मिला कर पीसकर ले। दर्दमें भांगकी धूंई दे। खून न पड़ता हो तो हर्रे २ तोले गोमूत्रमें पीसकर गुड़के साथ सात दिनतक ले। खून पड़ता हो तो फिटकिरीके जलसे शौचके समय अंग धोना चाहिये।

सर्दी–थोड़ासा कपूर खाना और सूंघना चाहिये।

खांसी–तेजपत्ता, काली मिरच, मुलेठी तीन तीन तोले आधसेर पानीमें आगपर चढ़ाकर आध पाव रहनेपर छानकर शामके वक्त पी ले। मिश्री भी मिला सकते हैं। अदरखके रसके साथ शहद मिलाकर पीनेसे भी लाभ होता है।

श्वास–मोरपंखकी भस्म एक आना, शहद एक आना मिलाकर चाटे।

किसी जगह कट जानेपर–बरफ या पानीकी पट्टी रक्खे या गेंदेके फूल पीसकर बांधनेसे खून बन्द हो सकता है।

खुजली–दो रत्ती शुद्ध गन्धक रोज सेवन करे। चावलमोगरेका तेल लगाये। नीमपत्तोंके जलसे धोये।

दाद–माजूफलका चूर्ण आठ तोला, इमलीकी छालकी भस्म १ तोला, नारियलके तेलमें मिलाकर लगावे।

फोड़ा–चिकनी मिट्टी पानीमें सानकर उसे फोड़ेपर बांध ले, या अनन्तमूलकी जड़ पीसकर उसका चारों ओर लेप करे।

मेह–कच्ची हलदीका रस आधी छटाक रोज पीवे।

हिचकी और मूर्छा–पांच सात काली मिरच

सूईकी नोकमें पिरोकर रोगीके नाकमें उसका धूआं दे।

सिरदुखना–पुराने गुड़के साथ सोंठका चूर्ण मिलाकर सूंघे। सोंठ, बादाम, अफीम, कपूर, सफेद चन्दनके साथ पीसकर जरा सा गरम करके लेप करे, अफीम बहुत थोड़ा डाले।

वात–आधी छटाक धतूरेके बीज कूटकर तीन पाव खालिस सरसोंके तेलमें सात दिन भिगो-छानकर उस तेलका मालिस करे।

प्रदर–मुलेठी २ तोला, चीनी २ तोला, चावल धोये हुए जलमें पीसकर दिनमें दो बार सेवन करे इससे रक्तप्रदर भी मिट सकता है। अशोकछालके काथसे भी प्रदर आराम होता है।

रक्तस्राव–रज बहुत पड़ता हो तो नागकेशरकी फांकी या दूबका रस पीना चाहिये। पेटपर ठण्ढे पानीकी पट्टी रखनी चाहिये।

बहुमूत्र–पुराने गुड़के साथ काले तिल भूंजकर लड्डू बना ले, रोज दो लड्डू खाय।

## माप तौलकी सूची

### कपड़ेका माप

८ जौ या पौन इञ्चकी
१ अंगुल

३ अंगुल या २। इञ्चकी
१ गिरह

८ गिरह या १८ इञ्चका
१ हाथ

२ हाथ या ३६ इञ्चकी
१ गज

१२ इञ्चकी १ फिट

१॥ फिट या १८ इञ्चका
१ हाथ

३ फिट या ३६ इञ्चका
१ गज

### वजन

१ रुपये भरका १ तोला

५ तोलेकी १ छटाक

२ छटाक या १० तोले
का आध पाव

२० तोलेका १ पाव

२ पावका आधसेर

४ पाव या दो आध-
सेरका १ सेर

५ सेरकी एक पसेरी

८ पसेरीका १ मन

### अंग्रेजी सिक्का

४ फार्दिंगकी १ पेनी

१२ पेनीका १ शिलिंग

२० शिलिंगका
१ पाउण्ड = रु० १५)

### अंग्रेजी वज़न

८ ड्रामका १ औंस

१६ औंसका १ पौण्ड

२८ पौंडका १ क्वार्टर

४ क्वार्टरका १ हंडरवेट

२० हंडरवेट ( हंडर )का
१ टन = २७। मन

अंग्रेजी और देशी वजन

प्राय:२॥ तोलेका १ औंस
३६॥ तोलेका १ पौंड
।Տ३॥=( तेरह सेर दस छटाकका ) १ क्वार्टर
१।Տ४॥ ( एक मन साढ़े चौदहसेरका ) १ हंडर
८२ पौण्डका १ मन

रास्तेका अंग्रेजी माप

१२ इन्चका १ फिट
३ फिटका १ गज
१७६० गजका १ माइल

रास्तेका देशी माप

३ अंगुलकी १ मुष्टि
६ मुष्टिका १ हाथ
४ हाथका १ धनु
२००० धनुका १ कोस

जमीनका माप

५ हाथ लम्बा × ४ हाथ चौड़ा—४५ स्कायरफिटका १ छटाक
१४ छटाक या ७२० स्कायरफिटका १ कट्ठा
२० कट्ठा या १४४०० स्कायरफिटका १ बीघा
३ १/४० बीघाका—१ एकड़

समय

६० अनुपलका १ विपल
६० विपलका १ पल
(६० सेकण्डका १ मिनट
६० पल या २४ मिनट) की १ घड़ी
२॥ घड़ीकी १ घण्टा
७॥ घड़ी या तीन घण्टेका १ पहर
८ पहरका १ दिनरात
७ दिनका एक सप्ताह
२ सप्ताहका १ पक्ष
२ पक्षका १ महीना
१२ महीनेका १ वर्ष

१२ वर्षका १ युग
१०० वर्षकी १ शताब्दी

## डाक्टरी वजन

२० ग्रेनका १ स्क्रुपल
३ स्क्रुपलका १ ड्राम
८ ड्राम या २॥ भरीका १ औंस
१२ औंसका १ पौण्ड
१८० ग्रेनका वजन १ तोलेके समान होता है।

## डाक्टरी माप

६० बूंदका १ ड्राम
८ ड्रामका १ औंस
१६ औंसका १ पाइण्ट

## वैद्यक वजन

४ धानका १ रत्ती
८ रत्तीका १ माशा
१२ माशेका १ तोला

## कागजका माप

फुल्स्कैप–१७ × १३॥ इञ्ची
डबल फुल्स्कैप–१७ × २७ ,,
क्राउन–१५ × २० ,,
डबल क्राउन–२० × ३०,,
डिमाई–१८ × २२ ,,
डबल डिमाई–२२ × ३६,,
मिडियम–१८ × २६ ,,
रायल–२० × २६ ,,
डबल रायल–२६ × ४०,,
सुपर रायल–२२ × २९,,
डबल सुपर रायल–२९ × ४४ ,,

## द्रव द्रव्योंका अंग्रेजी वजन

४ पिंटका १ क्वार्ट
२ क्वार्टका १ गैलन

# एक दिनके वेतनका नकशा।

| मासिकवेतन रुपये | २८ दिनका महीना तो १ दिनका | | | २९ दिनका महीना तो १ दिनका | | | ३० दिनका महीना तो १ दिनका | | | ३१ दिनका महीना तो १ दिनका | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | रु० | आ. | पा. | रु० | आ. | पा. | रु० | आ. | पा. | रु० | आ. | पा. |
| १ | ० | ० | ७ | ० | ० | ७ | ० | ० | ६ | ० | ० | ६ |
| २ | ० | १ | २ | ० | १ | २ | ० | १ | १ | ० | १ | ० |
| ३ | ० | १ | ९ | ० | १ | ८ | ० | १ | ७ | ० | १ | ६ |
| ४ | ० | २ | ३ | ० | २ | २ | ० | २ | २ | ० | २ | १ |
| ५ | ० | २ | १० | ० | २ | ९ | ० | २ | ८ | ० | २ | ७ |
| ६ | ० | ३ | ५ | ० | ३ | ४ | ० | ३ | ३ | ० | ३ | १ |
| ७ | ० | ४ | ० | ० | ३ | १० | ० | ३ | ९ | ० | ३ | ८ |
| ८ | ० | ४ | ७ | ० | ४ | ५ | ० | ४ | ३ | ० | ४ | २ |
| ९ | ० | ५ | २ | ० | ५ | ० | ० | ४ | ९ | ० | ४ | ८ |
| १० | ० | ५ | ९ | ० | ५ | ६ | ० | ५ | ४ | ० | ५ | २ |
| २० | ० | ११ | ५ | ० | ११ | ० | ० | १० | ८ | ० | १० | ४ |
| ३० | १ | १ | २ | १ | ० | ६ | १ | ० | ० | ० | १५ | ६ |
| ४० | १ | ६ | १० | १ | ६ | १ | १ | ५ | ४ | १ | ४ | ८ |
| ५० | १ | १२ | ७ | १ | ११ | ७ | १ | १० | ८ | १ | ९ | १० |
| ६० | २ | २ | ३ | २ | १ | ० | २ | ० | ० | १ | १५ | ० |
| ७५ | २ | १० | ११ | २ | ९ | ४ | २ | ८ | ० | २ | ६ | ९ |
| १०० | ३ | ९ | २ | ३ | ७ | २ | ३ | ५ | ४ | ३ | ३ | ७ |
| १५० | ५ | ५ | ९ | ५ | २ | ९ | ५ | ० | ० | ४ | १३ | ७ |
| २०० | ७ | २ | ३ | ६ | १४ | ४ | ६ | १० | ८ | ६ | ७ | ३ |
| ५०० | १७ | १३ | ९ | १७ | ३ | १० | १६ | १० | ८ | १६ | २ | १ |
| १००० | ३५ | ११ | ५ | ३४ | ७ | ८ | ३३ | ५ | ४ | ३२ | ४ | २ |

## गीता-जयन्ती-उत्सव

गीता-सरीखे महत्त्व-पूर्ण ग्रन्थकी जयन्ती–प्रतिवर्ष 'मासानां मार्गशीर्षोऽहम्'–मि० मार्गशीर्ष शुक्ल ११ को प्राणीमात्रको घर घरमें अवश्य ही मनानी चाहिये। जिसमें गीता-ग्रन्थ, इसके वक्ता और रचयिता भगवान् श्रीकृष्ण और व्यासदेवकी पूजा तथा इसका पारायण, अर्थकी चर्चा और तत्त्व समझने, प्रचार करनेके लिये स्थान स्थानमें सभाएँ, व्याख्यान आदि हों, गीता-ग्रन्थोंका प्रदर्शन हो, गीतांक निकाले जायं, गीतापर पुरस्कार निबन्ध लिखाये जायँ।

## श्रीगीता-परीक्षा-समिति, बरहज

श्रीगीता ही एक ऐसी पुस्तक है, जिसको प्रायः सभी आदरकी दृष्टिसे देखते हैं। इसलिये समितिने गीताद्वारा धार्मिक शिक्षाके अभावको दूर करनेका निश्चय किया है, समितिने परीक्षाके अभ्यासक्रमका और पुरस्कारादिका भी प्रबन्ध किया है। परीक्षा लेनेके लिये स्थान स्थानपर केन्द्र भी स्थापित किये जाते हैं। विशेष जानकारीके लिये, 'श्रीगीता-परीक्षा-समिति' बरहज, जिला गोरखपुरसे लिखापढ़ी करें।—संयोजक

# गीताप्रेस गोरखपुरकी पुस्तकें

## श्रीमद्भगवद्गीता

मूल, पदच्छेद, अन्वय, साधारणभाषाटीका और टिप्पणियोंसहित

१-इसकी टीका ऐसी सरल है कि साधारण मनुष्य भी थोड़ी मेहनतमें समझ सकते हैं।
२-श्लोकोंका ठीक अनुवाद रखा गया है।
३-हर संस्कृत शब्दके सामने उसका अर्थ दिया गया है, हाथ कर्घेके बुने पूरे कपड़ेकी अच्छी मजबूत जिल्द लगायी गयी है। ५७० पृष्ठ हैं। किताबका आकार डिमाई ८ पेजी है। चार तिरंगे चित्र हैं। दाम सिर्फ १।)

इसी प्रकारकी गीता साइज और कुछ टाइप छोटा करके सोलह पेजीमें छापी गयी है। इसमें गीताके सूक्ष्म विषय हर श्लोकके साथ किनारेपर रखे गये हैं। वह एक प्रकारसे हर श्लोकका सारांश है। प्रधान विषय हर अध्यायके आरम्भमें रखे गये हैं। पृष्ठ ४६८,

इस विशेषताके सिवा शेष बातें १।) वाली गीताके अनुसार ही हैं। मू०॥=) सजिल्द ॥।=)

## बंगला गीता

बंगलामें भी गीता छप गयी है पदच्छेद अन्वय अन्वयार्थ, प्रत्येक श्लोकका भाव दिया गया है, पृष्ठ ५४० चित्र ४ मूल्य १) सजिल्द १।)

गीता-साधारणभाषाटीकासहित सचित्र
३५२ पृष्ठ =)॥ सजिल्द ... ≡)॥

गीता-केवल भाषा, मोटा टाइप, सचित्र
मूल्य ।) सजिल्द ... ।=)

गीता-मूल, मोटे अक्षरवाली, सचित्र
मूल्य ।-) सजिल्द ... ।≡)

गीता-मूल, तावीजी साइज सजिल्द ≡)

गीता-मूल, विष्णुसहस्रनामसहित सचित्र =)

गीता-केवल दूसरा अध्याय अर्थ सहित )।

गीता-का सूक्ष्म विषय पाकेट साइज -)।

## तत्त्व-चिन्तामणि

कर्म, ज्ञान, भक्ति और सदाचार-सम्बन्धी आध्यात्मिक विषयोंका बड़ा सुन्दर निरूपण किया गया है, इस ग्रन्थके पढ़ने, मनन करने और

ॐ

# अथ श्रीमद्भगवद्गीता

## प्रथमोऽध्यायः

धृतराष्ट्र उवाच

धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः ।



१

काशिस्थमान्यबुधवंशधुरन्धराणां [illegible]
षट्कर्मिणां वरकलोत्तुलह त्वया नाम ॥
गोपालभट्टविबुधोत्तमपुङ्गवानां
पादौ [illegible] स्मरामि निजवंशविभूषणानाम् ॥

[illegible] भो॰ यहीं दोनों वरक्त (बदरीदत्त रासु महे)
तत्सूनुपुङ्गवसुदारविचारभावं
वाणीविलासविलसद्रसनाऽभिरामम् ।
पौराणिकप्रमुखवल्लपदारविन्दं
रामाऽभिधं वरकलं हृदये चिन्तयेऽहम् ॥ २ ॥
विख्यातहोलकरराज्यमहामहिष्या
हेमाब्जपत्रवरचामरयुग्मकेन ॥
यः सत्कृतोऽभवदपारगुणाः विधा-
नाभस्पति जं गतिप्रथितसार्वभौमः ॥ ३ ॥

[illegible]
आजप्रदोषनियमाऽनुसमरात्रीकोपारण
कल्याणसौगन्धिकरीका 'क(ऊ)' सम्पूर्ण की।

तस्यानुरत्नयुगुलं श्रुतिशास्त्रनिष्ठं
वंशाऽनुरूपचरितं विदुषां वरिष्ठम्॥
(ख) पष्ठं स्वतो वरकलं तमनन्तरामं
[illegible]
तस्रातरेच हृदये कलयामि बालम्॥
सद्वंशजाततनयां परिणीय हृष्टां
सीतां यथा रघुपतिः स रमाऽभिधानाम्।
[illegible] स्तनुयुगुलं [illegible] स्वमनन्तरामौ:
यश्चैव
स्व(रू)पापुरेव सुरतो काम(ले)प्यकार॥
पश्चादुत्तरशतद्वयरूप्यकाणां
वर्षाशनं प्रचालितो गृहलोग्रहीतुम्॥
तातेन साकमयमध्यान्ते भिक्षुमात्रे - १६
वर्णेन [illegible] घातित इति प्रार्थितं श्रीरामम्॥

आसीद्द्वयं तदमिलप्रति भंपुराणयियान दीक्षा-
प्रवितरैर भिन त्यमानम्॥ तन्याऽपि वेद वयसां
विदुषां वरेण्यो गोपालभद्दचिलुधो मम पञ्चमो
[illegible]

योग

पश्यैतां पाण्डुपुत्राणामाचार्य महतीं चमूम् ।
व्यूढां द्रुपदपुत्रेण तव शिष्येण धीमता ॥३॥
अत्र शूरा महेष्वासा भीमार्जुनसमा युधि ।
युयुधानो विराटश्च द्रुपदश्च महारथः ॥४॥

पौष शुक्ल १४ शनि ] २ जनवरी [ पौष १८

आज का पहर यहां भोजन करके चले सो छमील
चलकर शाम को 'सभलोधि' गांव में पहुंचे.
यहां पं. निहाल पण्डित के घर राती भर थे.
रात्री को यहां भोजन किया साथ पं. बदरीदत्त भी थे
30-४० घरों का यह गांव है यहां एक नाला है.
२ बावलीयां हैं एक मन्दिर है धाटी २२-३०
धर्मशालाएं भी हैं २२-२३ घर ब्राह्मणों के हैं
बाकी और जाती के है. कसबा 'नगरोटा' से
यह गांव दक्षिण पश्चिम को बीच ३ मील
है. पढो लिखो तो १५-२० पढे हैं.

अन्यस्तु शेषभाणितो परमः प्रवीणोऽ-
प्यपायुरेव कुजआंस्चव धं वि हाय ।।
निष्पुत्र एव सुर लोकमिपापगो नीनाथो
बुधो वदकाऽन्यय पूर्ण चन्द्रम

धृष्टकेतुश्चेकितानः काशिराजश्च वीर्यवान् ।
पुरुजित्कुन्तिभोजश्च शैब्यश्च नरपुङ्गवः ॥५॥
युधामन्युश्च विक्रान्त उत्तमौजाश्च वीर्यवान् ।
सौभद्रो द्रौपदेयाश्च सर्व एव महारथाः ॥६॥



सुबः शौचादि निपटकर यहांसे चले सो रास्तेमे 'मधुयाक' देखते हुए 'जलविम्ब' पहुंचे यह स्थान बडाही रमणीय है. यहां एक छोटा कुण्ड है स्रोत तो यहांसे कई निकलते है १ पक्का शिवमन्दिर है २-३ कुआरियां भी हैं. यह स्थान रेलवे स्टेशनसे सटा हुआ है. 'नगरोटा' यहांसे आधमील है. यहांसे नगरोटा पहुंचे यहां एक पक्के कुण्डमे स्नानादि करके पं. कृपाराम ज्योतिषीके यहां भोजन किया. इनके भाई पं. चौधरीसे भी बातचीत थोडी हुई. इन्होंने यहां अपना मन्त्रशास्त्रिक का बडा आडम्बर मचा रखा हुआ है. पं. कृपाराम ज्योतिषी बडाही सात्विक पुरुष है. यहां से फिर 'ठाणा' पहुंचे. शामको भो. यहां साथ पं. बद्रीदत्तजी थे.

अस्माकं तु विशिष्टा ये तान्निबोध द्विजोत्तम ।
नायका मम सैन्यस्य संज्ञार्थं तान्ब्रवीमि ते ॥७॥
भवान्भीष्मश्च कर्णश्च कृपश्च समितिंजयः ।
अश्वत्थामा विकर्णश्च सौमदत्तिस्तथैव च ॥८॥

---

माघ कृष्ण १ सोम सं० १९८७ ] ५ जनवरी [ पौष २०

भो॰ दोनो वक्त यहीं. आज घर बाल बनवाए

तारेडपाख्यबुधरामसुतामुदूह्य
गोपालभट्टविबुधः कमलाऽभिधानाम्।
श्रीरामकृष्णविबुधं जनयाम्बभूव ॥
पौराणिकप्रवरपण्डितसार्वभौमं
नानानिबन्धरचनानिपुणः कवीनां
चूडामणिर्विरकलाऽन्वयपद्मसूर्यः ।
श्रीबालकृष्णहरिमुप्र.भिम: समासीत् ॥
वाराणसी। विबुधमण्डलमण्डनं सः ।
गामे सदाशिवबुधस्य सुतामुदूह्य
लक्ष्मीति नाम कातीं महतीं कुलीनाम्॥
कन्यात्रयं सुतचतुष्टयकं समस्यां
वंशाऽनुरूपचरितं जनयाम्बभूव ॥

अन्ये च बहवः शूरा मदर्थे त्यक्तजीविताः ।
नानाशस्त्रप्रहरणाः सर्वे युद्धविशारदाः ॥९॥
अपर्याप्तं तदस्माकं बलं भीष्माभिरक्षितम् ।
पर्याप्तं त्विदमेतेषां बलं भीमाभिरक्षितम् ॥१०॥

---



दोनों वख्त भो. यहीं.
यहां पं. जोगेश्वर पुरोहित (कुई) 'अणुवाडी' का
रहनेवाला यहां आया हुआ था इसको एक श्लोक
पढाया. माघकाव्य का.
पं. बद्रीदत्त को मुक्तावली पढाना शुरू किया.

अयनेषु च सर्वेषु यथाभागमवस्थिताः ।
भीष्ममेवाभिरक्षन्तु भवन्तः सर्व एव हि ॥११॥
तस्य संजनयन्हर्षं कुरुवृद्धः पितामहः ।
सिंहनादं विनद्योच्चैः शङ्खं दध्मौ प्रतापवान् ॥१२॥



दोनोवक्त भो. यहीं.

ततः शङ्खाश्च भेर्यश्च पणवानकगोमुखाः ।
सहसैवाभ्यहन्यन्त स शब्दस्तुमुलोऽभवत् ॥१३॥
ततः श्वेतैर्हयैर्युक्ते महति स्यन्दने स्थितौ ।
माधवः पाण्डवश्चैव दिव्यौ शङ्खौ प्रदध्मतुः ॥१४॥



दोनोंवक्त भो. यहाँ

पाञ्चजन्यं हृषीकेशो देवदत्तं धनंजयः।
पौण्ड्रं दध्मौ महाशङ्खं भीमकर्मा वृकोदरः ॥१५॥
अनन्तविजयं राजा कुन्तीपुत्रो युधिष्ठिरः।
नकुलः सहदेवश्च सुघोषमणिपुष्पकौ ॥१६॥



दोनो वक्त भो. यहीं
आज उर्दू सीखना शुरू किया.

काश्यश्च परमेष्वासः शिखण्डी च महारथः।
धृष्टद्युम्नो विराटश्च सात्यकिश्चापराजितः ॥१७॥
द्रुपदो द्रौपदेयाश्च सर्वशः पृथिवीपते।
सौभद्रश्च महाबाहुः शङ्खान्दध्मुः पृथक्पृथक् १८

माघ कृष्ण ७ शनि ] १० जनवरी [ पौष २५

दो नौकरला भो· यहां

स घोषो धार्तराष्ट्राणां हृदयानि व्यदारयत् ।
नभश्च पृथिवीं चैव तुमुलो व्यनुनादयन् ॥१९॥
अथ व्यवस्थितान्दृष्ट्वा धार्तराष्ट्रान्कपिध्वजः ।
प्रवृत्ते शस्त्रसंपाते धनुरुद्यम्य पाण्डवः ॥२०॥

माघ कृष्ण ८ रवि ] ११ जनवरी [ पौष २६

दोनो बराबर भो. यहां.

हृषीकेशं तदा वाक्यमिदमाह महीपते।
अर्जुन उवाच
सेनयोरुभयोर्मध्ये रथं स्थापय मेऽच्युत ॥२१॥
यावदेतान्निरीक्षेऽहं योद्धुकामानवस्थितान् ।



दोनोंघरका भो. यहीं.
आजओगेरगद कुई [illegible] २ [illegible].

कैर्मया सह योद्धव्यमस्मिन्रणसमुद्यमे ॥२२॥
योत्स्यमानानवेक्षेऽहं य एतेऽत्र समागताः।
धार्तराष्ट्रस्य दुर्बुद्धेर्युद्धे प्रियचिकीर्षवः ॥२३॥

माघ कृष्ण १०, मंगल ] १३ जनवरी [ पौष २८

(मकर संक्रान्ति)

दोनों नहाये भी. यहां
आज मकर सङ्क्रान्ति 'अगस्त्य' कुण्डमें स्नान.
आज 'समारोह' में भी गये थे.

संजय उवाच

एवमुक्तो हृषीकेशो गुडाकेशेन भारत।
सेनयोरुभयोर्मध्ये स्थापयित्वा रथोत्तमम् ॥२४॥
भीष्मद्रोणप्रमुखतः सर्वेषां च महीक्षिताम्।

माघ कृष्ण ११ बुध ] १४ जनवरी [ पौष २९

दोनों वक्त भो · यहीं.

उवाच पार्थ पश्यैतान्समवेतान्कुरूनिति ॥२५॥
तत्रापश्यत्स्थितान्पार्थः पितॄनथ पितामहान् ।
आचार्यान्मातुलान्भ्रातॄन्पुत्रान्पौत्रान्सखींस्तथा ।
श्वशुरान्सुहृदश्चैव सेनयोरुभयोरपि ।

माघ कृष्ण १२ गुरु ] १५ जनवरी [ बं०माघ १

~~[illegible]~~
आज पं. राधाकृष्ण पण्डित चौधरी रोशी ठाण
के यहां भोजन को गया था. इन को नमस्ते तथा
स्त्री भी. यहां.

तान्समीक्ष्य स कौन्तेयः सर्वान्बन्धूनवस्थितान्
कृपया परयाविष्टो विषीदन्निदमब्रवीत्।

अर्जुन उवाच

दृष्ट्वेमं स्वजनं कृष्ण युयुत्सुं समुपस्थितम् ॥२८॥

---

माघ कृष्ण १३ शुक्र ] १६ जनवरी [ माघ २

~~[illegible]~~ मोठ्या.
~~[illegible]~~ रनपका.
~~[illegible]~~.
आज प्रदोष नियमाऽनुसार रात्रौ पारण.

सीदन्ति मम गात्राणि मुखं च परिशुष्यति।
वेपथुश्च शरीरे मे रोमहर्षश्च जायते ॥२९॥
गाण्डीवं स्रंसते हस्तात्त्वक्चैव परिदह्यते।
न च शक्नोम्यवस्थातुं भ्रमतीव च मे मनः ॥३०॥

माघ कृष्ण १४ शनि ]     १७ जनवरी     [ माघ ३

आज भोजन करके चले सो ७॥ मील
पलकाईभवन पहुंचे. साथ शलानन्द नैपाली
था. रास्ते में पं. पद्मनाभ कुई पुरोहित मिला
फिर इसको भवन लेगये. सभी को भोजन
और रात्रि वास्ते इसके डेरे.
भगवती बज्रेश्वरी का दर्शन किया. पा. गौरीभद्र का
दर्शन किया.
पं. पद्मनाभ के डेरे में एक राजपूत रहता है जो कि
तहसील कांगड़ा में (बासलवाकितवीस) मुलाजिम है.
यह बहुत मगरूर है और श्रमद भी है. यह 'अंग्रेजों'
के पास रहने वाला है 'उधमसिंह' इसका नाम है.
इसने रात्रि भर रखा इससे बहुत बुरा व्यवहार किया.
मध्यजन ने रघुकानदार पुरोहित कांगड़े का रहने वाला था
'प्यारेलाल' मिला था.

निमित्तानि च पश्यामि विपरीतानि केशव।
न च श्रेयोऽनुपश्यामि हत्वा स्वजनमाहवे ॥३१॥
न काङ्क्षे विजयं कृष्ण न च राज्यं सुखानि च।
किं नो राज्येन गोविन्द किं भोगैर्जीवितेन वा ३२

माघ कृष्ण ३० रवि ] १८ जनवरी [ माघ ४

आज श्री [illegible] के 'सूर्यकुण्ड' में स्नान [illegible] के
भगवती का दर्शन किया 'पाठ' भी किया.
[illegible] भोजन. 'शतानन्द' नेपाली को
[illegible] 'दुर्गा' [illegible]
[illegible] है. [illegible].
[illegible]

येषामर्थे काङ्क्षितं नो राज्यं भोगाः सुखानि च।
त इमेऽवस्थिता युद्धे प्राणांस्त्यक्त्वा धनानि च
आचार्याः पितरः पुत्रास्तथैव च पितामहाः।
मातुलाः श्वशुराः पौत्राः श्यालाः सम्बन्धिनस्तथा

माघ शुक्ल १ सोम ]     १६ जनवरी     [ माघ ५

आज भोरसि पै कुण्डमें स्ना नादि करके दर्शनाकेपा
भोजन भाव कृष्ण धूणी के पर. आज भोजन.
शाम को ठिकाणा' पहुंचे. रात को पछें भोजन.

एतान्न हन्तुमिच्छामि घ्नतोऽपि मधुसूदन।
अपि त्रैलोक्यराज्यस्य हेतोः किं नु महीकृते ३५
निहत्य धार्तराष्ट्रान्नः का प्रीतिः स्याज्जनार्दन।
पापमेवाश्रयेदस्मान्हत्वैतानाततायिनः॥३६॥



दोनों वक्त यही भो॰

तस्मान्नार्हा वयं हन्तुं धार्तराष्ट्रान्स्वबान्धवान् ।
स्वजनं हि कथं हत्वा सुखिनः स्याम माधव ।३७।
यद्यप्येते न पश्यन्ति लोभोपहतचेतसः ।
कुलक्षयकृतं दोषं मित्रद्रोहे च पातकम् ॥३८॥

माघ शुक्ल ३ बुध ] २१ जनवरी [ माघ ७

दो तोला रक्त यहां भी.

कथं न ज्ञेयमस्माभिः पापादस्मान्निवर्तितुम्।
कुलक्षयकृतं दोषं प्रपश्यद्भिर्जनार्दन ॥३९॥
कुलक्षये प्रणश्यन्ति कुलधर्माः सनातनाः।
धर्मे नष्टे कुलं कृत्स्नमधर्मोऽभिभवत्युत ॥४०॥

माघ शुक्ल ४ गुरु ] २२ जनवरी [ माघ ८

आज सुबह शौचादि करके नगरोटा [illegible] स्टेशन से रेल में
बैठकर ज्वालामुखी रोड स्टेशन पर उतरे साथ पं. बद्रीद-
त्त थे. [illegible] भी था. ये दोनों 'मंगवाले' गये. मेरा
यहाँ तक टिकट का किराया था ।।।=) बद्रीदत्त ने दिया.
और १६ मोटर किराये के लिये दिया. ।।।-)
किराया मोटर पार्टी का से [illegible] से ज्वालामुखी
तक लगा ।-) कहीं गिर गया. पुजारी भैरवदत्त
भोजकी के नाम चिट्ठी पं. बद्रीदत्त ने दी थी. ज्वा-
लाजी के दर्शन किये. फिर भैरवदत्त के घर गये
भैरवदत्त को चिट्ठी दी थी. यह बहुत ही सभ्य और
[illegible] पुरुष है. संस्कृत भी पढ़ा है, बुद्धिमा-
न और चतुर भी है. [illegible]
[illegible] शाम को 'सिद्ध नागार्जुन' 'अ-
म्बिकेश्वरी' 'कालिस्थल' देखने गया था
साथ 'भैरवदत्त' और हनुमतलाल थे [illegible]
[illegible] भी थे. [illegible] भैरवदत्त के घर पर
हुआ निवास भी यहीं.

अधर्माभिभवात्कृष्ण प्रदुष्यन्तिकुलस्त्रियः।
स्त्रीषु दुष्टासु वार्ष्णेय जायते वर्णसंकरः ॥४१॥
संकरो नरकायैव कुलघ्नानां कुलस्य च।
पतन्ति पितरो ह्येषां लुप्तपिण्डोदकक्रियाः ॥४२॥

माघ शुक्ल ५ शुक्र ] २३ जनवरी [ माघ ६

( बसन्तपञ्चमी )

आज सुबः कपिस्थल में चौथ स्नानादि कर
के भगवती का दर्शन किया। बतासा ।) द.
चढ़ाई फिर भैरवदत्त के यहां रोटी खाकर
चले सो ७ मील चलकर 'कालेश्वर'
पहुंचे यह बड़ा ही सुन्दर स्थान है 'विपाशा'
नदी यहां बह रही है. १ कुआं पाट बना हुआ है
ऊपर खड़े मन्दिर हैं धर्मशाला है. कालेश्व-
र' शम्भु का दर्शन किया।) भल्या 'पंचतीर्थी'
देखकर यहां से चले सो शाम को 'गरली' [illegible]
पहुंचे यहां 'संस्कृत पाठशाला' का वार्षिकोत्सव शु-
रू हुआ था आज समाप्ति न था. पाठशाला में
ठहरे श्री भोजन तथा निवास यहीं इसके मा-
लिक श्री [illegible] है इन्हों ने २-३ दिन
[illegible] हनुमत [illegible]

दोषैरेतैः कुलघ्नानां वर्णसंकरकारकैः।
उत्साद्यन्ते जातिधर्माः कुलधर्माश्च शाश्वताः॥४३॥
उत्सन्नकुलधर्माणां मनुष्याणां जनार्दन।
नरकेऽनियतं वासो भवतीत्यनुशुश्रुम ॥४४॥

माघ शुक्ल ५ शनि ] २४ जनवरी [ माघ १०

आज भो. यहीं रातको। सिर्फ दूध.
यहां एक गेरुए कपडेका बड़ा भारी मिथि
ला देशका। मिला यह खुफिया मालूम हो
ता है. यह आज शाम को यहांसे चला गया.
आज भी उत्सव था इसमें मैंने यहां के सब
उपक्षीपक लोगों के आग्रह से थोड़ा॰ पार॰ या तभी
दिया था. आज सुबः उठकर देखा तो जूता
ओढी. फिर रात को जाजम मला एमने वैसे
[illegible] आपाने रखरसो.

अहो बत महत्पापं कर्तुं व्यवसिता वयम् ।
यद्राज्यसुखलोभेन हन्तुं स्वजनमुद्यताः ॥४५॥
यदि मामप्रतीकारमशस्त्रं शस्त्रपाणयः ।
धार्तराष्ट्रा रणे हन्युस्तन्मे क्षेमतरं भवेत् ॥४६॥

---

माघ शुक्ल ६ रवि ]     २५ जनवरी     [ माघ ११

भो. एक वल्ल. रात को सिर्फ दूध.
आज भी यही उसे पथा आज भी थोड़ा
आराम नहीं पाया.

संजय उवाच

एवमुक्त्वार्जुनः संख्ये रथोपस्थ उपाविशत् ।
विसृज्य सशरं चापं शोकसंविग्नमानसः ॥४७॥

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादेऽर्जुनविषादयोगो नाम प्रथमोऽध्यायः ॥१॥



आज भी यहीं
आज यहां का उत्सव समाप्त हुआ. 'भैरवद-
त्त और 'हनुमन्तलाल' यहीं ठहर गये.
पं. भैरवदत्त भोजकी ज्वालाजी का पण्डा है.
यह 'ब्राह्मण' पास है. पर तुलिया कल अच्छी है
बुद्धिमान है. बहुत ही सज्जन है. आज सुबः
'रथसप्तमी' के लिये 'कालेश्वर' में स्नान को लिये
गये थे. 'विपाशा में स्नान किया. (१ ब्राह्मण ३।
कालेश्वर)। कुमारी और ब्राह्मण. 'हनुमन्तलाल'
२,२।। लाइव को धनी था कलकत्ते में इस का मन्दिर
था. लेकिन इस समय कुछ भी इसके पास नहीं है.
सारा धन मुकद्दमे में चला गया. मिजाज भी कुछ सनक
सा गया है. गाना बजाना अच्छा जानता है. प्यार
इसका रामपुर है.
आगे

ॐ

## द्वितीयोऽध्यायः

संजय उवाच

तं तथा कृपयाविष्टमश्रुपूर्णाकुलेक्षणम् ।



आज भी. यहां क्षेत्र में किया. रातभर निवास एक
पण्डे के दुकान में.
[illegible] उठकर प्रागपुर से चलकर 'चिन्तपूर-
णी' में पहुंचा 'प्रागपुर' से 'चिन्तपूर्णी' ७ मील है
पर मैं मोटर से उससे गया। २ मील चलना पड़ा.
यहां एक कुंड पर स्नानादि करके भगवती का दर्शन
किया. [illegible] में ॥ [illegible] दिखाई. यहां के [illegible]
उपासक एक बाबा [illegible] रहता है. इनके स्थान में १ घण्टा
मैं था. हमको प्रणाम भी किया पर हमने प्रति प्रणाम [illegible]
कुछ नहीं किया. [illegible] ३ [illegible]
को मालूम होता है. [illegible] हो.

ता. २६-१-३१
'गरली' से ३॥ बजे दोपहर चलके 'प्रागपुर' २॥ मील
चलकर पहुंचा. यहां एक ठाकुर द्वार में ठहरा था.
यहां 'काश्मीरी' पट्टन के पण्डे पं. [illegible]
[illegible] और [illegible] थे. इनके आ गये.
इनके ही पास ठाकुर भात भोजन पाया. यहां का
[illegible]

विषीदन्तमिदं वाक्यमुवाच मधुसूदनः ॥१॥

श्रीभगवानुवाच

कुतस्त्वा कश्मलमिदं विषमे समुपस्थितम् ।
अनार्यजुष्टमस्वर्ग्यमकीर्तिकरमर्जुन ॥२॥



आज भी यहां.

आज सुबः उठकर चला सो ३ मील चलकर 'धर्मसाल' पहुंचा. यह एक साधुओं का स्थान है. महात्मा 'निकोदरदास' एक बडा तपस्वी ब्राह्मण वैरागी था. उसके बाद 'निर्भयराम' हुआ. इनको 'और-ङ्गजेब' ने माफी करदी. स्थान में पक्के मकान हैं. धर्मनिर्णय यहां इनके कथनाऽनुसार होता है. इस समय गद्दीपर पं॰ लक्ष्मीधर है. यह गृहस्थ है. बुद्धिमान है 'शास्त्री (आर्चरकी) पास है अंग्रेजी इन्ट्रेन्स की तयारी कररहा है. बडा सज्जन है. बस्ती १००, १५० घरकी आसपास है. 20-25 आदमी यहां रोज भोजन को आजाते हैं. २०-२५ हजार की सालाना आमदनी है. परन्तु पर शिष्य भी बहुत हैं यह जगह जिले होशियार पुरमें है. यहां से २ फर्लांग ऊपर जिला कांगडा

क्लैब्यं मा स्म गमः पार्थ नैतत्त्वय्युपपद्यते ।
क्षुद्रं हृदयदौर्बल्यं त्यक्त्वोत्तिष्ठ परंतप ॥३॥

अर्जुन उवाच

कथं भीष्ममहं संख्ये द्रोणं च मधुसूदन ।



आज भो. 'धर्मसाळ से ऊपर १ मील एक ब्राह्मणके घर महन्तपं. लक्ष्मी धर भोजनको लेगया था. घोड़े पर गया था. रात को महन्त ने एक रूपया दिया था.
वर्तमान महन्त ल३ भी धरका सादा पहां के वैरागी महन्तका पोस्यां' था. वैरागी ने मरते समय इसको स्थान दे दिया.

संजय उवाच

इषुभिः प्रति योत्स्यामि पूजार्हावरिसूदन ॥४॥
गुरूनहत्वा हि महानुभावान् श्रेयो भोक्तुं
भैक्ष्यमपीह लोके। हत्वार्थकामांस्तु गुरूनिहैव
भुञ्जीय भोगान्रुधिरप्रदिग्धान् ॥५॥ न चैतद्विद्मः



आज सुबः उठकर शौच स्नानादि करके हलकारे
के साथ पैदल कर १ मील 'डाउ' पहुँचा. राधाकृष्ण के
मन्दिर में ठहरा था. यहां गढ़वाल के पो. पौड़ी - के एक ब्राह्मण
ज्योतिषी ने दूध पिलाया. फिर यहां के पुजारी ने फला-
हार कराया. फिर शाम को 'चौक' की हवीपुर गढ़वाली
पण्डित के साथ गया था. यह डाउ में १ मील है.
दूध पीया - रात्रिभर डाउ में मन्दिर में निवास.

...ो गरीयो यद्वा जयेम यदि वा नो जयेयुः। यज... ये हत्वा न जिजीविषामस्तेऽवस्थिताः प्रमुखे धार्तराष्ट्राः।६। कार्पण्यदोषोपहतस्वभावः पृच्छामि त्वां धर्मसंमूढचेताः। यच्छ्रेयः स्यान्निश्चितं ब्रूहि



आज प्रदोष रात्री को नियमानुसार पारण.
आज आज सुबह उठकर २॥ मील 'पीरवाल' पर
आज 'ओम' को थाण पर आया यहां शौचादि कर
शिम निपाशा में स्नानादि करके नाव से पार उतरा
... का भाकू कराया. यहां से 'नर्पाणा' में शम्भु
दर्शन करके 'सोना' में मास्टर पं. दीनानाथ से
इसी स्कूल में मुलाकात हुई इसके साथ 'धरतीप
क' गांव में गया था. यहां इसके मित्र पं. तुलसीराम
ने बड़ा भारी श्री खिलाई दूध पिलाया. यहां से प
ध चलकर पं. दीननाथ के साथ उसके गांव 'कित
नौर' में पहुंचा. पं. बद्रीदत्त शर्मा भवस्थीत पा
ने दुग्ध भी पहीं थे. आज सभी ने प्रदोष व्रत
किया. रविरविवाह में भी. पं. बद्रीदत्त शर्मा ने

तन्मे शिष्यस्तेऽहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम् ॥७॥
न हि प्रपश्यामि ममापनुद्याद्यच्छोकमुच्छोषण-
मिन्द्रियाणाम् । अवाप्य भूमावसपत्नमृद्धं
राज्यं सुराणामपि चाधिपत्यम् ॥८॥

माघ शुक्ल १२ रवि ] १ फरवरी सन् १९३१ [ माघ १८

आज दोनों वक्त भो. पढ़ी
आखिर शाम को 'पुरातियाऊ' में गये थे

संजय उवाच

एवमुक्त्वा हृषीकेशं गुडाकेशः परंतप।
न योत्स्य इति गोविन्दमुक्त्वा तूष्णीं बभूव ह ९
तमुवाच हृषीकेशः प्रहसन्निव भारत।



आज भो[२] यही . पौर्णिमा आजही हुई .

सेनयोरुभयोर्मध्ये विषीदन्तमिदं वचः ॥१०॥

श्रीभगवानुवाच

अशोच्यानन्वशोचस्त्वं प्रज्ञावादांश्च भाषसे ।
गतासूनगतासूंश्च नानुशोचन्ति पण्डिताः ११

---

फाल्गुन कृष्ण १ मंगल सं० १९८७] ३ फरवरी [माघ २०

आज भो. (तुलाराम 'पराठियाळ' मां व मे.) के यहां
आज सुबः उठकर यहां से 'पराठियाळ' होकर 'विपाशा
मे स्नान करके गये यहां शौचादि स्नानादि करके
फिर कततौर आये साथ, वे दगर्भ अवस्थी था.
तुलाराम भी साथ था. स्नान करके पराठियाळ आते का.
'कततौर' से 'विपाशा' नहीं है. तुलाराम एक
अच्छा आदमी है. फिर यहां खा पी कर 'कततौ-
र पहुंचे रात्री में भो. ति वास यहीं.

न त्वेवाहं जातु नासं न त्वं नेमे जनाधिपाः ।
न चैव न भविष्यामः सर्वे वयमतः परम् ॥१२॥
देहिनोऽस्मिन्यथा देहे कौमारं यौवनं जरा ।
तथा देहान्तरप्राप्तिर्धीरस्तत्र न मुह्यति ॥१३॥

फाल्गुन कृष्ण २ बुध ] ४ फरवरी [ माघ २१

आज यहां दीनानाथ के घर रोटी खा पीकर वेदगर्भ को साथ लेकर पैदल ८ मील चलकर 'हरिपुर' पहुंचे कसबा अच्छा है. यहां बाजार में तालाब पर एक साधु के पास कुटी मे रात काटी. भोजन आदि कुछ नहीं.

मात्रास्पर्शास्तु कौन्तेय शीतोष्णसुखदुःखदाः ।
आगमापायिनोऽनित्यास्तांस्तितिक्षस्व भारत १४
यं हि न व्यथयन्त्येते पुरुषं पुरुषर्षभ ।
समदुःखसुखं धीरं सोऽमृतत्वाय कल्पते ॥१५॥



सुबः उठकर यहां से ३॥ मील चलकर 'मौजे खैरियां में 'एन्साल' के पास एक कुंए पर खड्ड के पास शौच स्नानादि क्रिया यहां से मियां शेरसिंह के यहां रोटी खाई. यह काश्मीर में शारदा में मिला था. यह गुलेर के राजा के यहां वणव-जीर है. इसका स्वभाव रूखा है. आदमी अच्छा नही मालूम हुआ. यहां से ८ मील चलकर 'देहरा' पहुंचे. रास्ते में 'विपाशा' के किनारे 'कौआ महादेव' आता है यह स्थान अच्छा है. देहरे में पहुंचते ही 'वेदाभ' के बारे में पुलिस ने खूब तहकीकात की. पुलिस को मेरे बारे में 'मैं वेदाभ को भगा रहा हूं' ऐसा शक था. बादरात्री में सूदों के ठाकुरद्वारे में ठहरे थे. यहां का पुजारी अच्छा नही है. यहां तहसील है थाना है 'विपाशा नदी' है पर किनारा बहुत गहरा है. पानी का बडा कष्ट है.

नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः ।
उभयोरपि दृष्टोऽन्तस्त्वनयोस्तत्त्वदर्शिभिः १६
अविनाशि तु तद्विद्धि येन सर्वमिदं ततम् ।
विनाशमव्ययस्यास्य न कश्चित्कर्तुमर्हति ॥१७॥



आज सुबह ४ बजे उठकर पैदल ९ मील चल
कर ज्वालाजी पहुंचे. भगवती के मन्दिर से
ऊपर के चश्मे पर स्नान करके भगवती के द-
र्शन करके भैरवदत्त भोजकी के घर गये. वह
भी घर में था. यहां अपने हाथ भात और
आलू का रस्सा बनाया 'वेदगर्भ' और मैंने
खाया. फिर यहां 'पं. बाबूराम गर्गशी' मिलगए.
रात्रीभर यहां रहे. रात्री को रोटी खाई.
'शय्यात्ति' देखी 'नागार्जुन' 'आम्बिके-
श्वर' 'कपिस्थल' गया था. साथ 'वेदगर्भ'
और पं. बाबूराम था.

अन्तवन्त इमे देहा नित्यस्योक्ताः शरीरिणः ।
अनाशिनोऽप्रमेयस्य तस्माद्युध्यस्व भारत ॥१८॥
य एनं वेत्ति हन्तारं यश्चैनं मन्यते हतम् ।
उभौ तौ न विजानीतो नायं हन्ति न हन्यते ॥१९॥



आज सुबः उठकर ६ बजे च ले रास्ते में शौचादि कर के १२ मील चलकर 'रानीताल' पर स्नानादि करके 'वेदगर्भ' को दुकान से रोटी खिलाकर 'ज्वालामुखी रोड' रेलवे स्टेशन पर भेज दिया. इस से ।=) लेकर मै पैदल चलकर ११ मील चलकर 'भवन' पहुंचा, ४ बजे. रास्ते में 'दौलतपुर' में -) मीठी सेव -) पेडा -) दही खाया. मोटर रोड से आया. भवन में लाला जानकी प्रसाद के दुकान पर ठहरा यहां धर्मशाले में श्री भरनिवास. जानकी के यहां रात को रोटी खाई बिस्तरा जानकी ने ठीक करा दिया था. रास्ते में वर्षा के कारण बिलकुल भीग गया था.

न जायते म्रियते वा कदाचिन्नायं भूत्वा
भविता वा न भूयः। अजो नित्यः शाश्वतोऽयं
पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे ॥२०॥
वेदाविनाशिनं नित्यं य एनमजमव्ययम्।

---



आज सुबः शौचादि करके 'सर्पकुण्ड' में स्नाना-
दि करके वीरभद्र दर्शन किया. आज भोजन
'लालानारायण' का संक्षेप हो किया. रात 'बालाजानकी
प्रसाद' के घर से रखा है. धर्मशाला में रात्री भर नि-
वास.

कथं स पुरुषः पार्थ कं घातयति हन्ति कम्॥२१॥
वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णाति
नरोऽपराणि। तथा शरीराणि विहाय जीर्णा-
न्यन्यानि संयाति नवानि देही ॥२२॥



आज बालकृष्ण धुणीके घर आज भोजन करके
शामको 'ठाणा' पहुंचा रात्री भोजन निवास
पं. बद्रीदत्तके घर.

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः ।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः ॥२३॥
अच्छेद्योऽयमदाह्योऽयमक्लेद्योऽशोष्य एव च ।
नित्यः सर्वगतः स्थाणुरचलोऽयं सनातनः ॥२४॥



आज भोजन करके यहां से शाम को 'नगरोटा' हो कर 'शमलोटी' पहुंचा रात्री में पं. निहाल पण्डित के घर भो. तथा निवास.

अव्यक्तोऽयमचिन्त्योऽयमविकार्योऽयमुच्यते ।
तस्मादेवं विदित्वैनं नानुशोचितुमर्हसि ॥२५॥
अथ चैनं नित्यजातं नित्यं वा मन्यसे मृतम् ।
तथापि त्वं महाबाहो नैवं शोचितुमर्हसि ॥२६॥



आज निहाल पण्डितके घर भोजन
का कू पण्डित मे हता अपने घर ले गया था
इसके यहां दूध पीया डाढी हजामत कराई
भोजन करके नगरोय होकर 'अमुवाडी' मे
'जोगेश्वर पुरोहित' के घर गया था. यह मिला
नहीं. फिर 'पाठियार' गया यहां एक सूदकी
दूकानपर रात्रीभर निवास. रातको बूंदीकी
कढीखाई दूध पीया. इस सूद लडके का नाम
'सेसो' है. अच्छा है.

जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च।
तस्मादपरिहार्येऽर्थे न त्वं शोचितुमर्हसि ॥२७॥
अव्यक्तादीनि भूतानि व्यक्तमध्यानि भारत।
अव्यक्तनिधनान्येव तत्र का परिदेवना ॥२८॥



सुबः यहां शौच स्नानादि कर के 'पं. पद्मनाभ तुगणेत' के घर भोजन किया. फिर 'नागेश्वर के घर गया पर यह घर नहीं मिला अतः फिर 'नगरोट' आया. यहां पं. चौधरी कुंदन-लाल शास्त्री' के घर गया रात्री भोजन और निवास यहीं पर हुआ. यहां का गडे के पं. पोलो राम' से भी मुलाकात हुई. इसके साथ खूब बात-चीत हुई. यह कांगडे में बडा नैयायिक कहलाता है. कुछ थोडा न्याय पढा हुआ है. बात-चीत बडे प्रेम की हुई. सुजानपुर के पं. रामकृष्ण का यह दामाद है.

आश्चर्यवत्पश्यति कश्चिदेनमाश्चर्यवद्वदति
तथैव चान्यः। आश्चर्यवच्चैनमन्यः शृणोति
श्रुत्वाप्येनं वेद न चैव कश्चित् ॥२९॥
देही नित्यमवध्योऽयं देहे सर्वस्य भारत।



आज सुबः शौचादि करके यहां की एक पक्के कुण्ड पर स्नानादि किया. यह कुण्ड स्नानादि करने के लिये बड़ा ही अच्छा है.
भो. दोनो समय तथा रात्रि निवास भी यहीं चौधरी कुईं के पास.

तस्मात्सर्वाणि भूतानि न त्वं शोचितुमर्हसि ३०
स्वधर्ममपि चावेक्ष्य न विकम्पितुमर्हसि ।
धर्म्याद्धि युद्धाच्छ्रेयोऽन्यत्क्षत्रियस्य न विद्यते ३१
यदृच्छया चोपपन्नं स्वर्गद्वारमपावृतम् ।



आज सुबः १० बजे तक पं. चौधरी के पास था. दूधणीकर यहां से चला सांगानेर पहुंचा वहां शौचादि कर के स्नानादि करके 'ठाणा' पहुंचा. आज प्रदोष नियमाऽनुसार उपोषण था.
पं. चौधरी के पास मन्त्रशास्त्र के ग्रन्थों का कुछ संग्रह है. ये आत्मध्यानी ज्यादा हैं. पर मुझसे अच्छा व्यवहार किया. ये वाममार्गी शाक्त कालीकोपासक हैं.

सुखिनः क्षत्रियाः पार्थ लभन्ते युद्धमीदृशम् ३२
अथ चेत्त्वमिमं धर्म्यं संग्रामं न करिष्यसि ।
ततः स्वधर्मं कीर्तिं च हित्वा पापमवाप्स्यसि ३३
अकीर्तिं चापि भूतानि कथयिष्यन्ति तेऽव्ययाम्

फाल्गुन कृष्ण १३ रवि ] १५ फरवरी [ फाल्गुन ३

आज शिवरात्रि. यहां 'ठाणे में शौच स्नाना
दि कर के फलाहार करके यहां से ५ मील धामणा
नाथकेश्वर) में गये यहां शिवपूजनादि रात्री को
किया जागरण भी किया -) खर्च हुआ साथ में
पं. बदरीदत्त सपत्नीक सपरिवार थे.
शिवरात्री

संभावितस्य चाकीर्तिर्मरणादतिरिच्यते ॥३४॥
भयाद्रणादुपरतं मंस्यन्ते त्वां महारथाः ।
येषां च त्वं बहुमतो भूत्वा यास्यसि लाघवम् ३५
अवाच्यवादांश्च बहून्वदिष्यन्ति तवाहिताः ।

---

फाल्गुन कृष्ण १४ सोम ] १६ फरवरी [ फाल्गुन ४

(महाशिवरात्रि)

आज प्रातः शौचादि करके 'बाणगङ्गा' में स्नानादि कर के पं. पद्मनाभ के आग्रह से 'पाठयार' गये यहां उनके घर भोजन करके फिर चामुण्डा में गये यहां से ठाणे जा रहे थे कि इतने में पं. जोगेश्वर कुर्दू मिल गया उसके आग्रह से फिर 'अमुवाडी' गया. पं. बदरी दत्त ठाणा चले गये. रात्री को यहां रो रीया है. इसके चाचा जज्ञाधीश है. पर यह बड़ा ही साधारण स्थिति में है. इसका बाप पुरोहित वृत्ती करता है.
आज मुन्शी पं. शरणदास 'बेदुआ ठाणा' से परिचय हुआ. ये कोठी के राजा के मुन्शी है. शरीफ है. रात्री में निवास यहीं.

निन्दन्तस्तव सामर्थ्यं ततो दुःखतरं नु किम् ३६
हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम्
तस्मादुत्तिष्ठ कौन्तेय युद्धाय कृतनिश्चयः ॥३७॥
सुखदुःखे समे कृत्वा लाभालाभौ जयाजयौ।



आज सुबः श्री चांदीकर के बाणगङ्गा की कूलमें स्नानादिकर के भो. निवासयही. पं. पयनाभभी आया था यहां आज शाम को 'नगरोटा' गये थे. पं. कृपाराम पुरोहित के कुटी में दूध पीया यह अकेला ही है. कुछ हिकमत भी करता है. फिर यहां से 'अमुवाडी' चले आये साथ जोगीश्वर भी था. रात्री को रोटी खाई.

ततो युद्धाय युज्यस्व नैवं पापमवाप्स्यसि ।३८।
एषा तेऽभिहिता सांख्ये बुद्धिर्योगे त्विमां शृणु ।
बुद्ध्या युक्तो यया पार्थ कर्मबन्धं प्रहास्यसि ३९
नेहाभिक्रमनाशोऽस्ति प्रत्यवायो न विद्यते ।

फाल्गुन शुक्ल १ बुध ]     १८ फरवरी [ फाल्गुन ६

आज सुबह शौचादि करके गरम पानी से स्नानादि करके जोगी-
श्वर के घर भोजन करके 'नगरोटा' आये पाठशाले में ठहरे थे यहां
से पं. मोतीराम जी के डेरे पर उनके साथ गया यहां उन्होंने दूध पि-
लाया. फिर यहां से शाम को ठाणे पहुंचा.
रात को ठाणे में पं. बद्रीदत्त के घर रोटी खाई निवास भी

स्वल्पमप्यस्य धर्मस्य त्रायते महतो भयात् ४०
व्यवसायात्मिका बुद्धिरेकेह कुरुनन्दन ।
बहुशाखा ह्यनन्ताश्च बुद्धयोऽव्यवसायिनाम् ४१
यामिमां पुष्पितां वाचं प्रवदन्त्यविपश्चितः ।



दोनो वक्त भो· तथा निवास यहीं (पं· बद्रीदत्त के घर)
आज मुंशी पं· शरणदास अपने पुत्र पद्मनाभ के विवाह
का निमन्त्रण मुझे करने आये थे. यह रियासत कोटा में
मुन्शी है.

वेदवादरताः पार्थ नान्यदस्तीति वादिनः ।४२।
कामात्मानः स्वर्गपरा जन्मकर्मफलप्रदाम् ।
क्रियाविशेषबहुलां भोगैश्वर्यगतिं प्रति ।४३।
भोगैश्वर्यप्रसक्तानां तयापहृतचेतसाम् ।

---

फाल्गुन शुक्ल ३ शुक्र ] २० फरवरी [ फाल्गुन ८

आज भो. मुनीरणदासके घर
२ शामको बरातमे 'श्री गारागां' मे पं. बृजलाल अवस्थीके घर
गया साथ पं. बदरीदत्त अवस्थी (नाणा) पं. केशवदत्त ज्योति-
ष और उनका लडका त्रिविक्रम (नगरोटा) थे ठाणेसे निया-
रा 11 मील पश्चिम है. रात्रिको ब्याह हुआ मैने भोजन नहीं
किया दूध पीया. पं. बृजलालकी [illegible] पौत्री मुनीरण
दासके लडकेको ब्याही गयी है. ये लालडे ठाकुरों धनी हैं
महाकृपण हैं.

व्यवसायात्मिका बुद्धिः समाधौ न विधीयते ४४
त्रैगुण्यविषया वेदा निस्त्रैगुण्यो भवार्जुन।
निर्द्वन्द्वो नित्यसत्त्वस्थो निर्योगक्षेम आत्मवान्
यावानर्थ उदपाने सर्वतः संप्लुतोदके।

---

फाल्गुन शुक्ल ४ शनि ] २१ फरवरी [ फाल्गुन ९

---

आज सुबेरे यहां शौचादि करकर के बाउली पर स्नानादि करके बाइलाओं के यहां रोटी खाई. रात को धाम थी मैन होगया सिर्फ दूध पीया.

यहां एक [illegible] सन्यासी परमहंस रहता है. इस गांव से इसकी कुटी १ मील दूर है. परमहंस यहां आये हैं नहुंचिए. अच्छे हैं शायद येले पाली है

तावान्सर्वेषु वेदेषु ब्राह्मणस्य विजानतः ।४६।
कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि ।४७।
योगस्थः कुरु कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा धनंजय ।

---

फाल्गुन शुक्ल ५ रवि ] २२ फरवरी [ फाल्गुन १०

आज सुब: शौच स्नानादि करके आहवालों के यहां भोजन करके शाम को ठाणे आया. साथ पद्मनाभ कुई था.

रात को नहीं खाया.

सिद्ध्यसिद्ध्योःसमो भूत्वा समत्वं योग उच्यते
दूरेण ह्यवरं कर्म बुद्धियोगाद्धनंजय ।
बुद्धौ शरणमन्विच्छ कृपणाः फलहेतवः ।४९।
बुद्धियुक्तो जहातीह उभे सुकृतदुष्कृते ।



आज मुंशी गणदास के घर हो जो बरक्त भो.
निवास पं. बद्रीदत्त के घर.

तस्माद्योगाय युज्यस्व योगः कर्मसु कौशलम् ॥
कर्मजं बुद्धियुक्ता हि फलं त्यक्त्वा मनीषिणः।
जन्मबन्धविनिर्मुक्ताः पदं गच्छन्त्यनामयम् ५१
यदा ते मोहकलिलं बुद्धिर्व्यतितरिष्यति ।



आज भी मुन्शीशरणदास के घर भोजन. रात को भोजन नहीं
निवास यहीं (पं. बदरीदत्त के घर)

तदा गन्तासि निर्वेदं श्रोतव्यस्य श्रुतस्य च ५२
श्रुतिविप्रतिपन्ना ते यदा स्थास्यति निश्चला ।
समाधावचला बुद्धिस्तदा योगमवाप्स्यसि ५३
अर्जुन उवाच
स्थितप्रज्ञस्य का भाषा समाधिस्थस्य केशव ।



भो· दो नौसमयथदें.

स्थितधीः किं प्रभाषेत किमासीत व्रजेत किम् ५४

श्रीभगवानुवाच

प्रजहाति यदा कामान्सर्वान्पार्थ मनोगतान्।
आत्मन्येवात्मना तुष्टः स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते ५५



भो· दोनोसमयपढ़ें.

दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः सुखेषु विगतस्पृहः ।
वीतरागभयक्रोधः स्थितधीर्मुनिरुच्यते ।५६।
यः सर्वत्रानभिस्नेहस्तत्तत्प्राप्य शुभाशुभम् ।
नाभिनन्दति न द्वेष्टि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ।५७।



दोनों वक्त भोजन यहीं.

यदा संहरते चायं कूर्मोऽङ्गानीव सर्वशः ।
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता५८
विषया विनिवर्तन्ते निराहारस्य देहिनः ।
रसवर्जं रसोऽप्यस्य परं दृष्ट्वा निवर्तते ।५६।

---



दोनों वक्त भोजन पहीं

यततो ह्यपि कौन्तेय पुरुषस्य विपश्चितः ।
इन्द्रियाणि प्रमाथीनि हरन्ति प्रसभं मनः ।६०
तानि सर्वाणि संयम्य युक्त आसीत मत्परः ।
वशे हि यस्येन्द्रियाणि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ।६१



दोनों वालभो-पढ़ें

ध्यायतो विषयान्पुंसः सङ्गस्तेषूपजायते।
सङ्गात्संजायते कामः कामात्क्रोधोऽभिजायते॥
क्रोधाद्भवति संमोहः संमोहात्स्मृतिविभ्रमः।
स्मृतिभ्रंशाद्बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति॥

फाल्गुन शुक्ल १२ सोम ] २ मार्च [ फाल्गुन १८

~~[illegible]~~
प्रदोष नियमानुसार पारण यों.
आज गाय का दूध नहीं मिल सका.

रागद्वेषवियुक्तैस्तु विषयानिन्द्रियैश्चरन् ।
आत्मवश्यैर्विधेयात्मा प्रसादमधिगच्छति ।६४।
प्रसादे सर्वदुःखानां हानिरस्योपजायते ।
प्रसन्नचेतसो ह्याशु बुद्धिः पर्यवतिष्ठते ।६५।



(होलिकादहन)

होलोत्सव भो. पर्व

नास्ति बुद्धिरयुक्तस्य न चायुक्तस्य भावना।
न चाभावयतः शान्तिरशान्तस्य कुतः सुखम्
इन्द्रियाणां हि चरतां यन्मनोऽनु विधीयते।
तदस्य हरति प्रज्ञां वायुर्नावमिवाम्भसि।६७।

फाल्गुन शुक्ल १५ बुध ] ४ मार्च [ फाल्गुन २०

आनन्दो नो वल्लभो · यही

तस्माद्यस्य महाबाहो निगृहीतानि सर्वशः।
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता६८
या निशा सर्वभूतानां तस्यां जागर्ति संयमी।
यस्यां जाग्रति भूतानि सा निशा पश्यतो मुनेः६९



आज दोनो वख्त भो० पढ़ी.
अ

आपूर्यमाणमचलप्रतिष्ठं समुद्रमापः प्रविशन्ति
यद्वत् । तद्वत्कामा यं प्रविशन्ति सर्वे
स शान्तिमाप्नोति न कामकामी ॥७०॥
विहाय कामान्यः सर्वान्पुमांश्चरति निःस्पृहः ।
निर्ममो निरहंकारः स शान्तिमधिगच्छति॥७१॥



भो· दोनोंवरलयदी

एषा ब्राह्मी स्थितिः पार्थ नैनां प्राप्य विमुह्यति।
स्थित्वास्यामन्तकालेऽपि ब्रह्मनिर्वाणमृच्छति॥

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे सांख्ययोगो नाम द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

---

चैत्र कृष्ण ३ शनि] ७ मार्च [फाल्गुन २३

भो· दोनों वक्त यही

## तृतीयोऽध्यायः

अर्जुन उवाच

ज्यायसी चेत्कर्मणस्ते मता बुद्धिर्जनार्दन।
तत्किं कर्मणि घोरे मां नियोजयसि केशव ॥१॥



भो- दो नोवरवलयही

व्यामिश्रेणेव वाक्येन बुद्धिं मोहयसीव मे।
तदेकं वद निश्चित्य येन श्रेयोऽहमाप्नुयाम्॥ २॥

श्रीभगवानुवाच

लोकेऽस्मिन्द्विविधा निष्ठा पुरा प्रोक्ता मयानघ।



दो सोवरका पद्दी भो.

ज्ञानयोगेन सांख्यानां कर्मयोगेन योगिनाम् ॥३॥
न कर्मणामनारम्भान्नैष्कर्म्यं पुरुषोऽश्नुते।
न च संन्यसनादेव सिद्धिं समधिगच्छति ॥४॥
न हि कश्चित्क्षणमपि जातु तिष्ठत्यकर्मकृत्।

---

चैत्र कृष्ण ७ मंगल]     १०मार्च     [फाल्गुन २६

आजयहां भोजनकरके 'भवन' गया रास्तेमें पं. कान्हू चौधरीके घर दूधपीयाथा.
सूर्यास्तसमय भवन पहुंचा। फिर भगवतीदर्शन किया. पं. बालकृष्णचूण्डीके घर रात्री भरतीयास भोजन.

कार्यते ह्यवशः कर्म सर्वः प्रकृतिजैर्गुणैः ॥५॥
कर्मेन्द्रियाणि संयम्य य आस्ते मनसा स्मरन् ।
इन्द्रियार्थान्विमूढात्मा मिथ्याचारः स उच्यते६
यस्त्विन्द्रियाणि मनसा नियम्यारभतेऽर्जुन ।

चैत्र कृष्ण ८ बुध] ११ मार्च [फाल्गुन २७

आज बालकृष्ण के घर दोपहर का भो. शाम
पुराने कांगड़े का ला. बिहारीलाल और रू. गौ.
शाह (भवनवाला) पुराने कांगड़े ले गये.
रात्रीभर बिहारी लाल के घर रहे भो. यहीं रात के
ला. गौरीशाह तथा बिहारीलाल के जन्मपत्र अ
सब कुछ देखे ला. मनोहर लाल अर्जीनवीस
कांगड़ा का जन्मपत्र नहीं देखा रात को ११॥ बजे त
बातें हुईं. मनोहर लाल आर्यसमाजी सा है.
भगवती का दर्शन किया.
आज एक वैद्य पं. रूपलाल शास्त्री डा. प्रागपुर
त. देहरा जि. कांगड़ा से परिचय हुआ.

कर्मेन्द्रियैः कर्मयोगमसक्तः स विशिष्यते ॥७॥
नियतं कुरु कर्म त्वं कर्म ज्यायो ह्यकर्मणः।
शरीरयात्रापि च ते न प्रसिद्ध्येदकर्मणः।८।
यज्ञार्थात्कर्मणोऽन्यत्र लोकोऽयं कर्मबन्धनः।



आज सुब: उठकर यहां से भवन आया
रास्ते मे १५० । बिहारीलाल देता था पर मैंने लिया
नही. बालकृष्ण धूळी के घर था, आज रूपलाल रानी
फिर मिला था, इसका टिपडा भी इसने दिखाया.
शाम को फिर ठाणे ७ मील चलकर आये
साथ पं.पद्मनाभ कुई और र रामलाल पण्डित था.
आज श्रीकण्ठ ते हरू की चिठी मिली.
रात को भो. पं बदरीदास के घर था निवास.

तदर्थं कर्म कौन्तेय मुक्तसङ्गः समाचर ॥९॥
सहयज्ञाः प्रजाः सृष्ट्वा पुरोवाच प्रजापतिः ।
अनेन प्रसविष्यध्वमेष वोऽस्त्विष्टकामधुक्॥१०।
देवान्भावयतानेन ते देवा भावयन्तु वः ।



आज दोनों वक्त भो. यहीं.
आज मनी आर्डर १५रु.(पन्द्रह) श्रीकण्ठ नेह
ने भेजा हुआ मिला.

आज शाम को 'नगरोटा' गये पं. बद्रीदत्त साथ थे.
पं. केरू ज्योतिषी जी ने बुला पाया. रात को निवास
और भोजन इनके घर. आज रात करीब १० ब
भूकम्प हुआ.

परस्परं भावयन्तः श्रेयः परमवाप्स्यथ ।११।
इष्टान्भोगान्हि वो देवा दास्यन्ते यज्ञभाविताः।
तैर्दत्तानप्रदायैभ्यो यो भुङ्क्ते स्तेन एव सः।१२।
यज्ञशिष्टाशिनः सन्तो मुच्यन्ते सर्वकिल्बिषैः।

---

चैत्र कृष्ण ११ शनि] १४ मार्च [फाल्गुन ३०

आज सुबः शौचादि स्नानादि यहां हरकृष्णपार्क पे
आज तबीयत कुछ खराब हो जाने से रात्रि को रोटी
खाई दिनमे दूध और थोडा सत्यनारायण प्रसाद.
आज इनके (फ्रैंकपार्वुतनके) स्त्रीने सत्यनारायण व्र
तोद्यापन किया. पं. चौधरी के यहां गया था वहां भी
दूध पीया. निवास यहीं है.

भुञ्जते ते त्वघं पापा ये पचन्त्यात्मकारणात् १३
अन्नाद्भवन्ति भूतानि पर्जन्यादन्नसंभवः ।
यज्ञाद्भवति पर्जन्यो यज्ञः कर्मसमुद्भवः ॥१४॥
कर्म ब्रह्मोद्भवं विद्धि ब्रह्माक्षरसमुद्भवम् ।



आज मुख: शौचादि स्नानादि बालतीपर। कृपा
के रू पण्डित के यहां भोजन कर [illegible] शाम को। फिर ठा
ण पं. बदरीदत्त के साथ बदरीदत्त के घर,
आज केरू पण्डित ने १रु. और १ धोती मुझे दी
रात को बदरीदत्त के घर [illegible] भोजन.

तस्मात्सर्वगतं ब्रह्म नित्यं यज्ञे प्रतिष्ठितम् ॥१५॥
एवं प्रवर्तितं चक्रं नानुवर्तयतीह यः।
अघायुरिन्द्रियारामो मोघं पार्थ स जीवति। १६।
यस्त्वात्मरतिरेव स्यादात्मतृप्तश्च मानवः।



आज प्रदोष आज दिनभर मौन किया था।
रात को नियमानुसार पारण

आत्मन्येव च संतुष्टस्तस्य कार्यं न विद्यते ॥१७॥
नैव तस्य कृतेनार्थो नाकृतेनेह कश्चन ।
न चास्य सर्वभूतेषु कश्चिदर्थव्यपाश्रयः ॥१८॥
तस्मादसक्तः सततं कार्यं कर्म समाचर ।



दोनों वक्त यज्ञ भोजन

असक्तो ह्याचरन्कर्म परमाप्नोति पूरुषः ॥१९॥
कर्मणैव हि संसिद्धिमास्थिता जनकादयः ।
लोकसंग्रहमेवापि संपश्यन्कर्तुमर्हसि ॥२०॥
यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः ।

---



दीनोपरक्त यहां भो.

स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते ॥२१॥
न मे पार्थास्ति कर्तव्यं त्रिषु लोकेषु किंचन ।
नानवाप्तमवाप्तव्यं वर्त एव च कर्मणि ॥२२॥
यदि ह्यहं न वर्तेयं जातु कर्मण्यतन्द्रितः ।



आजभोज नकर के शाम को नगरोटा होकर 'अमु
जोगीश्वर के घर १० मिनिट बैठकर पठियार मे
पं. पद्मनाभ के घर रात्रीभर रहा दूध पीया भो.

चामुण्डा —
यह कांगडा भवन से ११ मील पूर्व मे बाणगङ्गा के उ
तीरस्थान है. यहां श्मशान है. चामुण्डा देवी की म
है. मन्दिर छोटा सा पक्का है. यह मन्दिर 'हिलूणा' भूक
मे गिरा नहीं. मन्दिर को एक ही दरवाजा है पूर्व की
नीचे थोडी पौडियां उतरकर नान्दिकेश्वर का मान्दिर
पक्का भूकम्प के बाद बना हुआ है - यह मन्दिर आधा
और आधा तो एक पहाडी बडाभारी पत्थर है.
४-५ छोटी छोटी धर्मशालाएँ हैं. नीचे बाणग
बह रही है. बस्ती आसपास आधा मील उ
'बडोई' १ मील जिसांगा तथा दक्षिण बाणगङ्
के पार 'डाडा' है.

मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः ॥२३॥
उत्सीदेयुरिमे लोका न कुर्यां कर्म चेदहम्।
संकरस्य च कर्ता स्यामुपहन्यामिमाः प्रजाः॥२४
सक्ताः कर्मण्यविद्वांसो यथा कुर्वन्ति भारत।

चैत्र शुक्ल १ शुक्र सं० १९८८] २० मार्च [चैत्र ६

(नवरात्र्यारम्भः)

आज सुबह उठकर चामुण्डा पहुंचा यहां स्नानादि कर के नन्दिकेश्वर मे कोठरी मे ठहरा.
आज सिर्फ गाय का दूध 1 सेर पक्का पीकर रहा.
दूध का बन्दोबस्त पं. जोगीश्वर कुइतथा पं. पद्म नाभ के जिम्मे लगाया है. भगवती को ) । चढाया
आज महात्मा लट्ठ निरञ्जन ने यज्ञ (भोजन) कराया था. यहां आज पं. पुलस्यराम भवन के आये थे इनसे परिचय हुआ. कुछ सम्भाषण भी हुआ. ये नैयायिक है. कांगडे में बडे पण्डित समझे जाते हैं.
रात्रीमें निवास यहीं.

आज भगवती का दर्शन । पढाया
नाद्केश्वर दर्शन
आज लछु निरञ्जन के पास गया था.
इन्होने १रु. दिया.
पं. पद्मनाभ ने दूध गाय का भेजा था.
पं. जोगीश्वर कुईभी दूध ले आया
दुग्धाहार किया.

अहंकारविमूढात्मा कर्ताहमिति मन्यते ॥ २७ ॥
तत्त्ववित्तु महाबाहो गुणकर्मविभागयोः ।
गुणा गुणेषु वर्तन्त इति मत्वा न सज्जते ॥२८॥
प्रकृतेर्गुणसंमूढाः सज्जन्ते गुणकर्मसु ।



(गौरीव्रत)

दुग्धा हार. भगवती दर्शन)। चमाया.
सहुनि रञ्जनके पास भेजा या था.
पं. पद्मनाभ ने दूध गाय का भेजा था.
पं. जोगीश्वर भी दूध ले आया था.

तानकृत्स्नविदो मन्दान्कृत्स्नविन्न विचालयेत् २९
मयि सर्वाणि कर्माणि संन्यस्याध्यात्मचेतसा।
निराशीर्निर्ममो भूत्वा युध्यस्व विगतज्वरः३०
ये मे मतमिदं नित्यमनुतिष्ठन्ति मानवाः।



भगवती दर्शना। पढा या
प्रभु निरंजन के पास गया था.
पं. पद्मनाभ ने दूध भेजा था
पं. जोगीश्वर कुई भी दूध ले आया था.

श्रद्धावन्तोऽनसूयन्तो मुच्यन्ते तेऽपि कर्मभिः
ये त्वेतदभ्यसूयन्तो नानुतिष्ठन्ति मे मतम् ।
सर्वज्ञानविमूढांस्तान्विद्धि नष्टानचेतसः ॥३२॥
सदृशं चेष्टते स्वस्याः प्रकृतेर्ज्ञानवानपि ।



भगवतीदर्शन ग। चढ़ाया
आज सुबः लक्ष्मनिरंजन हरिद्वार चलागया.
यह मैथिल ब्राह्मण जगन्नाथ झा नामका
अब लक्ष्मनिरंजन नामसे कहलाताहै.
करीब ८० वर्षका बूढा है. चामुण्डामे रहनेवाले
महात्मा आत्मप्रकाश का शिष्य अपनेको
बतलाताहै. इससमय अवधूत है. यहांके ग्रा-
मीण मूर्ख इसको बडासिद्ध समझते हैं. अस्तु.
पं. पद्मनाभने दूध भेजा था.
पं. जोगीश्वरने भी दूध लाया था.
आज एक राजपूतने भी १ पाव दूध भेजाथा.
आज जोगीश्वर थोडे बादाम देगया
पर नवरात्रि भर दूध के सिवा कुछ नहीं
खानेका सङ्कल्प लियाहै.

प्रकृतिं यान्ति भूतानि निग्रहः किं करिष्यति ३३
इन्द्रियस्येन्द्रियस्यार्थे रागद्वेषौ व्यवस्थितौ।
तयोर्न वशमागच्छेत्तौ ह्यस्य परिपन्थिनौ ३४
श्रेयान्स्वधर्मो विगुणः परधर्मात्स्वनुष्ठितात्।

---

चैत्र शुक्ल ६ बुध]  २९ मार्च  [चैत्र ११

भगवती दर्शन। पाठ या ४ बादामों के साथ
नाकिकेश्वर ४ बादाम.
आज पद्मनाभ पण्डित का भी दूध जोगीश्वर
से आया था.

स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः ॥ ३५ ॥

अर्जुन उवाच

अथ केन प्रयुक्तोऽयं पापं चरति पूरुषः ।
अनिच्छन्नपि वार्ष्णेय बलादिव नियोजितः ३६

चैत्र शुक्ल ७ गुरु] २६ मार्च [चैत्र १२

भगवतीदर्शन। चढाया ४ बदाम. नागिकेश्वर ४ बदाम
आज जोगेश्वर दूध ले आया था.
आज एक मटन का गौर [illegible] यहां आया था
रात्री भर के लिये मैं ने इसको यहां रोकालिया.
इसके इच्छा ऽनुकूल कउमका साक और भात
खिलाया. यह पं. नंदलाल दरबार मास्टर of
मिशन स्कूल अनन्तनाग काश्मीरका [illegible] पुरोहित है.
इसका नाम ठाकुरदास है.

श्रीभगवानुवाच

काम एष क्रोध एष रजोगुणसमुद्भवः।
महाशनो महापाप्मा विद्ध्येनमिह वैरिणम् ।३७।
धूमेनाव्रियते वह्निर्यथादर्शो मलेन च ।
यथोल्बेनावृतो गर्भस्तथा तेनेदमावृतम् ।३८।



(दुर्गा-पूजन)

भगवती दर्शन ४ बा[दाम]। चढाया नन्दिकेश्वर
आज १ रु. मटन के गोई ठाकुरदास को ४बद.
दिया थोडे बादाम भी दिये.
।।।≡) जलेबी मंगाई. कुमारी बटुक पूजन
के लिये. आज ११ कन्याओं को हरेक को ९ बादाम
तथा बटुकों को ५ बादाम.
४ कन्याओं को ४ जलेबी १ पैसा हरेक को
२ बटुकों को. रात को १ पैसा ४ जलेबी भगवती को
जो गौरीवर दूध ले आया था.
आज रात को भगवती की कृपा से पारमहंस्य का
साक्षात्कार हुआ.

आवृतं ज्ञानमेतेन ज्ञानिनो नित्यवैरिणा।
कामरूपेण कौन्तेय दुष्पूरेणानलेन च ॥३९॥
इन्द्रियाणि मनो बुद्धिरस्याधिष्ठानमुच्यते।
एतैर्विमोहयत्येष ज्ञानमावृत्य देहिनम् ॥४०॥



(श्रीरामनवमी)

भगवतीदर्शन। जलेबियां ४ बादाम ५
नान्दिकेश्वर। जलेबियां ४ बदाम ४
आज ९ कुमारियों को ४ जलेबियां। पैसा
४ बटुक। ४ जलेबी हरेक को.
जोगीश्वर दूध पीशकर चावल १ सेर बास
मती पक्का ले आया था/ओर
आज ठाकुरदास सपत्नीक फिर आया.
फिर हमारे भात में ही इसका भोजन हुआ.
-) रु० दिया. कुछ जलेबी इसको भी दी
औरों को भी एक-एक दो दो जलेबी दीं.
पारण हुआ.

तस्मात्त्वमिन्द्रियाण्यादौ नियम्य भरतर्षभ ।
पाप्मानं प्रजहि ह्येनं ज्ञानविज्ञाननाशनम् ॥४१॥
इन्द्रियाणि पराण्याहुरिन्द्रियेभ्यः परं मनः ।
मनसस्तु परा बुद्धिर्यो बुद्धेः परतस्तु सः ॥४२॥

चैत्र शुक्ल १० रवि]　　२९ मार्च　　[चैत्र १५

आज सुबः शौचस्नानादि करके भगवती दर्शन
तथा ७॥ बंदा म ५ घटा कर 'अमुवाडी' पहुंचा रास्ते में
'सेसो' के दुकान पर (काठपार में) डाढी ब नवाई।। सेसो
ने मार दी दिया.
ओगीलन्द कुईन पर मो। आजसे बुद्धीसेवन शुरू
करायको नगाते भी टेकर 'ठाणा' स्पर्श करके दार २॥
घण्टे पहुंचा. रात को रोटी बहरीदास के घर.
तिथी के अनुसार आज उपनयन दिन
१९ वर्ष पूर्ण

एवं बुद्धेः परं बुद्ध्वा संस्तभ्यात्मानमात्मना
जहि शत्रुं महाबाहो कामरूपं दुरासदम् ॥ ४३॥

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे कर्मयोगो नाम तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

चैत्र शुक्ल ११ सोम] ३० मार्च [चैत्र १६

भो. दीनो [illegible] पढीं (पं. बदरी[illegible]

ॐ

## चतुर्थोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

इमं विवस्वते योगं प्रोक्तवानहमव्ययम् ।
विवस्वान्मनवे प्राह मनुरिक्ष्वाकवेऽब्रवीत् ॥१॥



प्रदोष । नियमानुसार रात को पारणा. मौन

आज "कल्याणसौगन्धिकटीका 'फर्मों' की प्रेसकापी सम्पूर्ण तैयार हो गई.

एवं परम्पराप्राप्तमिमं राजर्षयो विदुः।
स कालेनेह महता योगो नष्टः परंतप ॥ २ ॥
स एवायं मया तेऽद्य योगः प्रोक्तः पुरातनः।
भक्तोऽसि मे सखा चेति रहस्यं ह्येतदुत्तमम् ३

चैत्र शुक्ल १२ बुध] १ अप्रैल १९३१ [चैत्र १८

मो. दोनों नरक मांहीं.

अर्जुन उवाच
अपरं भवतो जन्म परं जन्म विवस्वतः।
कथमेतद्विजानीयां त्वमादौ प्रोक्तवानिति ॥ ४॥
श्रीभगवानुवाच
बहूनि मे व्यतीतानि जन्मानि तव चार्जुन।

---

चैत्र शुक्ल १५ गुरु] २ अप्रैल [चैत्र १६

(हनुमत्-जयन्ती)

आज रात खग्रास चन्द्र ग्रहण रात को हुआ.
इसको देखा नहीं था.

तान्यहं वेद सर्वाणि न त्वं वेत्थ परंतप ॥ ५ ॥
अजोऽपि सन्नव्ययात्मा भूतानामीश्वरोऽपि सन्
प्रकृतिं स्वामधिष्ठाय संभवाम्यात्ममायया ॥ ६ ॥
यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।



आज भी दोनों वक्त यही।

अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ७
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम् ।
धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे ॥ ८ ॥
जन्म कर्म च मे दिव्यमेवं यो वेत्ति तत्त्वतः ।



भो· दोनो घर यही

त्यक्त्वा देहं पुनर्जन्म नैति मामेति सोऽर्जुन ९
वीतरागभयक्रोधा मन्मया मामुपाश्रिताः ।
बहवो ज्ञानतपसा पूता मद्भावमागताः ॥ १० ॥
ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम् ।



भो. दोनो बरखपती

मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः ॥११॥
काङ्क्षन्तः कर्मणां सिद्धिं यजन्त इह देवताः ।
क्षिप्रं हि मानुषे लोके सिद्धिर्भवति कर्मजा ॥
चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्मविभागशः ।



आज [illegible]

तस्य कर्तारमपि मां विद्ध्यकर्तारमव्ययम् ।१३।
न मां कर्माणि लिम्पन्ति न मे कर्मफले स्पृहा।
इति मां योऽभिजानाति कर्मभिर्न स बध्यते ।१४।
एवं ज्ञात्वा कृतं कर्म पूर्वैरपि मुमुक्षुभिः ।

---

वैशाख कृष्ण ५ मंगल ]   ७ अप्रैल   [ चैत्र २४

४ आज दो नौकर [illegible] यहां

कुरु कर्मैव तस्मात्त्वं पूर्वैः पूर्वतरं कृतम् ।१५।
किं कर्म किमकर्मेति कवयोऽप्यत्र मोहिताः।
तत्ते कर्म प्रवक्ष्यामि यज्ज्ञात्वा मोक्ष्यसेऽशुभात्
कर्मणो ह्यपि बोद्धव्यं बोद्धव्यं च विकर्मणः।

अकर्मणश्च बोद्धव्यं गहना कर्मणो गतिः ।१७।
कर्मण्यकर्म यः पश्येदकर्मणि च कर्म यः ।
स बुद्धिमान्मनुष्येषु स युक्तः कृत्स्नकर्मकृत् ।१८।
यस्य सर्वे समारम्भाः कामसंकल्पवर्जिताः ।

वैशाख कृष्ण ७ गुरु ] ९ अप्रैल [ चैत्र २६

आज भो. बालकृष्ण धूप केघर
भगवतीके देती ]। चढाया
आज मुकः हाणोसे भवन पहुंचा.

ज्ञानाग्निदग्धकर्माणं तमाहुः पण्डितं बुधाः ।१९।
त्यक्त्वा कर्मफलासङ्गं नित्यतृप्तो निराश्रयः ।
कर्मण्यभिप्रवृत्तोऽपि नैव किंचित्करोति सः ।२०।
निराशीर्यतचित्तात्मा त्यक्तसर्वपरिग्रहः ।



आज भी दोनो समय भो· यहां बालकृष्ण के घर. भगवतीदर्शन ।

आज ढुंढी ब्रह्मचारी के यहां गये थे. दूध पीया. धनिया के पकौडे खाये. बंगाली सन्यासी से खूब बातचीत हुई यहां (वीरभद्र में) जद्दू पण्डित पं· उमादत्त पं· पोलोराम भी यहां आये थे इनसे बातें हुई.

शारीरं केवलं कर्म कुर्वन्नाप्नोति किल्बिषम् ।२१।
यदृच्छालाभसंतुष्टो द्वन्द्वातीतो विमत्सरः।
समः सिद्धावसिद्धौ च कृत्वापि न निबध्यते ।२२।
गतसङ्गस्य मुक्तस्य ज्ञानावस्थितचेतसः ।



भो. बालकृष्णके घर भगवतीदर्शन
बंगाली सन्यासी के साथ बातें करके दुग्धी
ब्रह्मचारी के यहां दूध पीकर ४ बजे शाम को
चले सो ६॥ बजे ठाणा पहुंचे. साथ
बंगाली सन्यासी, पद्मनाभ कुई, माधवकु
ई भी थे. आज सुबः हरिद्वार घाटपर
बाणगङ्गा में स्नानादि किया था.
रात को भो- ठाणे में पं. बद्रीदत्त के घर
रात्रिभर निवास.

यज्ञायाचरतः कर्म समग्रं प्रविलीयते । २३
ब्रह्मार्पणं ब्रह्म हविर्ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम् ।
ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्मकर्मसमाधिना । २४
दैवमेवापरे यज्ञं योगिनः पर्युपासते ।

वैशाख कृष्ण १० रवि ] १२ अप्रैल [ चैत्र २

भो· दोनोसमय तथा निवासयहां.

ब्रह्माग्नावपरे यज्ञं यज्ञेनैवोपजुह्वति ।२५।
श्रोत्रादीनीन्द्रियाण्यन्ये संयमाग्निषु जुह्वति।
शब्दादीन्विषयानन्य इन्द्रियाग्निषु जुह्वति।२६।
सर्वाणीन्द्रियकर्माणि प्राणकर्माणि चापरे।



आज भो· घञ्जर में एक रोगस ब्राह्मणके घर.
~~के घर~~

आज सुबः अगस्त्याउ से चले सो सिद्ध बाडी
में शौचादि करके 'घंजर महादेव' पहुंचे.
यहां स्नानादि करके एक ब्राह्मणके घर भोजन
किया =) दक्षिणा जबरदस्ती दी. साथ
बंगाली सन्यासी और शतानन्द भी था.
बंगाली सन्यासी घंजर में ही ठहर गये.
मैं यहां देखकर ३॥ बजे निकला सो
६ मील चलकर धर्मसाल पहुंचा साथ शता
नन्द भी था. (यहां से ६ मील धर्मसाल है.
ठाणेसे घंजर ८ मील पडा. धर्मसालसे ३ मील
पर सेटगंज में नैपाली पण्डित देवानन्द के घर
पहुंचे. रात्रि निवास और भो· यहां. आज कुल १७
मील चले.

आत्मसंयमयोगाग्नौ जुह्वति ज्ञानदीपिते ।२७।
द्रव्ययज्ञास्तपोयज्ञा योगयज्ञास्तथापरे।
स्वाध्यायज्ञानयज्ञाश्च यतयः संशितव्रताः ।२८।
अपाने जुह्वति प्राणं प्राणेऽपानं तथापरे।



भो. अपने हाथ दालभात बनाकर
नैपाली पं. देवानन्द के घर खाया.
सुबः उठकर नैपाली साधू के साथ
यहां से 'मकलोडगंज' देखकै भागसूना
ग में स्नानादि करके 'धर्मकोट' देखते हुए
डल देखकर पर सेटगंज मे देवानन्द के
आये यहां भोजनादि करके २ बजे ति
कला सो धर्मसाला देखकर 'दाडी' होकर
'तंगलोटी' आकर 'गोपा पण्डित'
के घर रात्रि निवास और भोजन किया
यहां आते ही पं. बदरीराम को भेजी चिट्ठी मिली.

प्राणापानगती रुद्ध्वा प्राणायामपरायणाः ।२९।
अपरे नियताहाराः प्राणान्प्राणेषु जुह्वति ।
सर्वेऽप्येते यज्ञविदो यज्ञक्षपितकल्मषाः ।३०।
यज्ञशिष्टामृतभुजो यान्ति ब्रह्म सनातनम् ।



इसमें
आज प्रदोष, नियमानुसार रात्रि को पारण कीया।
आज पुनः उठकर टेम्पो से 'भगवाल्गाड' = १ मील
२॥ मील चलकर पहुंचा. यहां पं. बदरीदत्त के घर पहुं-
चते ही यहां 'स्वामी तारानन्द तीर्थ' पयोव्रत वैजनाथ वाले
बैठे हुए देखे. इनका आज प्रथम ही दर्शन हुआ.
आज मौन. मैं स्नान को जा रहा था. सो पं. शिवराम
हेतु आशु चला गया. इनके यहां 'कोटी' का युवराज
वशिष्ठसिंह आया था इसके साथ १५-१६ आदमी थे.
इनको मेरे दर्शन की बहुत इच्छा थी. [illegible] इनको
आर्य भक्तों से अभिनन्दन पत्र ... की
तरफ से लिखकर दिया. बाद इसके (युवराज के) बहुत
आग्रह से फिर इनके साथ 'भवन' गया. यहां
रात को वीरभद्र में भात बना कर नियमानुसार खाया.
रात को फिर बातचीत हुई. इनके साथ एक ...
जनीर्ष ... का पं. वासुदेव है. यह बड़ा ही भक्तीवान
है. और पंडित भी अच्छा है. बुद्धिमान है.
भगवतीदत्त (नन्दा) भी आया था. रात को ...
पं. पन्नालाल ... के डेरे सोया साथ पं. बदरीदत्त ...
और पं. ... राम जुई भी था.

नायं लोकोऽस्त्ययज्ञस्य कुतोऽन्यः कुरुसत्तम ३१
एवं बहुविधा यज्ञा वितता ब्रह्मणो मुखे।
कर्मजान्विद्धि तान्सर्वानेवं ज्ञात्वा विमोक्ष्यसे ३२
श्रेयान्द्रव्यमयाद्यज्ञाज्ज्ञानयज्ञः परंतप।

वैशाख कृष्ण १४ गुरु ] १६ अप्रैल [ वैशाख २

आज सुबह उठकर वीरभद्रमें जाकर ... इसने कल टीथर ने कोलिपे बड़ा ही आग्रह किया. स्वामी नारायणके दर्शन हुए. चलते समय १रु. मुझे राजकीय फलसे मिलता था मैंने लेनेसे इनकार करदे फिर यहां से ... ६ मील जाकर पहुंचा. साथ पं. बदरी ... पं. जगदीशराम ... पं. ... पं. कृष्ण ... थे. यहां पं. ... इसने आज बहुत आग्रह किया इस लिये आज हमने भोजन यहीं किया शाम को पं. बदरी इनके घर भो. निवास.

मुक्ताजने अपनी ... से दो पत्र जोगीन्दर ने दो ठेकेदार 'बदरुद्दीन' और 'अब्दुल...' के नाम दिये.

सर्वं कर्माखिलं पार्थ ज्ञाने परिसमाप्यते ।३३।
तद्विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया ।
उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्त्वदर्शिनः ।३४।
यज्ज्ञात्वा न पुनर्मोहमेवं यास्यसि पाण्डव।



आज दोनों समय भो. यहीं (बदरीदत्त के घर)
आज यहां मैंने आलमारियों को तसवीरों को
बारानिशा लगाया.

येन भूतान्यशेषेण द्रक्ष्यस्यात्मन्यथो मयि ।३५।
अपि चेदसि पापेभ्यः सर्वेभ्यः पापकृत्तमः ।
सर्वं ज्ञानप्लवेनैव वृजिनं संतरिष्यसि ।३६।
यथैधांसि समिद्धोऽग्निर्भस्मसात्कुरुतेऽर्जुन ।



आज सुबः शौचस्नानादि करके रोटी खा
कर 'नगरोटा' पहुंचा यहां पं. केशवदत्त
श्रोत्रियके घर गया था पर यह मिला नहीं.
फिर पं. केरू ज्योतिषीके यहां पानीपीकर
पं. चौधरीके यहां गया यहां से 'बेईू' को साथ
लेकर स्टेशन रेलवे पर जाकर १रु.=) का टि
कट 'जोगीन्द्रनगर' ले ३॥ बजे पहुंचा.
यहां से ५ मील पैदल चलकर 'टणुल' पर
पहुंचा यहां ठेकेदार 'मिर्जा बदरूदीन' से
मिला उसको चिठ्ठी दी उसने दुकान में रह
ने का बन्दोबस्त कराया. रात को एक ब्राह्म
ण से रोटी हलवा आलू बनवाया. वहां
खापीकर सोया [illegible]

ज्ञानाग्निः सर्वकर्माणि भस्मसात्कुरुते तथा। ३७।
न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते।
तत्स्वयं योगसंसिद्धः कालेनात्मनि विन्दति ३८
श्रद्धावाँल्लभते ज्ञानं तत्परः संयतेन्द्रियः।



आज यहां एक झरने पर शौच स्नानादि करके फिर
हलुआ खाया. ठेकेदार आया था. उसने 'ट्रक'
का दो आदमी का पास और एक आदमी भी
साथ करा दिया. फिर इसने एक सिख मिस्त्री
साथ करा दिया था. उसने 'टण्डल' = सुरङ्ग अन्दर
से सारा दिखलाया. यह दूकान भी ठेकेदार और
लाला स्वकामल की साझे की है. फिर यहां से आद-
मी को साथ लेकर २ मील चलकर 'ट्रक' पर चढ़
कर ऊपर उतरे. फिर यहां से २ मील चलकर दूसरे
'ट्रक' के स्टेशन पर आये. पर यहां के स्टेशन मास्टर
ने बहुत बुरा व्यवहार किया. इसलिये हम पैदल
ही फिर बरोट चले इस जगह से बरोट कोई
३॥ मील है. बरोट में आते ही लाला स्वकामल की दूकान पर
पहुंचे यहां थोड़े से ठहरे फिर यहां की टण्डल देखने गए.
[illegible] साथ में लाला ऊधोराम था. यहां दूध पीया.
[illegible] रात में निवास तथा भो. यहीं. ~~[illegible]~~
[illegible]

ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिमचिरेणाधिगच्छति ३९
अज्ञश्चाश्रद्दधानश्च संशयात्मा विनश्यति ।
नायं लोकोऽस्ति न परो न सुखं संशयात्मनः ।४०।
योगसंन्यस्तकर्माणं ज्ञानसंछिन्नसंशयम् ।



आज सुबह शौचस्नानादि करके यहां रोटी खाई.
आज ठेकेदार 'अब्दुल सलाम' दुकान पर आया था.
इसके साथ कोठी के पीछे रास्ता हवेली की हुई सीढ़ी हल-
को देखी. यह बहुत शरीफ है. इसने अपने साथ ले
जाकर वहां का नहर और सारी मशीनरी खूब
दिखलाई. रोटी इसी दुकान में खाई. लाला
बूटामल ने बनाई थी. यह बहुत शरीफ है. दूध
पीया. फिर ठेकेदार अब्दुल सलाम ने अपनी
घोड़ी पहाड़ पर जाने के लिये दी थी. उस पर
बैठकर ऊपर आया. वहां से पैदल २॥ मील ट्रक
के स्टेशन पर आया. यहां से फिर ट्रक में बैठ-
कर नीचे आया. रात हो जाने के कारण फिर
टण्डल ऊपर इसी दुकान में पहुंचा. इसमें लाला
सिद्धराम और रामचन्द्र नौकर है. रात को
भी. तथा निवास यहीं. बरोटे से चलते
समय ठेकेदार 'अब्दुल सलाम' ने ५ रु.
दिये. और बूटामल ने ५ रु. दिये.

आत्मवन्तं न कर्माणि निबध्नन्ति धनंजय ।४१।
तस्मादज्ञानसंभूतं हृत्स्थं ज्ञानासिनात्मनः।
छित्त्वैनं संशयं योगमातिष्ठोत्तिष्ठ भारत ।४२।
ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ज्ञानकर्मसंन्यास-योगो नाम चतुर्थोऽध्यायः ॥४॥

---



( अक्षयतृतिया )

आज सुबः उठकर यहां झरने पर शौच स्नानादिक के दूध पीया फिर ठेकेदार बदरुद्दीन दुकान पर आया था. इससे बातचीत होने के बाद इसने एक आदमी साथ करदिया. फिर ट्रकसे हम मसकरौटी आये. एक बाबूने पास ले लिया और फिर दिया नहीं. इसका नाम 'शर्मा' है. यह बड़ा ही अज्ञात है. पता लगाने पर मालूम हुआ की यह बहुत ही शरारती है. अस्तु. मैं 'सूरजमल' की दुकान पर पहुंचा. इस दुकानदार के नाम 'बूटा मल' ने चिट्ठी दी थी. इसने होटल में रोटी खिलाई. ४ फुलके मैंने खाये. यहां ३॥ बजे तक था. फिर यहांसे पैदल चलकर 'ऐ चू' पहुंचा. 'जोगिन्दर नगर' से यह ८ मील है. यहां महात्मा 'तुल-सीरामजी' के भतीजे के दुकान में रातभर निवास. महात्मा के भतीजेने रोटी लाई थी वह हमने ~~खिलाई~~. खाई.

आज सुबः यहां एक बावड़ी पर शौचादि करके स्नानादि किया. फिर 'सन्ता' यहां के महात्मा 'तुलसीराम' जी के पास मैं गया. इनके पास कोई २॥ घण्टे था बातें भी बहुत हुई ये ब्राह्मण हैं बड़े शान्त, विद्वान, और विरक्त महात्मा हैं ये अपने घर में ही रहते हैं. अभी ऐसा कहते हैं कि इनके स्त्री का शरीरान्त हुआ. लोग कहते हैं कि इनको रामचन्द्र दर्शन हुए हैं. मुख पर भी तेज है. यहां से ।॥=)। किराया देकर गाड़ी से नगरोटा आया यहां पं. केशवदत्त श्रोत्रिय के यहां भोजन किया. फिर शाम को 'पठियार' में पं. पद्मनाभ के पास गया था. यहां से रात को चामुण्डा में पहुंचा. रात को रोटी यहां खाई. आज २ रु. शिवराम सूद ने दिया. रात्रि भर नाभि के ऊपर के कोठरी में निवास. चामुण्डा।

यच्छ्रेय एतयोरेकं तन्मे ब्रूहि सुनिश्चितम् ॥१॥
श्रीभगवानुवाच
संन्यासः कर्मयोगश्च निःश्रेयसकरावुभौ ।
तयोस्तु कर्मसंन्यासात्कर्मयोगो विशिष्यते ॥२॥



आज सुबह शौचादि करके स्नानादि क्रिया
आज पं. बद्री दत्त के पुत्र प्रियंवद का उपन-
यन संस्कार यहां चामुण्डा में हुआ, सो मी यहां खाइ
आपको पं. हरदत्त दीक्षित के साथ जिदरांगव
गया यहां रात को भी. तथा निवास
पं. बद्रीदत्त ने एक धोती एक कमीज एक टोपी
और ४ रु. नगद दिये.
चामुण्डा दर्शन तथा नान्दिकेश्वर दर्शन किया.

ज्ञेयः स नित्यसन्यासी यो न द्वेष्टि न काङ्क्षति।
निर्द्वन्द्वो हि महाबाहो सुखं बन्धात्प्रमुच्यते ३
सांख्ययोगौ पृथग्बालाः प्रवदन्ति न पण्डिताः।
एकमप्यास्थितः सम्यगुभयोर्विन्दते फलम् ॥४॥

---

वैशाख शुक्ल ७ शुक्र ] २४ अप्रैल [ वैशाख १०

---

आज पुनः श्री [illegible] के ७.५ [illegible] [illegible]
[illegible] पहुंचा भो. यहां (पं. बदरी दत्त के घर)
आज यहां जेवनार थी. रात को यहां बड़ा गाना
बजाना हुआ.

यत्सांख्यैः प्राप्यते स्थानं तद्योगैरपि गम्यते ।
एकं सांख्यं च योगं च यः पश्यति स पश्यति ।५।
संन्यासस्तु महाबाहो दुःखमाप्तुमयोगतः ।
योगयुक्तो मुनिर्ब्रह्म नचिरेणाधिगच्छति ।।६।।



सुबः शौचस्नानादिकरके यहां भो.
यहांभारे गां व वालों से ३१ रु. मिले.
१ रु. प्रियंवदको दिया यहां से चलते समय गांवके
२०-२५ आदमी स्कूल तक पहुंचाने आये थे.
पं. बदरीदत्त और इनके दोनों पुत्र वेदगर्भ
तथा प्रियंवद रोने लगे. अस्तु. प्रेमका बन्ध-
न सबसे बडा बन्धन है. यहां से ६।। मील
चलकर सूर्यास्त समय भवन पहुंचा साथ
'उत्तोह' का पं. कृपाराम न गया था. बालकृष्ण
धूण्डीके घर ठहरे. रात को रोटी यहां खाई
भगवती दर्शन को। चढाया रात्रीको यहां
निवास.

योगयुक्तो विशुद्धात्मा विजितात्मा जितेन्द्रियः
सर्वभूतात्मभूतात्मा कुर्वन्नपि न लिप्यते ॥७॥
नैव किंचित्करोमीति युक्तो मन्येत तत्त्ववित्।
पश्यञ्शृण्वन्स्पृशञ्जिघ्रन्नश्नन्गच्छन्स्वपञ्श्वसन्



आज सुबः शौचादि स्नानादि बाण गङ्गापर हरि द्वारघाट में किया.
कृपाराम सुग्गा को राम झा बुझाकर घर भेज दिया. यह मेरे पीछे मेरे साथ चलने के लिये पड़ा था. भो० बालकृष्ण के घर दोनो समय. शाम को दुर्गी ब्रह्मचारी के पास गये थे वहां दूध पीया. उन्होंने ५ रु० दिये.

प्रलपन्विसृजन्गृह्णन्नुन्मिषन्निमिषन्नपि ।
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेषु वर्तन्त इति धारयन् ॥९॥
ब्रह्मण्याधाय कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा करोति यः
लिप्यते न स पापेन पद्मपत्रमिवाम्भसा ॥१०॥

वैशाख शुक्ल १० सोम ] २७ अप्रैल [ वैशाख १२

तिथीके अनुसार आज विवाहदिन ४ वर्ष पूर्ण.
आज शौचादि करके 'वीरभद्र' में स्नानादिक
के वीरभद्र दर्शन करके भगवती वज्रेश्वरीका
दर्शन किया ।) और ।) बतासे चढाये ।)॥ कुमा
दि। बाजा. बालकृष्णके घर भोजन करके
रेलवे स्टेशनपर ११॥ बजे पहुंचा. स्टेशन ?
मनसे २॥ मील है. बालकृष्णने १रु. ।) दिये
रु. ॥।=) का टिकट पठानकोटका खरीद कर
॥ बजे गाडीपर सवार हुआ ५॥। बजे
पठानकोट उतरा फिर यहांसे ३रु. ४ आनेका
टिकट लेकर रेल पर सवार हुआ.
बजे अमृतसर उतरा. -) लडुक )॥। गं
री -) शरबत १२ बजे फिर यहांसे रेलपर
सवार हुआ

कायेन मनसा बुद्ध्या केवलैरिन्द्रियैरपि।
योगिनः कर्म कुर्वन्ति सङ्गं त्यक्त्वात्मशुद्धये ११
युक्तः कर्मफलं त्यक्त्वा शान्तिमाप्नोति नैष्ठिकीम्
अयुक्तः कामकारेण फले सक्तो निबध्यते १२

वैशाख शुक्ल ११ मंगल ] २८ अप्रैल [ वैशाख १४

आज सुबह ५ बजे सरहिन्द पर उत्तर कर रोपड़ के गाड़ी में बैठे. ८ बजे रोपड़ पहुंचे यहां शतद्रु में जाकर स्नानादि कि फिर -) गायत्री दाना खा कर पानी पीया. फिर ।-) टिकट ले कर फिर गाड़ी से 'कुराली' उतरा यहां पं. मुकुन्दवल्लभ मिश्र ज्योतिषी के यहां पहुंचा. यहां आज रोटी खाई. यहां आज श्रीगोपाल शास्त्री से परिचय हुआ. पं. मुकुन्दवल्लभ मुझ पर बहुत प्रेम करता है. रात को दूध ही पीया. रात को निवास यहीं.

सर्वकर्माणि मनसा संन्यस्यास्ते सुखं वशी।
नवद्वारे पुरे देही नैव कुर्वन्न कारयन् ॥१३॥
न कर्तृत्वं न कर्माणि लोकस्य सृजति प्रभुः।
न कर्मफलसंयोगं स्वभावस्तु प्रवर्तते ॥१४॥

---

वैशाख शुक्ल १२ बुध ] २६ अप्रैल [ वैशाख १५

आज प्रदोष नियमाऽनुसार रात को पारण. मौन दिनभर.

कुराली — यह जिला अम्बाले में एक अच्छा कसबा है. तहसील खरड में है. १० मील पर यहां से रोपड़ है. जहां सतलुज-शतद्रू की नहर निकाली है. व्यापार यहां दिनोदिन बढ़ रहा है. ३-४ हजार घरों की आबादी भी है. २-२॥ सौ घर ब्राह्मणों के हैं.

नादत्ते कस्यचित्पापं न चैव सुकृतं विभुः ।
अज्ञानेनावृतं ज्ञानं तेन मुह्यन्ति जन्तवः ॥१५॥
ज्ञानेन तु तदज्ञानं येषां नाशितमात्मनः ।
तेषामादित्यवज्ज्ञानं प्रकाशयति तत्परम् ॥१६॥



( नरसिंह जयन्ती )

भो. पं हरदेव तिवारी के यहां यह पं. मुकुन्द वल्लभ का शिष्य है. उदयपुर की तरफ का है. शाम को घूमने गये थे. सा था पं. मुकुन्द वल्लभ हरदेव तथा श्री गोपाल शास्त्री थे, यहां से सहिन्दु सेरैपड तक फेरे लेवे लाइन के ठिरियस पं. हसन लाल से बात चीत हुई. रात को दूध पीया.

तद्बुद्धयस्तदात्मानस्तन्निष्ठास्तत्परायणाः।
गच्छन्त्यपुनरावृत्तिं ज्ञाननिर्धूतकल्मषाः।१७।
विद्याविनयसंपन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि।
शुनि चैव श्वपाके च पण्डिताः समदर्शिनः।१८।



भो. पं. मुकुन्दवल्लभके यहां. रातको हरदेवके यहां
आज बाजारमें गया था. पं. अयुध्यारामके
दुकानपर घडीभर बैठा था. इनका नया मकान
नभी देखा. इनका लडका पं. आर्यानन्द और
ये दोनो अच्छे आदमी हैं.

इहैव तैर्जितः सर्गो येषां साम्ये स्थितं मनः।
निर्दोषं हि समं ब्रह्म तस्माद्ब्रह्मणि ते स्थिताः १९
न प्रहृष्येत्प्रियं प्राप्य नोद्विजेत्प्राप्य चाप्रियम्
स्थिरबुद्धिरसंमूढो ब्रह्मविद्ब्रह्मणि स्थितः।२०।

---



आज पं. आर्यानन्द के घर भो. =)५.
रात को पं. मुकुन्दलाल के घर.
आज एक अमृतसर के अन्धे शास्त्री से जान पहचान
हुई. इसका नाम मरा यदि हरभान है.

बाह्यस्पर्शेष्वसक्तात्मा विन्दत्यात्मनि यत्सुखम्।
स ब्रह्मयोगयुक्तात्मा सुखमक्षयमश्नुते ॥२१॥
ये हि संस्पर्शजा भोगा दुःखयोनय एव ते।
आद्यन्तवन्तः कौन्तेय न तेषु रमते बुधः ॥२२॥

---

ज्येष्ठ कृष्ण १ रवि सं० १९८८ ] ३ मई [ वैशाख १९

आज पं. हरदेवके घर भोजन.
फिर यहांसे मोटरसे खरड =) किराया.
खरडसे ॥=) चण्डी मोटरसे. चण्डीसे
रेलसे कालकाका किराया। =) कालकासे
पैदल ७॥ मील चलकर रात भर एक दूकान
में सोया जाबलीमें.
आज १रु. =) पं. मुकुन्दवल्लभने दिये थे.
रातको भो. कुछ नही.
१रु. ।=) का जूता भी इसीने खरीद दिया.

शक्नोतीहैव यः सोढुं प्राक्शरीरविमोक्षणात् ।
कामक्रोधोद्भवं वेगं स युक्तः स सुखी नरः ॥
योऽन्तःसुखोऽन्तरारामस्तथान्तर्ज्योतिरेव यः ।
स योगी ब्रह्मनिर्वाणं ब्रह्मभूतोऽधिगच्छति ॥



आज सुबः यहाँ से चलकर 'धर्मपुर' ६॥ मील चलकर पहुंचा. यहां से १॥। मील 'सपाटू' की तरफ चलकर एक नाले पर शौच स्नानादि किया. फिर वहां से १॥। मील चलकर एक गांव मे 'अभाच' में ठहरा धूप बहुत हो गई थी, यहां जाते ही एक ब्राह्मण ने खराब व्यवहार किया. फि यहां एक दूसरे ब्राह्मण ने सरबत पिलाया. यहां के लोग बहुत खराब है. एक ब्राह्मणी ने सत्तू खिलाया पर यह भी बहुत खराब है. एक दरख्त के नीचे यहां छाया में बहुत देर ठहरा था. यहां के ब्राह्मण बड़े दुष्ट और बदतमीज और खराब है. इसका कारण अंग्रेजी राज और कुछ नहीं. यहां से मै फिर पैदल 'सपाटू' पहुंचा यहां एक मान्दिर में ठहरा. रात्रीभर निवास यहां. खाया कुछ नहीं. 'धर्मपुर से सपाटू' ९ मील रहे.

लभन्ते ब्रह्मनिर्वाणमृषयः क्षीणकल्मषाः ।
छिन्नद्वैधा यतात्मानः सर्वभूतहिते रताः ।२५।
कामक्रोधवियुक्तानां यतीनां यतचेतसाम् ।
अभितो ब्रह्मनिर्वाणं वर्तते विदितात्मनाम् ।२६।



आज सुवः शौचादि करके स्नान किया. यहां एक जि-अम्बाला-त-खरड 'सुहाली' गांव का एक पण्डित रहता है. 'परमानन्द' इसका नाम है आज इस पण्डित के आग्रह से भांग पीया. सपादू बाजार देखा. -)॥। की बर्फी आधपाव लेकर खाई. । फिर मन्दिर में आया. यहां एक बूढी सा कमिठाई ले आया था. वह लेकर हमने खाई. । फिर शाम को बाजार के सड़क के मुहाने पर के ठाकुरद्वारे में बिस्तर लेकर आया. यह एकाबेलकुल चारों तरफ सड़कों से घिरा एक ब्राह्मण का स्थान है. एक रामचन्द्र का एक महावीर का एक शम्भु का मन्दिर भी है. इस ब्राह्मण ने इस जगह को खूब चेताया है. इसका नाम पं. आसाराम है. इसका नौकर 'रामरख' एक ब्राह्मण मुझसे प्रेम करने लगा. रात निवा तथा भी यहीं.

स्पर्शान्कृत्वा बहिर्बाह्यांश्चक्षुश्चैवान्तरे भ्रुवोः ।
प्राणापानौ समौ कृत्वा नासाभ्यन्तरचारिणौ ॥
यतेन्द्रियमनोबुद्धिर्मुनिर्मोक्षपरायणः ।
विगतेच्छाभयक्रोधो यः सदा मुक्त एव सः ।२८।



आज सुबः उठकर नीचे बाउली पर शौच स्नानादि कर
के दो पहर यहां भोजन किया. रात को भी
यहीं रोटी खाई. रात्री भरात्रि वास भी
यहीं. रामरख इसी पहाडी पर अच्छे
ब्राह्मण कुल का है. इसका व्याह नहीं हुआ है.
यह बहुत ही प्रेम करने लगा.

ओंकारं यज्ञतपसां सर्वलोकमहेश्वरम् ।
सुहृदं सर्वभूतानां ज्ञात्वा मां शान्तिमृच्छति ॥

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे कर्मसंन्यासयोगो नाम पञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

---



आज सुब: उठकर एक शिव मन्दिर के आगे चोमे झरने पर शौच स्नानादि किया. दोनों पहर का यहां भोजन. रात्री में निवास भी यहीं.

ॐ

षष्ठोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

अनाश्रितः कर्मफलं कार्यं कर्म करोति यः ।

ज्येष्ठ कृष्ण ६ शुक्र ]  ८ मई  [ वैशाख २४

आज सुबः उठकर शिवमन्दिर के नीचे बगीची
में झरने पर शौच स्नानादि किया. दोनो समय
भो. यहां किया तथा रात्री में निवास भी

स संन्यासी च योगी च न निरग्निर्न चाक्रियः ।१।
यं संन्यासमिति प्राहुर्योगं तं विद्धि पाण्डव ।
न ह्यसंन्यस्तसंकल्पो योगी भवति कश्चन ।२।
आरुरुक्षोर्मुनेर्योगं कर्म कारणमुच्यते ।

ज्येष्ठ कृष्ण ७ शनि ] ९ मई [ वैशाख २५

आज सुबें उठकर शिवमन्दिर के नीचे बगीचे झरने पर शौच स्नानादि किया. दोनों वख्तं यहीं किया. रात्री में निवासपट्टी

योगारूढस्य तस्यैव शमः कारणमुच्यते ॥३॥
यदा हि नेन्द्रियार्थेषु न कर्मस्वनुषज्जते ।
सर्वसंकल्पसंन्यासी योगारूढस्तदोच्यते ॥४॥
उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानमवसादयेत् ।



सुबः उठकर शिवमन्दिर के नीचे भागीरथी में स्ना-
नादि किया. दोनों समय भोजन [illegible]
निवास भी यहीं [illegible]

शीतोष्णसुखदुःखेषु तथा मानापमानयोः ॥७॥
ज्ञानविज्ञानतृप्तात्मा कूटस्थो विजितेन्द्रियः ।
युक्त इत्युच्यते योगी समलोष्टाश्मकाञ्चनः ॥८॥
सुहृन्मित्रार्युदासीनमध्यस्थद्वेष्यबन्धुषु ।



सुबः उठकर शिवमन्दिरके नीचे बागीचीमें शौचस्नानादि किया. दोपहर भो. रा... आज भो. नही. रात्रीमें निवास यहीं

युक्तस्वप्नावबोधस्य योगो भवति दुःखहा ॥१७॥
यदा विनियतं चित्तमात्मन्येवावतिष्ठते।
निःस्पृहः सर्वकामेभ्यो युक्त इत्युच्यते तदा ॥१८॥
यथा दीपो निवातस्थो नेङ्गते सोपमा स्मृता।



आज पुनः उठकर एक झरने पर शौच स्नाना-
दि किया. फिर यहां मुन्शी शरणदास के पास ही
भो. पं. भीमादत्त जोशी कूर्माचल जी ने एक
आध सेर मिश्री राणा साहब कोटी को देने के
लिये ला दी. आज यहां पं. हरिचरण शास्त्री
प्रोफेसर ओरिएन्टल कॉलेज लाहोर का लड़का और
मुन्शी शरणदास का भांजा आत्माराम मिश्र आगे थे.
मैंने पत्र लोक राणा साहब कोटी के आशीर्वाद के
लिये लेखे थे. उस कीतन का हरिचरण शास्त्री का
लड़की ले गया. रात को भोजन और निवास
यहीं.

१८ मई — मुन्शी शरणदास २॥ बजे
के [illegible] से 'कांगड़ा' गये. मुन्शी ने ५रु. मुझे
दिये. आज एक पैसा मशोबरा में ठाकुरद्वारे
में ) भजकापी ) [illegible] वाले मजदूर को.
[illegible]

योगिनो यतचित्तस्य युञ्जतो योगमात्मनः ॥१९॥
यत्रोपरमते चित्तं निरुद्धं योगसेवया।
यत्र चैवात्मनात्मानं पश्यन्नात्मनि तुष्यति ॥२०॥
सुखमात्यन्तिकं यत्तद्बुद्धिग्राह्यमतीन्द्रियम्।

---



आज सुबह उठकर एक झरने पर शौच स्नानादि कि-
या. फिर भोजन करके घोड़े पर शिमले गया.
घोड़ा जयासिंह ठेकेदार का था. साथ मुन्शी
शरणदास और उनका भतीजा थे. शिमला
देखा. यहां एक नाज़र के यहां गये थे. इससे
खूब बातचीत हुई. फिर कैलास जाने वाली
पार्टी की खोज की. वह पार्टी १० मई को चली
गई है ऐसा पता लगा. फिर यहां से 'संजो-
ली' २ मील चलकर गया. यहां टीका
साहब को देखा. इन्होंने व्यवहार
अच्छा किया. फिर यहां दूध पीकर '[illegible]
आदमी [illegible] से 'मशोबरा' देखते हुए
भज्जा की दर्शन करके फिर २ मील पैदल
चलकर 'क्यार' में आया. मुन्शी शरण
दास के घर.

वेत्ति यत्र न चैवायं स्थितश्चलति तत्त्वतः ॥२१॥
यं लब्ध्वा चापरं लाभं मन्यते नाधिकं ततः।
यस्मिन्स्थितो न दुःखेन गुरुणापि विचाल्यते २२
तं विद्याद्दुःखसंयोगवियोगं योगसंज्ञितम्।



आज सुबः यहां शौच स्नानादि क्रिया.
हो नी सम्पन्नो. यहां.
आज टीकासा हब से मुलाकात फिर की.
कुछ बात-चीत भी हुई.
रात को उन्होंने गाना भी सुनाया.
पं. वासुदेव से भी आज खूब बात चीत हुई
एक उदासी यहां शास्त्रार्थ करने के लिये
आये हैं. उनसे सिर्फ परिचय हुआ.

स निश्चयेन योक्तव्यो योगोऽनिर्विण्णचेतसा २३
संकल्पप्रभवान्कामांस्त्यक्त्वा सर्वानशेषतः।
मनसैवेन्द्रियग्रामं विनियम्य समन्ततः॥२४॥
शनैः शनैरुपरमेद्बुद्ध्या धृतिगृहीतया।



आज सुबह : ५ ठक्करशी जस्नाभाई के यहां फि
किरटी का साहब के दरबार में पहुंचे
फिर भोजन करने के बाद राणा साहब ने
बुलाया। उनको मैंने श्री जनेऊ और
५ श्लोकों का आशीर्वाद पत्र भी दिया
वहीं २ घण्टे बैठे थे. सालकोटी का
साहब के पास भोजन किया. गाना भ
सुनी. २ श्लोक देखकर राणा ने सिर्फ
'वाह बहुत उमदा' कहा और पं. वासु
देव ने भी साथ साथ 'बहुत अच्छा' कह
डाला. राणा का संस्कृत के साधारण ज्ञा
है. विशेष नहीं. निवास मुन्शी के डेरे ही.
रात को पं. भीमाद जन्नोरशी के पास
गया था. गाना सुन

आत्मसंस्थं मनः कृत्वा न किंचिदपि चिन्तयेत् २५
यतो यतो निश्चरति मनश्चञ्चलमस्थिरम्।
ततस्ततो नियम्यैतदात्मन्येव वशं नयेत् ॥२६॥
प्रशान्तमनसं ह्येनं योगिनं सुखमुत्तमम्।

ज्येष्ठ शुक्ल ४ गुरु ]     २१ मई     [ ज्येष्ठ ६

आज सुबः शौचस्नानादि करके टीकासाहबके पास गया था. सितार सुनी. फिर आकर डेरेपर भोजन किया. शामको जादूखेल देखा. रातको फिर टीकासाहबसे मुलाकात हुई. आज टीकासाहबसे बहुत बातें हुई. उनको कई पुस्तकों के नाम पते लिखा दिये हैं रातको फिर डेरेपर आकर भोजन.

उपैति शान्तरजसं ब्रह्मभूतमकल्मषम् ॥२७॥
युञ्जन्नेवं सदात्मानं योगी विगतकल्मषः ।
सुखेन ब्रह्मसंस्पर्शमत्यन्तं सुखमश्नुते ॥२८॥
सर्वभूतस्थमात्मानं सर्वभूतानि चात्मनि ।



दोनों समय भौ. डेरे मुन्शी के.
टीका साहब से सुबेरे मुलाकात हुई थी.
शाम को पं. भीमादत्त के साथ घूमने भी गये

ईक्षते योगयुक्तात्मा सर्वत्र समदर्शनः ॥२६॥
यो मां पश्यति सर्वत्र सर्वं च मयि पश्यति ।
तस्याहं न प्रणश्यामि स च मे न प्रणश्यति ॥३०॥
सर्वभूतस्थितं यो मां भजत्येकत्वमास्थितः ।



दीनों समय पं. भीमादत्त जोशी के घर भो.
और रात्री को निवास भी.

सर्वथा वर्तमानोऽपि स योगी मयि वर्तते ॥३१॥
आत्मौपम्येन सर्वत्र समं पश्यति योऽर्जुन ।
सुखं वा यदि वा दुःखं स योगी परमो मतः ॥३२॥
अर्जुन उवाच
योऽयं योगस्त्वया प्रोक्तः साम्येन मधुसूदन ।



दोनो समय भी. और रात्रि निवास पं. भीमादेव जोशी के घर. आज पं. वासुदेव जीसे भी बहुत बातें हुई. आजभी शामको घूमने गये थे.

आज पं. वासुदेव जीके बातोंसे यह मालूम हुआ याने ऐसा आभास हुआ कि इनके हृदय में कुछ ईर्ष्या का सञ्चार हो रहा है अस्तु.

एतस्याहं न पश्यामि चञ्चलत्वात्स्थितिं स्थिराम्
चञ्चलं हि मनः कृष्ण प्रमाथि बलवद्दृढम् ।
तस्याहं निग्रहं मन्ये वायोरिव सुदुष्करम् ॥३४॥
श्रीभगवानुवाच
असंशयं महाबाहो मनो दुर्निग्रहं चलम् ।

ज्येष्ठ शुक्ल ८ सोम ] २५ मई [ ज्येष्ठ १०

आज दोनो समय मुन्शीके घर भो.

अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृह्यते ॥३५॥
असंयतात्मना योगो दुष्प्राप इति मे मतिः ।
वश्यात्मना तु यतता शक्योऽवाप्तुमुपायतः॥३६॥
अर्जुन उवाच
अयतिः श्रद्धयोपेतो योगाच्चलितमानसः ।



(गङ्गादशहरा)

आज दोपहर भो. उरे मुन्शी के. और रात को पं.भीमा दत्त के यहां. कुमार दीवान सिंग से खूब बातें हुई. रात को निवास भीमा दत्त के घर मेरा यहां रहना पं. वासुदेवजी हृदय से नहीं चाहते हैं. ऐसा आभास हुआ. पर बुद्धिमानी से इस बात को छिपाकर ऊपर से मखमल चढाने की कोशिश करते है.

अप्राप्य योगसंसिद्धिं कां गतिं कृष्ण गच्छति ३७
कच्चिन्नोभयविभ्रष्टश्छिन्नाभ्रमिव नश्यति।
अप्रतिष्ठो महाबाहो विमूढो ब्रह्मणः पथि ॥३८॥
एतन्मे संशयं कृष्ण छेत्तुमर्हस्यशेषतः।

ज्येष्ठ शुक्ल ११ बुध ] २७ मई [ ज्येष्ठ १२

आज भो. भीमादत्त के घर, आज रामनाथ अमर नाथ, मदन लाल तीनो मुन्नालाल के अपने घर कांगडे को गये इसलिये मेरा निवास भोजन आज से पं. भीमादत्त के घर ठहरा
शाम को आज क्यार से शिमले पहुंचा साथ पं. भीमादत्त भी था. रात को शाकली कोठी में टीकासाहब के साथ मिला था
फिर 'काली बाडी' दर्शन को गया साथ पं. भीमादत्त और टीकासाहब को टी थे.
फिर वहां से रात को ११॥ बजे 'बाडी' में आकर ठाणे मे रातभर सोये साथ पं. भीमादत्त भी था. टीका साहब बडा सज्जन है.
टीकासाहब 'शाकली' में अपने कोठी में रहते हैं. (कार्तिको पढाया पं. भीमादत्त से ले-

त्वदन्यः संशयस्यास्य छेत्ता न ह्युपपद्यते ॥३९॥
श्रीभगवानुवाच
पार्थ नैवेह नामुत्र विनाशस्तस्य विद्यते ।
न हि कल्याणकृत्कश्चिद्दुर्गतिं तात गच्छति॥४०॥



आज सुबः शौचादि करके यहां बाउलीपर
स्नानादि किया. यहां पानीकी तकलीफ
है. आज भारी एकादशी निर्जला.
केले खाये दूध पीया टीकासा इवरसे बराडी में मुला-
कात हुई. इनने फिल्मिये बहुत आग्रह कर रहे हैं.
आज 'इम्पीरियल होटल शिमला में' क्लब में गाना सुना.
फिर बराकी में गये थे परन्तु पंडितसाहिब नहीं मिले
आज कोर महेन्द्रसिंह, कोर शार्दूलसिंह से जान
पहचान हुई. कोर रणधीरसिंह के साथ कांगड़े में ही
परिचय हुआ था. रात को टाकी = बोलते बाजा
सिनेमा देखा. १२। में फिर शिमले से बराड़ी आये.
रात में यहां निवास.

प्राप्य पुण्यकृतां लोकानुषित्वा शाश्वतीः समाः
शुचीनां श्रीमतां गेहे योगभ्रष्टोऽभिजायते ॥४१॥
अथवा योगिनामेव कुले भवति धीमताम्।
एतद्धि दुर्लभतरं लोके जन्म यदीदृशम् ॥४२॥



आज प्रदोष. मौन [illegible]
आज सुबह उठकर ९ नौ बजे [illegible] पहुंचे.
[illegible] ४ मील है. साथ पं. भीमा [illegible]
[illegible]

तत्र तं बुद्धिसंयोगं लभते पौर्वदेहिकम् ।
यतते च ततो भूयः संसिद्धौ कुरुनन्दन ॥४३॥
पूर्वाभ्यासेन तेनैव ह्रियते ह्यवशोऽपि सः ।
जिज्ञासुरपि योगस्य शब्दब्रह्मातिवर्तते ॥४४॥



आज दोनो वक्त भो. तथा निवास पूं. श्रीमाद गादे पर
आज श्री कालादेव से मुलाकात हुई. कैलासपात्रा
रह गई. पोउ दिन नमार ही ठहरने का ठहरा.

प्रयत्नाद्यतमानस्तु योगी संशुद्धकिल्बिषः ।
अनेकजन्मसंसिद्धस्ततो याति परां गतिम् ॥४५॥
तपस्विभ्योऽधिको योगी ज्ञानिभ्योऽपि मतोऽधिकः
कर्मिभ्यश्चाधिको योगी तस्माद्योगी भवार्जुन ४६

ज्येष्ठ शुक्ल १५ रवि ]  ३१ मई  [ ज्येष्ठ १६

आज डोनोवरका भो. ता. प. निवास पं. भीमाद-
त्ती के घर. [illegible]

योगिनामपि सर्वेषां मद्गतेनान्तरात्मना ।
श्रद्धावान्भजते यो मां स मे युक्ततमो मतः ॥४७॥

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां
योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे आत्मसंयम-
योगो नाम षष्ठोऽध्यायः ॥६॥

---



आज दोनों वक्त भो. तथा नाश्ता [illegible] भी भीमा-
दत्त के घर.

मयि सर्वमिदं प्रोतं सूत्रे मणिगणा इव ॥७॥
रसोऽहमप्सु कौन्तेय प्रभास्मि शशिसूर्ययोः।
प्रणवः सर्ववेदेषु शब्दः खे पौरुषं नृषु ॥८॥
पुण्यो गन्धः पृथिव्यां च तेजश्चास्मि विभावसौ।

आषाढ़ कृष्ण ६ शनि] ६ जून [ज्येष्ठ २२

दोनो वक्त भो. तथा निवास पं. भीमादत्त के
घर.

धर्माविरुद्धो भूतेषु कामोऽस्मि भरतर्षभ ॥११॥
ये चैव सात्त्विका भावा राजसास्तामसाश्च ये।
मत्त एवेति तान्विद्धि न त्वहं तेषु ते मयि ॥१२॥
त्रिभिर्गुणमयैर्भावैरेभिः सर्वमिदं जगत्।



आज दोनों समय भो. बालकराम के डेरे
निवास अपने कमरे में. आज पं. जीयाला
लाल कोतदार घर (मटन) गया. इसको
जाने के लिये १५ दिया.
)।साबुन. आज नेदलाल नहर आया
था. इसके साथ हमने उपेक्षा का ही
व्यवहार किया. आज ... नन्दलाल
रवार और साधु सर्वानन्द को देने के लिये
जियालाल को दीं. श्रीनाथ आया था.
आज से उन अकेले ही रहना है.

मोहितं नाभिजानाति मामेभ्यः परमव्ययम्॥१३॥
दैवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया।
मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते॥१४॥
न मां दुष्कृतिनो मूढाः प्रपद्यन्ते नराधमाः।



आज दो नो समय भो. बालक राम के डेरे.
=) बालक राम को दिये. दूध के लिये. निवास
अपने कमरे में. आज बुधवार को दूसरी
बारी दूटी. आज श्रीनाथ जी आया था.
रात को यह हमारे पास ही रहा.

माययापहृतज्ञाना आसुरं भावमाश्रिताः ॥१५॥
चतुर्विधा भजन्ते मां जनाः सुकृतिनोऽर्जुन ।
आर्तो जिज्ञासुरर्थार्थी ज्ञानी च भरतर्षभ ॥१६॥
तेषां ज्ञानी नित्ययुक्त एकभक्तिर्विशिष्यते ।



आज दो नो समय भो. बालकराम के डेरे
निवास अपने कमरे में 'श्रीनाथ'
आया था. रात को हमारे पास ही रहा.
आज 'डाक्टर' भी आया था. –

प्रियो हि ज्ञानिनोऽत्यर्थमहं स च मम प्रियः ।१७।
उदाराः सर्व एवैते ज्ञानी त्वात्मैव मे मतम् ।
आस्थितः स हि युक्तात्मा मामेवानुत्तमां गतिम्
बहूनां जन्मनामन्ते ज्ञानवान्मां प्रपद्यते ।



आज दोनों समय भी. बालकराम के डेरे
नेवास अपने कमरे में पं. सतसा आज धर दवा
कर आये थे. 'गीताथ' आया था. यह
हमारे पास ही रात का रहा.
2) बालकराम को दिये दूध के लिये.

प्रियो हि ज्ञानिनोऽत्यर्थमहं स च मम प्रियः ।१७।
उदाराः सर्व एवैते ज्ञानी त्वात्मैव मे मतम् ।
आस्थितः स हि युक्तात्मा मामेवानुत्तमां गतिम्
बहूनां जन्मनामन्ते ज्ञानवान्मां प्रपद्यते ।

---

आषाढ़ कृष्ण ११ गुरु ] ११ जून [ ज्येष्ठ २७

आज [illegible] दोपहर भो. नपा पत्नको
नि वास पं. भीमादत्त जोशी के घर.
लेकिन पत ठीक न होने के कारण तनभो. नहीं किया.
आज पं. जयवल्लभजी जोशी के यहां गया था.
यहां दूध पीया. ये कूर्मांचली ब्राह्मण है

वासुदेवः सर्वमिति स महात्मा सुदुर्लभः ।१९

कामैस्तैस्तैर्हृतज्ञानाः प्रपद्यन्तेऽन्यदेवताः ।

तं तं नियममास्थाय प्रकृत्या नियताः स्वया २०

यो यो यां यां तनुं भक्तः श्रद्धयार्चितुमिच्छति ।

आषाढ़ कृष्ण ११ शुक्र ]  १२ जून  [ ज्येष्ठ २८

आज तबियत ठीक न होने के कारण दोपहर को न छीके पा. आज पं. रघुनाथ जोशी के घर गया था वहां दूध पीया.
ये कूर्मांचली ब्राह्मण है.
आज पं. जीवानन्द जोशी के यहां गया था.
वहां दूध पीना.
पं. प्रेमवल्लभ तिवारी के डेरे तक गया था
१॥ लड्डू इन्हीं का खाया था.
ये दोनों कूर्मांचली ब्राह्मण हैं.
सुबेरे मुन्शी रामदास का लड़का रामनाथ ने
दूध पिला दिया.

तस्य तस्याचलां श्रद्धां तामेव विदधाम्यहम् ।२१।
स तया श्रद्धया युक्तस्तस्याराधनमीहते ।
लभते च ततः कामान्मयैव विहितान्हि तान् ।२२।
अन्तवत्तु फलं तेषां तद्भवत्यल्पमेधसाम् ।

---

आषाढ़ कृष्ण १२ शनि ] १३ जून [ ज्येष्ठ २९

आज प्रदोष मौन रात को नियमानुसार
[illegible] पारण.
निवास पर तथा रात को भो. पं. [illegible]मादत्त
जोशी के यहां

देवान्देवयजो यान्ति मद्भक्ता यान्ति मामपि २३
अव्यक्तं व्यक्तिमापन्नं मन्यन्ते मामबुद्धयः।
परं भावमजानन्तो ममाव्ययमनुत्तमम् २४
नाहं प्रकाशः सर्वस्य योगमायासमावृतः।

---

आषाढ़ कृष्ण १२ रवि ] १४ जून [ ज्येष्ठ ३०

आज दोनो समय भोजन तथा निवास
पं. भीमादत्त के यहां
आज पं. सदानन्द तिवारी की चिट्ठी
मिली.

मूढोऽयं नाभिजानाति लोको मामजमव्ययम् २५
वेदाहं समतीतानि वर्तमानानि चार्जुन।
भविष्याणि च भूतानि मां तु वेद न कश्चन।२६।
इच्छाद्वेषसमुत्थेन द्वन्द्वमोहेन भारत।



दोनों समय घूमो. तथा निवास पं. श्रीमाधव जी के घर.
आज श्री कासाडवसे मिला. आज इनके साथ ह
की बातचीत देखने में पाया.
आज एक श्री कानेटकर ब्राह्मण (सारस्वत) कार्न
ज से आते पहचान हुई. हिन्दी की मारवाड़ी
कुछ कविता करता है.

सर्वभूतानि संमोहं सर्गे यान्ति परंतप ॥२७॥
येषां त्वन्तगतं पापं जनानां पुण्यकर्मणाम् ।
ते द्वन्द्वमोहनिर्मुक्ता भजन्ते मां दृढव्रताः ॥२८॥
जरामरणमोक्षाय मामाश्रित्य यतन्ति ये ।

---



आज दो नो समय भो. तथा निवास प. भीमाद-त्त के घर. आज भी टीकासाहब से मुलाकात.

ते ब्रह्म तद्विदुः कृत्स्नमध्यात्मं कर्म चाखिलम् ।२९
साधिभूताधिदैवं मां साधियज्ञं च ये विदुः ।
प्रयाणकालेऽपि च मां ते विदुर्युक्तचेतसः ।३०

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां
योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ज्ञानविज्ञान-
योगो नाम सप्तमोऽध्यायः ॥७॥

---

प्र० आषाढ़ शुक्ल १ बुध ] १७ जून [ आषाढ़ २

( पुरुषोत्तम मासः )

आज दोनों समय पं. भीमादत्त जोशी के घर भो. व
निवास. दिकासा छोक के साथ भजन भी सुना का न हुई

ॐ

## अष्टमोऽध्यायः

अर्जुन उवाच

किं तद्ब्रह्म किमध्यात्मं किं कर्म पुरुषोत्तम।
अधिभूतं च किं प्रोक्तमधिदैवं किमुच्यते ॥१॥

---

आषाढ़ शुक्ल २ गुरु ] १८ जून [ आषाढ़ ३

आज दोपहर भो. पं. भीमाद जी के घर
शाम को शिमला आया साथ टीकासाहब फ़ौटी थे.
शिमले में शाम जी से टीकासाहब के को नीमें ही
ठहरे. रात को भो. प्रघा.

अधियज्ञः कथं कोऽत्र देहेऽस्मिन्मधुसूदन ।
प्रयाणकाले च कथं ज्ञेयोऽसि नियतात्मभिः ॥२॥

श्रीभगवानुवाच

अक्षरं ब्रह्म परमं स्वभावोऽध्यात्ममुच्यते ।

---



आजदो तो समय पद्मासना हवके पासगो.
मगवाननिवास पड़ी शाकुजीमें कोपी घडसकते
आज एक धी जोती बोड सोनार इलाज पण
परिचय हुआ.
आज राकिरण को चिठ्ठी लिखी.

भूतभावोद्भवकरो विसर्गः कर्मसंज्ञितः ॥३॥
अधिभूतं क्षरो भावः पुरुषश्चाधिदैवतम् ।
अधियज्ञोऽहमेवात्र देहे देहभृतां वर ॥४॥
अन्तकाले च मामेव स्मरन्मुक्त्वा कलेवरम् ।

---



आज दो नो समय भो. यहां टीकासाहब के पास.
आज को डॉ. भी टेल देखने गया था. ~~[illegible]~~
~~[illegible]~~ था. 1) रामनाथ ने
2 गाड़ी में मेरा टिफिन दे पेथी. आया कृपनहीं.
रेसमें टीकासाहब को टीका घोडा 'गोल्डन' कहिला
आया था. आज स्त्री लोती सोतार [illegible] नारायण के
दूकान में १ घंटा भया था. तिनाल पड़ी शाक जीते.
रेसमें टिकट 1) का मं. भीभाइ जाने मेरा दिया

यः प्रयाति स मद्भावं याति नास्त्यत्र संशयः॥५॥
यं यं वापि स्मरन्भावं त्यजत्यन्ते कलेवरम् ।
तं तमेवैति कौन्तेय सदा तद्भावभावितः ॥६॥
तस्मात्सर्वेषु कालेषु मामनुस्मर युध्य च ।



आज दोनों समय भो. टीकासाहब के पास
आज शाम को 'आखो' 'कालिका' देखने गये
थे. यह पर्वत शिखर शिमले से २ मील है.
यहाँ कालीका, हनुमान के मन्दिर हैं. टीकासा
ब. वे. भीमादत्त और [illegible] और भाई [illegible] साथ थे
रात को निवास आकर [illegible] को लिखा

मय्यर्पितमनोबुद्धिर्मामेवैष्यस्यसंशयम् ॥७॥
अभ्यासयोगयुक्तेन चेतसा नान्यगामिना ।
परमं पुरुषं दिव्यं याति पार्थानुचिन्तयन् ॥८॥
कविं पुराणमनुशासितारमणोरणीयांसमनुस्मरेद्यः



आज दो [illegible]
में [illegible]

सर्वस्य धातारमचिन्त्यरूपमादित्यवर्णं तमसः परस्तात् ॥९॥ प्रयाणकाले मनसाचलेन भक्त्या युक्तो योगबलेन चैव । भ्रुवोर्मध्ये प्राणमावेश्य सम्यक् स तं परं पुरुषमुपैति दिव्यम् ॥१०॥



आज श्री० दोपहर भो० शिकासाहब के पास
रात को पं० भीमादत्त के पास कुंवर भवानीसिंग
के घर. निवास कोठी हाउस में २ ता. [illegible]
पं० भीमादत्त के पास. आज शिकासाहब
कपार - नेगपे.
निवास कोठी हाउस में.

यदक्षरं वेदविदो वदन्ति विशन्ति यद्यतयो वीतरागाः। यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्यं चरन्ति तत्ते पदं संग्रहेण प्रवक्ष्ये ॥ ११ ॥

सर्वद्वाराणि संयम्य मनो हृदि निरुध्य च।

---



आज दोपहर भो० पं० भीमादत्त जोशी के पास
कुँवर भरतसिंग के घर.
शाम को पं० जोगेश्वरदत्त जोशी आया था.
इसके बाद दसे आज रात्री में भो० नथानि वाल
दत्त के घर 'भराडी' में किया. यह पं० भीमा-
दत्त जोशी का बहनोई है.

मूर्ध्न्याधायात्मनः प्राणमास्थितो योगधारणाम्
ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन्मामनुस्मरन् ।
यः प्रयाति त्यजन्देहं स याति परमां गतिम् ॥१३॥
अनन्यचेताः सततं यो मां स्मरति नित्यशः ।



आज दोपहर भो. पं. जोगेश्वरदयाल के घर
रात को पं. भीमादत्त जोशी के पास
शाम को धोबीघाट तक घूमने गया था.
तिवारी जी को दी हजार ने.

तस्याहं सुलभः पार्थ नित्ययुक्तस्य योगिनः ।१४।
मामुपेत्य पुनर्जन्म दुःखालयमशाश्वतम् ।
नाप्नुवन्ति महात्मानः संसिद्धिं परमां गताः ।१५।
आब्रह्मभुवनाल्लोकाः पुनरावर्तिनोऽर्जुन ।

---

आषाढ़ शुक्ल ११ शुक्र ] २६ जून [ आषाढ़ ११

आज दोपहर भो. पं. भीमादत्त के पास
कुंवर भरतसिंग के घर रात को भो. नही

मामुपेत्य तु कौन्तेय पुनर्जन्म न विद्यते ॥१६॥
सहस्रयुगपर्यन्तमहर्यद्ब्रह्मणो विदुः ।
रात्रिं युगसहस्रान्तां तेऽहोरात्रविदो जनाः॥१७॥
अव्यक्ताद्व्यक्तयः सर्वाः प्रभवन्त्यहरागमे ।



आज प्रदोष मौन रात्रौ नियमाऽनुसार पारण पं. भीमादत्त के घर. आज सुबः उठकर क्यार पैदल पहुंचा टीकासाहब से मुलाकात की. अब तो टीकासाहब ज्यादः ही स्रोहकर ने लगे हैं. शाकलीसे क्यार प्यारी प्रीत है. साथ पं. भीमादत्त भी था मुन्शी पं. शरणदास के घर गया था पं. बद्रीदत्त शर्मा अवस्थी कांगड़ा रामायण की चिट्ठी मिली.

रात को एक मरासी का गाना टीकासाहब के यहां सुना.

रात्र्यागमे प्रलीयन्ते तत्रैवाव्यक्तसंज्ञके ॥१८॥
भूतग्रामः स एवायं भूत्वा भूत्वा प्रलीयते ।
रात्र्यागमेऽवशः पार्थ प्रभवत्यहरागमे ॥१९॥
परस्तस्मात्तु भावोऽन्योऽव्यक्तोऽव्यक्तात्सनातनः



आज सुबः उठकर सीधे शाकली पहुंचा
पैदल अकेला. शौचादि रास्ते मे निपटा.
फिर यहां से स्टेशन पर आकर १ रु ॥।=)
देकर सोलन का टिकट ले रेल गाडी से
सोलन पहुंचा. यहां पं. जन्मादत्त पाण्डेय जी के
यहां ठहरा. ये कूर्माचली ब्राह्मण हैं इनके नाम
पं. भीमादत्त जोशी ने चिट्ठी दी थी. यहां पं. भूपराम
वैद्य कुंवर दीवान सिंह तथा रामनाथ (मुन्शी
रत्नदास का लड़का) मिले. आज यहां देवी
का दरबार मे नाटक देखा. दंगल कुश्ती देखी
टिकट २१. दीवान सिंह ने खर्च किये रात को
ड्रामा देखा उस का टिकट ॥) दीवान सिंह ने दिये.
१ रु. फलों मे खर्च दीवान सिंह ने दिया.
रात को पं. जन्मादत्त पाण्डेय के यहां रोटी खाई.
सरकारी रसल आयी थी.

यः स सर्वेषु भूतेषु नश्यत्सु न विनश्यति ॥२०॥
अव्यक्तोऽक्षर इत्युक्तस्तमाहुः परमां गतिम् ।
यं प्राप्य न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम ॥२१॥
पुरुषः स परः पार्थ भक्त्या लभ्यस्त्वनन्यया ।



आज रामनाथ और दीवानासिंह शिमले चले गये
आज भी दोनों समय पं. जगन्नाथ जी पाण्डेय के
पास. राजासाहब ने तरफसे रसद आयी थी
आज राम आत्माराम से जान पहचान हुई
यहां के राजासाहब दुर्गासिंह के पास गया
था. पं. भूपरामजी के साथ. ४ आपों ऐ भी
इनको दीं राजासाहब से कोई बातचीत
नहीं। सिर्फ कहां रहते हैं और [redacted] पूछा था। इ-
स तरह करते हैं. संस्कृत पढ़े नहीं [redacted] हैं।
मेहता जगतराम के यहां पं. भूपरामजी के साथ
गया था. पं. पद्मनाभ राम राजासाहब के
मामा हुए भाई हैं।

यस्यान्तःस्थानि भूतानि येन सर्वमिदं ततम् ॥२२॥
यत्र काले त्वनावृत्तिमावृत्तिं चैव योगिनः ।
प्रयाता यान्ति तं कालं वक्ष्यामि भरतर्षभ ॥२३॥
अग्निर्ज्योतिरहः शुक्लः षण्मासा उत्तरायणम् ।



आज भी दोनों समय भो. यहां पं. जमना
दास पाण्डेय के पास. रसद सरकारी (राजासाह-
ब के यहां से) आयी थी. ज्वालाराम के यहां
गयेथे पं. भूपरामजी के साथ. ज्वालाराम
रहने के लिये आग्रह कर रहा था. राजासाहब ने
इसे हमको रोकने के लिये कह रखा था. यहां के
पं. मथुरा प्रसाद दीक्षित यहां नहीं थे. उनके
आने तक हमें रहने के लिये आग्रह था. मतल-
ब यह कि उनसे हमें लड़ाना था और मेरी
परीक्षा देखनी थी. पर मुझे इन बातों से क्या
मतलब.

तत्र प्रयाता गच्छन्ति ब्रह्म ब्रह्मविदो जनाः ॥२४॥
धूमो रात्रिस्तथा कृष्णः षण्मासा दक्षिणायनम् ।
तत्र चान्द्रमसं ज्योतिर्योगी प्राप्य निवर्तते ॥२५॥
शुक्लकृष्णे गती ह्येते जगतः शाश्वते मते ।



आज सुबः उठकर शौचादि निपटकर ६ बजे के रेलगाडी से १ रु. ।।।=। टिकट के कराशीमले आया यहां शाकजीमें को थीहाउस में ठहरा पं. भीमादेवके पास भो. दोनों समय. भरतागंगके पार.

एकया यात्यनावृत्तिमन्ययावर्तते पुनः ॥२६॥
नैते सृती पार्थ जानन्योगी मुह्यति कश्चन।
तस्मात्सर्वेषु कालेषु योगयुक्तो भवार्जुन ॥२७॥
वेदेषु यज्ञेषु तपःसु चैव दानेषु यत्पुण्यफलं

---



आज सुबः उठकर यहांसे पैदल पामील
च उकर कयार पहुंचा यहां पं॰ भीमादत्त
के घर डेरा. दो पहर भो. आज मुन्शी
शरणदासके यहां रातको पं॰ भीमादत्तके
यहां. टीकासाहबसे मिलाथा.

प्रदिष्टम् अत्येति तत्सर्वमिदं विदित्वा योगी
परं स्थानमुपैति चाद्यम् ॥२८॥

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे अक्षरब्रह्मयोगो नामाष्टमोऽध्यायः ॥८॥

---

द्वि० आषाढ़ कृष्ण २ शुक्र ] ३ जुलाई [ आषाढ़ १८

आज अंग्रेजी तारीख के अनुसार जन्मदिन.
आज दोनो समय भो. पं. भीमादत्त के घर
टीकासाहब से मिला था
आज २८ वर्ष पूर्ण हुए.

ॐ

नवमोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

इदं तु ते गुह्यतमं प्रवक्ष्याम्यनसूयवे ।



आज दोनो समय भो. पं. भीमाजनके घर..
आज पं. वासुदेवजी के व्यवहार से ऐसा
मालूम हुआ कि इनके हृदय में ईर्ष्या का
सञ्चार हो गया है. अस्तु।
टीकासाहबसे मिलाथा. आज यहां
टीकासाहब ब्योग आयेथे ये टीका
साहब को टीके लाजक हैं।

द्वि० आषाढ़ कृष्ण ९ रवि ] ९ जुलाई [ आषाढ़ २०

आज दोनो समय भो. पं. भीमादत्त के घर
तथा रात्रि निवास.
टीका साहब के पास गया था.
आज पं. जोगीश्वरदत्त जोशी पं. भीमा
दत्त के बहनोई यहां आये थे.

अप्राप्य मां निवर्तन्ते मृत्युसंसारवर्त्मनि ॥३॥
मया ततमिदं सर्वं जगदव्यक्तमूर्तिना ।
मत्स्थानि सर्वभूतानि न चाहं तेष्ववस्थितः ॥४॥
न च मत्स्थानि भूतानि पश्य मे योगमैश्वरम् ।



आज दोनो समय भो. पं. भीमादत्त के घर
तथा रात्रि निवास.
आज पं. भीमादत्त तथा पं. जोभीश्वरदत्त
शिमला चले गये.
आज टीकासाहब के पास गया था
आज पं. मुकुन्दवल्लभ मिश्र. कुराली
का भेजा हुआ रु. १५ पन्द्रह मानी आर्डर
मिला.

भूतभृन्न च भूतस्थो ममात्मा भूतभावनः ॥५॥
यथाकाशस्थितो नित्यं वायुः सर्वत्रगो महान् ।
तथा सर्वाणि भूतानि मत्स्थानीत्युपधारय ॥६॥
सर्वभूतानि कौन्तेय प्रकृतिं यान्ति मामिकाम् ।



आज दोनो समय भो. पं. भीमाशंकर के घर तथा निवास
आज टीकासाहब के साथ उनके बागीचा पर्य [?] गया था. टीकासाहब शिमले गये.

कल्पक्षये पुनस्तानि कल्पादौ विसृजाम्यहम् ।७।
प्रकृतिं स्वामवष्टभ्य विसृजामि पुनः पुनः ।
भूतग्राममिमं कृत्स्नमवशं प्रकृतेर्वशात् ॥८॥
न च मां तानि कर्माणि निबध्नन्ति धनंजय ।

---

द्वि० आषाढ़ कृष्ण ८ बुध ] ८ जुलाई [ आषाढ़ २३

आज भोजन पं. भीमादत्त के घर कर के
सवारी घोड़े पर गोविन्द को (भीमादत्त का
लड़का) लेकर शाकली (शिमला) में पहुंचा
साथ पं. प्रेमवल्लभ तिवाड़ी भी थे.
शाम को आज रसगुल्ले टीका साहब ने खिला
ये.

उदासीनवदासीनमसक्तं तेषु कर्मसु ॥ ९ ॥
मयाध्यक्षेण प्रकृतिः सूयते सचराचरम् ।
हेतुनानेन कौन्तेय जगद्विपरिवर्तते ॥१०॥
अवजानन्ति मां मूढा मानुषीं तनुमाश्रितम् ।



आज प्रो. पं. भीमादत्त के पास कुंवर भरतसिंग के घर. रात को सिर्फ दूध निवास था ६ कोटी हाउस मे.

परं भावमजानन्तो मम भूतमहेश्वरम् ॥११॥
मोघाशा मोघकर्माणो मोघज्ञाना विचेतसः ।
राक्षसीमासुरीं चैव प्रकृतिं मोहिनीं श्रिताः ॥१२॥
महात्मानस्तु मां पार्थ दैवीं प्रकृतिमाश्रिताः ।

---

द्वि० आषाढ़ कृष्ण १० शुक्र] १०जुलाई [आषाढ़ २५

मो. अपने हाथ बनाखाया. रातको दूध
निवास यहीं कोठी हाउसमे.

भजन्त्यनन्यमनसो ज्ञात्वा भूतादिमव्ययम् ॥१३॥
सततं कीर्तयन्तो मां यतन्तश्च दृढव्रताः ।
नमस्यन्तश्च मां भक्त्या नित्ययुक्ता उपासते १४
ज्ञानयज्ञेन चाप्यन्ये यजन्तो मामुपासते ।

---

द्वि० आषाढ़ कृष्ण ११ शनि] ११ जुलाई [आषाढ़ २६

भो. तथा निवास यहां कोठी हाउसमें
दोनोंसमय.

एकत्वेन पृथक्त्वेन बहुधा विश्वतोमुखम् ॥१५॥
अहं क्रतुरहं यज्ञः स्वधाहमहमौषधम् ।
मन्त्रोऽहमहमेवाज्यमहमग्निरहं हुतम् ॥१६॥
पिताहमस्य जगतो माता धाता पितामहः ।



आज भी दोनों समय यहां तथा निवास भी. आज दी कासाहब के साथ एडवर्ड ए.डी.सी. के परशुराम नाटक देखने गया था.

वेद्यं पवित्रमोंकार ऋक्साम यजुरेव च ॥१७॥
गतिर्भर्ता प्रभुः साक्षी निवासः शरणं सुहृत् ।
प्रभवः प्रलयः स्थानं निधानं बीजमव्ययम् ॥१८॥
तपाम्यहमहं वर्षं निगृह्णाम्युत्सृजामि च ।



आज प्रदोष मौन
आज ऐसी पं. जयवल्लभजी के मुख से खबर लगी कि पं. वासुदेव मेरे 'एक बात पर चिढे हैं' और ५०४ रुपये लगाने को तय्यार हैं'. न ही तो माफी मांगो' वाह वा! मनुष्य अपनी बात भूल जाये और दूसरे की बात पकड ले. अस्तु टीकासाहबके साथ रांजोली गया था. घोडे पर

अमृतं चैव मृत्युश्च सदसच्चाहमर्जुन ॥१६॥
त्रैविद्या मां सोमपाः पूतपापा यज्ञैरिष्ट्वा स्वर्गतिं
प्रार्थयन्ते । ते पुण्यमासाद्य सुरेन्द्रलोकमश्नन्ति
दिव्यान्दिवि देवभोगान् ॥२०॥ ते तं भुक्त्वा



आज दोनो समय भो० तथा निवास कोठी हाउस
में टीकासाहब के पास.
आज घूमने भी गया था. पं० वासुदेव के बारे में
टीकासाहब से बात हुई थी. उन्होने कहा कि
आने दीजिये.

स्वर्गलोकं विशालं क्षीणे पुण्ये मर्त्यलोकं विशन्ति
एवं त्रयीधर्ममनुप्रपन्ना गतागतं कामकामा लभन्ते
अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते ।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम् ।२२।



आज दोपहर भो. कोठी हाउससे टीकासा
बकेपास करके घोडेसे रांजोडी पहुंचे
यहां रिकसागाडीसे कश्मीर गये. टीकासाहब
भीसाथ थे. आज यहां आतेही देखा. पं वासु
देवजीका व्यवहार रूखाईसे भराहै. फिर
रातको पं. वासुदेवजीने मुकदमेकी तौ
पर टीकासाहबके सामने विवाद किया
और अन्तमें विजय हमारे तरफ हुआ.
रातमें टीकासाहबके पास विवादके
समय टीकासाहब पं. जयवल्लभजी
बनीलाल देवीसिंह, सोमदास, परसरा
अनन्तराम, आदि कई लोक थे.
निवास भीमादत्तके घर

येऽप्यन्यदेवता भक्ता यजन्ते श्रद्धयान्विताः।
तेऽपि मामेव कौन्तेय यजन्त्यविधिपूर्वकम् ।२३।
अहं हि सर्वयज्ञानां भोक्ता च प्रभुरेव च।
न तु मामभिजानन्ति तत्त्वेनातश्च्यवन्ति ते ।२४।

---



आज दोनो समय टीकासाहब के पास
रोटी खाई. पं. वासुदेवजी का व्यवहार
रुखाई भरा हो रहा है. आज कर्क सङ्क्रा
न्ति हुई
निवास भी साहब के घर

यान्ति देवव्रता देवान्पितॄन्यान्ति पितृव्रताः ।
भूतानि यान्ति भूतेज्या यान्ति मद्याजिनोऽपि माम्
पत्रं पुष्पं फलं तोयं यो मे भक्त्या प्रयच्छति ।
तदहं भक्त्युपहृतमश्नामि प्रयतात्मनः ॥२६॥

द्वि० आषाढ़ शुक्ल २ शुक्र] १७ जुलाई [आषाढ़ ३२

( जगदीशरथयात्रा )

आज दोपहर का भो. टीका साहब के पास
रात को भो. पं. भीमादत्त के घर. भीमा
सकी माता देवप्रयाग से आज घर पृ
थी. पं. वासुदेवजी अब कुछ व्यवहा
सुधारने लगे. निवास भीमादत्त के घ
सुबः घूमने गया था. साथ कुंवर दीवान
सिंग थे.

यत्करोषि यदश्नासि यज्जुहोषि ददासि यत्।
यत्तपस्यसि कौन्तेय तत्कुरुष्व मदर्पणम् ।२७।
शुभाशुभफलैरेवं मोक्ष्यसे कर्मबन्धनैः ।
संन्यासयोगयुक्तात्मा विमुक्तो मामुपैष्यसि ।२८।

द्वि० आषाढ़ शुक्ल ३ शनि] १८ जुलाई [बं०श्रावण १

आज दोनो समय भो॰ तथा निवास पं. श्री. मादन के घर. आज सुब: टीकासाहब शिमले गये.

सुब: घूमने गया था साथ कु. दी. सिं थे.

समोऽहं सर्वभूतेषु न मे द्वेष्योऽस्ति न प्रियः।
ये भजन्ति तु मां भक्त्या मयि ते तेषु चाप्यहम्॥२६
अपि चेत्सुदुराचारो भजते मामनन्यभाक्।
साधुरेव स मन्तव्यः सम्यग्व्यवसितो हि सः॥३०



दोनो समय भोजन तथा निवास पं. भीमा
ड्जके घर.
आज मै अकेले ही सुबः घूमने गया था.

क्षिप्रं भवति धर्मात्मा शश्वच्छान्तिं निगच्छति
कौन्तेय प्रति जानीहि न मे भक्तः प्रणश्यति ॥३१॥
मां हि पार्थ व्यपाश्रित्य येऽपि स्युः पापयोनयः।



दोनो समय भो. तथा निवास पं. भीमादत्त
के घर. सुब: अकेले ही घूमने गया था.
शाम को टीकासाहब के पास गया था.
आज टीकासाहब शिमले से शाम को ७ बजे
आये.

स्त्रियो वैश्यास्तथा शूद्रास्तेऽपि यान्ति परां गतिम्
किं पुनर्ब्राह्मणाः पुण्या भक्ता राजर्षयस्तथा।
अनित्यमसुखं लोकमिमं प्राप्य भजस्व माम् ॥३३॥
मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु।



दो तो समय भो. तथा निवास पं. भी
माडल के घर. सुब: अकेले ही घूमने गय

आज कानूगो पं. मोलकराम पाण्डितक
लडका अपने घर ले गया. वहां दूध
पिलाया और आम खिलाये.
शामको टीकासाहब के पास गया था.
पं. देवीदत्त जोशी (कूर्मांचली) से जान
पहचान हुई. सल्याणा जि. कांगडा त. पाल
मपुर का रहनेवाला पं. मोहन बेहुआ से जा
न पहचान हुई. यह कानूगो का लडका
लक्ष्मीचन्द का साला है.

मामेवैष्यसि युक्त्वैवमात्मानं मत्परायणः ॥३४॥
ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे राजविद्या राजगुह्ययोगो नाम नवमोऽध्यायः ॥९॥

---



आज दोनों समय भो. तथा निवास पं. भीमदत्त के घर

टीकासाहब के पास गया था.

सुब: अकेला ही घूमने गया था

ॐ

अथ दशमोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

भूय एव महाबाहो श्रृणु मे परमं वचः।

द्वि० आषाढ़ शुक्ल १ गुरु ] २३ जुलाई [श्रावण ६

दोनो समय पं भीमादत्तजी के घर भो. तथा निवास
आज पं. भीमादत्त शिमले से घर आ
टी कासा ह बके पास गया था.

यत्तेऽहं प्रीयमाणाय वक्ष्यामि हितकाम्यया ॥१॥
न मे विदुः सुरगणाः प्रभवं न महर्षयः ।
अहमादिर्हि देवानां महर्षीणां च सर्वशः ॥२॥
यो मामजमनादिं च वेत्ति लोकमहेश्वरम् ।



आजजन्मदिन तिथीके अनुसार.
दोनो समय भो. तथा निवास
पं. भीमादत्त के घर.
टीकासाहब के पास गया था.
आज २८ वर्ष पूर्ण हुए.
सांसारिक कोई भी सुख नही मिला आगे जैसा
प्रारब्ध.

असंमूढः स मर्त्येषु सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥३॥
बुद्धिर्ज्ञानमसंमोहः क्षमा सत्यं दमः शमः ।
सुखं दुःखं भवोऽभावो भयं चाभयमेव च ॥४॥
अहिंसा समता तुष्टिस्तपो दानं यशोऽयशः ।

---



(देवशयनी)

आज एकादशी उपवास फलाहार पं. भीमसेन के घर गया था निवास भी.
आज टीकाराम हरिवल्लभ के पास गया था.
पं. वासुदेवजी के हृदयसे बहुतही ईर्ष्या पैदा हुई है. आज पं. अम्बिका चरण (हरिचरण शास्त्री प्रोफेसर of ओरिएन्टल कॉलेज लाहौर का लड़का) यहां आया था मुझसे भी मिलने को लिये आया था.

भवन्ति भावा भूतानां मत्त एव पृथग्विधाः ॥५॥
महर्षयः सप्त पूर्वे चत्वारो मनवस्तथा।
मद्भावा मानसा जाता येषां लोक इमाः प्रजाः ॥६॥
एतां विभूतिं योगं च मम यो वेत्ति तत्त्वतः।



दोनो समय भो. तथा निवास पं. भीमा दत्तके घर. टीकासाहबके पास गया था. पं. वासुदेवजीका व्यवहार रूखा हो रहा है अस्तु.

सोऽविकम्पेन योगेन युज्यते नात्र संशयः ॥७॥
अहं सर्वस्य प्रभवो मत्तः सर्वं प्रवर्तते ।
इति मत्वा भजन्ते मां बुधा भावसमन्विताः ॥८॥
मच्चित्ता मद्गतप्राणा बोधयन्तः परस्परम् ।



आज मौन प्रदोषव्रत रातको नियमाऽ-
नुसार पारण. पं. भीमादत्त के घर
टीकासाहबके पास गया था.

कथयन्तश्च मां नित्यं तुष्यन्ति च रमन्ति च ॥९॥
तेषां सततयुक्तानां भजतां प्रीतिपूर्वकम् ।
ददामि बुद्धियोगं तं येन मामुपयान्ति ते ॥१०॥
तेषामेवानुकम्पार्थमहमज्ञानजं तमः ।

द्वि० आषाढ़शुक्ल १४ मंगल] २८ जुलाई [श्रावण ११

दोनों समय भो. तथा निवास पं. श्री मा॰ कृष्ण के
घर. टीकासाहब के पास गया था

नाशयाम्यात्मभावस्थो ज्ञानदीपेन भास्वता ।११।

अर्जुन उवाच

परं ब्रह्म परं धाम पवित्रं परमं भवान् ।
पुरुषं शाश्वतं दिव्यमादिदेवमजं विभुम् ।१२।

---

द्वि० आषाढ़ शुक्ल १५ बुध ] २६ जुलाई [श्रावण १२

दोनों समय भो. (व्यासपूजन) तथा निवास पं. भीमा
शंकर के घर.
टीकासाहब के पास गया था.

आहुस्त्वामृषयः सर्वे देवर्षिर्नारदस्तथा ।
असितो देवलो व्यासः स्वयं चैव ब्रवीषि मे ॥१३॥
सर्वमेतदृतं मन्ये यन्मां वदसि केशव ।
न हि ते भगवन्व्यक्तिं विदुर्देवा न दानवाः ॥१४॥

श्रावण कृष्ण १ गुरु सं० १९८८] २० जुलाई [श्रावण १२

दोनो समय भो० तथा निवास पं० भीमादत्त
के घर
टीकासाहब के पास गया था।

स्वयमेवात्मनात्मानं वेत्थ त्वं पुरुषोत्तम ।
भूतभावन भूतेश देवदेव जगत्पते ॥१५॥
वक्तुमर्हस्यशेषेण दिव्या ह्यात्मविभूतयः ।
याभिर्विभूतिभिर्लोकानिमांस्त्वं व्याप्य तिष्ठसि

श्रावण कृष्ण २ शुक्र] २१ जुलाई [श्रावण १४

दोनो समय भो. न था। निवास पं. भीमा-
दत्त के घर. टीकासाहब के पास गया था.

कथं विद्यामहं योगिंस्त्वां सदा परिचिन्तयन्।
केषु केषु च भावेषु चिन्त्योऽसि भगवन्मया।१७।
विस्तरेणात्मनो योगं विभूतिं च जनार्दन।
भूयः कथय तृप्तिर्हि शृण्वतो नास्ति मेऽमृतम्।१८।

श्रावण कृष्ण ३ शनि] १ अगस्त स० १९३१ [श्रावण १५

दोनो समय भो० तथा निवास पं० भीमादत्त
के घर.

श्रीभगवानुवाच

हन्त ते कथयिष्यामि दिव्या ह्यात्मविभूतयः ।
प्राधान्यतः कुरुश्रेष्ठ नास्त्यन्तो विस्तरस्य मे ।१९।
अहमात्मा गुडाकेश सर्वभूताशयस्थितः ।

श्रावण कृष्ण ४ रवि] २ अगस्त [श्रावण १६

दोनोसमयभो. तथा निवास पं. भीमादत्त के घर
टीकासाहब के पास गया था.

अहमादिश्च मध्यं च भूतानामन्त एव च ॥२०॥
आदित्यानामहं विष्णुर्ज्योतिषां रविरंशुमान् ।
मरीचिर्मरुतामस्मि नक्षत्राणामहं शशी ॥२१॥
वेदानां सामवेदोऽस्मि देवानामस्मि वासवः ।



आज दोपहर को भो. पं. भीमादत्त के घर करके
शाम को टीकासाहब के साथ शिमले गया. साथ
पं. जयवल्लभ जोशी कूर्माचली और पं. तारादत्त
पुरोहित भी थे. पं. जयवल्लभ जी ने बहुत बुरा
व्यवहार किया. अस्तु. अब यहां रहना उचि-
त नहीं है. रात को शाकली में टीकासाहब के
पास रोटी खाई. रात को नेशनल ए.डी.सी.
का कि 'आदर्श मित्र' नाटक देखने गये थे.
टिकट टीकासाहब ने दिया था. साथ
जयवल्लभ और तारादत्त थे.
रात दो बजे आये. रात्री निवास कोटी हाउ-
स शाकली में.

इन्द्रियाणां मनश्चास्मि भूतानामस्मि चेतना ।२२।
रुद्राणां शंकरश्चास्मि वित्तेशो यक्षरक्षसाम् ।
वसूनां पावकश्चास्मि मेरुः शिखरिणामहम् ॥२३॥
पुरोधसां च मुख्यं मां विद्धि पार्थ बृहस्पतिम् ।



आज डोनो समय भो. तथ निवास यही.
(कोटी हाउस शाकचीमें)

आज भरतासिंग ने भी बहुत बुरा व्यवहार
किया. अब यहां रहना उचित नहीं है.

सेनानीनामहं स्कन्दः सरसामस्मि सागरः ।२४।
महर्षीणां भृगुरहं गिरामस्म्येकमक्षरम् ।
यज्ञानां जपयज्ञोऽस्मि स्थावराणां हिमालयः ।२५।
अश्वत्थः सर्ववृक्षाणां देवर्षीणां च नारदः ।

---



आज दोनों समय भो. तथा निवास यहीं
(कोठी हाउस शाक. जी में)

गन्धर्वाणां चित्ररथः सिद्धानां कपिलो मुनिः ।२६।
उच्चैःश्रवसमश्वानां विद्धि माममृतोद्भवम् ।
ऐरावतं गजेन्द्राणां नराणां च नराधिपम् ।२७।
आयुधानामहं वज्रं धेनूनामस्मि कामधुक् ।



आज दोपहर का भो॰ पं॰ प्रेमवल्लभ तिवाडी
जी के यहां रात को पं॰ भीमादत्त के पास.
निवास भीमादत्त के घर.
आज सुबः उक्कर शाकलीसे क्यारगया.

प्रजनश्चास्मि कन्दर्पः सर्पाणामस्मि वासुकिः २८
अनन्तश्चास्मि नागानां वरुणो यादसामहम्।
पितृणामर्यमा चास्मि यमः संयमतामहम् ॥२६॥
प्रह्लादश्चास्मि दैत्यानां कालः कलयतामहम्।



आज दोपहर का भो. पं. भीमादत्त के घर.
शाम को शाकली (शिमला) गया. रात भो. कुछ नहीं
. दूध पीया.
आज मातृ श्राद्ध दिन था. पर मैंने उसके निमि
त्त कुछ भी दिया नहीं. कारण यह कि किसी
को पता न लगे.

मृगाणां च मृगेन्द्रोऽहं वैनतेयश्च पक्षिणाम् ॥३०॥
पवनः पवतामस्मि रामः शस्त्रभृतामहम् ।
झषाणां मकरश्चास्मि स्रोतसामस्मि जाह्नवी ३१
सर्गाणामादिरन्तश्च मध्यं चैवाहमर्जुन ।



आज सुबः उठकर 'जुणगा' गया शिमले से सडक के रास्ते ११ मील जुणगा है
जुणगे में क्योंथल स्टेट का दरबार है. यहां एक संस्कृत पाठशाला और एक मिडिल स्कूल एक अस्पताल है. पाठशाला का पण्डित आम्बिका चरण के पास ठहरा इसके पास भो. तथा निवास.

अध्यात्मविद्या विद्यानां वादः प्रवदतामहम् ।३२।
अक्षराणामकारोऽस्मि द्वन्द्वः सामासिकस्य च ।
अहमेवाक्षयः कालो धाताहं विश्वतोमुखः ।३३
मृत्युः सर्वहरश्चाहमुद्भवश्च भविष्यताम् ।



आज दोनोसमय भो. तथा निवास पं. आम्बिका चरण पुरोहित (मध्यातु) के पास (पप्रोला बैजनाथ जि. कांगडा का रहनेवाला)

कीर्तिः श्रीर्वाक्च नारीणां स्मृतिर्मेधा धृतिः क्षमा
बृहत्साम तथा साम्नां गायत्री छन्दसामहम् ।
मासानां मार्गशीर्षोऽहमृतूनां कुसुमाकरः ॥३५॥
द्यूतं छलयतामस्मि तेजस्तेजस्विनामहम् ।



आज दो नो समय भो. तथा निवास पं. आम्बि-
का चरण के पास.
आज यहां के राज पं. राघवानन्द के बुला
ने स वहां गया था. यह सिर्फ आडम्बरी
है. और पाण्डितंमन्य भी है.

जयोऽस्मि व्यवसायोऽस्मि सत्त्वं सत्त्ववतामहम्
वृष्णीनां वासुदेवोऽस्मि पाण्डवानां धनंजयः।
मुनीनामप्यहं व्यासः कवीनामुशना कविः ॥३७॥
दण्डो दमयतामस्मि नीतिरस्मि जिगीषताम्।



आज प्रदोष मौन नियमाऽनुसार रात को
पारण तथा निवास
अम्बिका-चरण के पास.

मौनं चैवास्मि गुह्यानां ज्ञानं ज्ञानवतामहम् ॥३८॥
यच्चापि सर्वभूतानां बीजं तदहमर्जुन ।
न तदस्ति विना यत्स्यान्मया भूतं चराचरम् ३९
नान्तोऽस्ति मम दिव्यानां विभूतीनां परंतप ।



दोनोसमयभो-तथा निवास पं: आम्बिका
चरण के पास.

एष तूद्देशतः प्रोक्तो विभूतेर्विस्तरो मया ॥४०॥
यद्यद्विभूतिमत्सत्त्वं श्रीमदूर्जितमेव वा ।
तत्तदेवावगच्छ त्वं मम तेजोंऽशसंभवम् ॥४१॥
अथवा बहुनैतेन किं ज्ञातेन तवार्जुन ।



दोनो समय भो. तथा निवास पं. अम्बिका
चरण के पास. यहां पुराने जगह में एक
सन्यासी महात्मा ठहरे हैं वहां गया था.
ये बंगाली हैं. अंग्रेजी के विद्वान मालूम हो
ते हैं. अच्छे हैं परंतु कुछ आडम्बर भी है.

विष्टभ्याहमिदं कृत्स्नमेकांशेन स्थितो जगत् ॥४२॥

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे विभूतियोगो नाम दशमोऽध्यायः ॥१०॥



आज यहां पं. आम्बिकाचरण के पास भोजन करके पैदल 'चायल' गया जंगली राहसे १० मील पडा. यहां ठाकुरद्वारे में ठहरा था. रात्रीभर. यहां पटियालेके राजपण्डितका लडका रहता है. पर वह बम्बई गया है. इसलिये मुलाकात नहीं हुई. पटियालेका राजपण्डित पं. मुकुन्द झा बखशी है. (मैथिल) 'चायल' यह महाराजा पटियालाके स्टेट में है. शिमलेसे भी ऊंची जगह है गर्मी में यहां राजासाहब रहते हैं.

ॐ

अथैकादशोऽध्यायः

अर्जुन उवाच

मदनुग्रहाय परमं गुह्यमध्यात्मसंज्ञितम् ।



सुबः उठकर ११॥ मील पैदल चलकर
'मुण्डा' में पहुंचा यहां )॥ चीनी खाकर
पानी पीया. पीछे यहांके दुकानदार
पं. दीनानाथ ने रोटी खिलाई. रातको भी
इसने रोटी खिलाई. रातभर निवास यहां.
एक ब्रह्मचारी के धूनी पर.

यत्त्वयोक्तं वचस्तेन मोहोऽयं विगतो मम ॥१॥
भवाप्ययौ हि भूतानां श्रुतौ विस्तरशो मया।
त्वत्तः कमलपत्राक्ष माहात्म्यमपि चाव्ययम् ॥२॥
एवमेतद्यथात्थ त्वमात्मानं परमेश्वर।

---



आज सुबः उठकर पैदल "मुण्डा" से 'कुफरी' होकर ठ्योग पहुंचा. कुल १३ मील इकला आज चला. ठ्योग बाजार पहुंचते ही एक दूकानदार सूद (गाजी का) ने भोजन को कहा. हमने स्नानादि करके यहां पक्का भोजन खाया था फिर एक सूद दूकानदार के साथ 'नबीया' में एक महात्मा के दर्शन को गया था. ये महात्मा बंगाली हैं. इनको बड़ी तमीज आये है परमहंस हैं. रात को उस एक सूद की दूकान में सोया था. आज कुफरी में [illegible] भी दान किया था.

यत्त्वयोक्तं वचस्तेन मोहोऽयं विगतो मम ॥१॥
भवाप्ययौ हि भूतानां श्रुतौ विस्तरशो मया।
त्वत्तः कमलपत्राक्ष माहात्म्यमपि चाव्ययम् ॥२॥
एवमेतद्यथात्थ त्वमात्मानं परमेश्वर।

श्रावण शुक्ल २ रवि ] १६ अगस्त [श्रावण ३०

आज सुबः उठकर पैदल "मुण्डा" से 'कुफरी' होकर 'ठ्योग' पहुंचा. कुल १३ मील पैदल आज चला. ठ्योग बाजार पहुंचते ही एक दूकानदार सूद (गर्जी का) ने भोजन को कहा. हमने स्नानादि करके यहां पक्का भोजन ना किया फिर एक सूद दुकानदार के साथ 'नौय' में एक महात्मा के दर्शन को गया था. ये महात्मा बंगाली हैं. इनको बड़ी [illegible] ठाये हैं परमहंस हैं. रात को उस एक सूद की दूकान में सोया था. आज कुफरी में ~) [illegible] दाना लिया था.

द्रष्टुमिच्छामि ते रूपमैश्वरं पुरुषोत्तम ॥३॥
मन्यसे यदि तच्छक्यं मया द्रष्टुमिति प्रभो।
योगेश्वर ततो मे त्वं दर्शयात्मानमव्ययम् ॥४॥
श्रीभगवानुवाच
पश्य मे पार्थ रूपाणि शतशोऽथ सहस्रशः।

श्रावण शुक्ल ४ सोम] १७ अगस्त [ श्रावण ३१

आज सुबः उठकर चला सो पैदल १। बजे नारकण्डा पहुंचा. 'ठ्योग' से नारकण्डा २२ मील है. यहां एक दूकान से ~) का चने दाना खाया था )॥ चने खाये रात भर एक सराय के कमरे में सोया यहां करोडों पिस्सू थे और यहां ठण्ड भी बहुत थी नींद नहीं आयी.
आज रोटी नहीं खाई.

नानाविधानि दिव्यानि नानावर्णाकृतीनि च ॥५॥
पश्यादित्यान्वसून्रुद्रानश्विनौ मरुतस्तथा ।
बहून्यदृष्टपूर्वाणि पश्याश्चर्याणि भारत ॥६॥
इहैकस्थं जगत्कृत्स्नं पश्याद्य सचराचरम् ।



(नागपञ्चमी)

आज सुबः उठकर चला सो पैदल 'नौला' में
१०॥ बजे पहुंचा रास्ते मे -) चाय-चीड़ा ने
लिये थे. 'नौले' मे स्नानादि किया यहां एक
दुर्गा का मन्दिर है. इसके बाहर ले बरामदे मे ठह-
रा. )॥ किसमिस. )॥। मिश्री लेकर खाई.
रातको वहे एक दुकानदार ढाला (रामगड अ-
ल्मोड़ा (ज़ि) [illegible] ब्राह्मणसे रोटी बनाकर खि
लाई. इसने 'सिमौर रियासत में 'क्वौ' में मुझे
देखा था. इसका नाम सरदाराम है इसने पहचा-
न लिया. मैने नहीं पहचाना. रातभर दुकान के एक
चौकी पर सोया था. 'नारकण्डा' से 'नौला' १५
मील है. उतराई बड़ी भारी थी.

मम देहे गुडाकेश यच्चान्यद्द्रष्टुमिच्छसि ॥७॥
न तु मां शक्यसे द्रष्टुमनेनैव स्वचक्षुषा।
दिव्यं ददामि ते चक्षुः पश्य मे योगमैश्वरम् ॥८॥
संजय उवाच
एवमुक्त्वा ततो राजन्महायोगेश्वरो हरिः।



आजसुबः लोलेके आग्रहसे यहां रुका.
लोलेका दामाद और लडकी कलरातको आयी है.
आज दामादकी और ससुरकी बडी लडाई हुई.
बडे मुश्किलसे समझौता हुआ. फिर हमने भी
भोजन यहीं किया. दोनो समय.
रातको मन्दिरमें खुले वराण्डे में सोया था.
आज यहां २।घण्टा खूब वर्षा हुई.

दर्शयामास पार्थाय परमं रूपमैश्वरम् ॥९॥
अनेकवक्त्रनयनमनेकाद्भुतदर्शनम् ।
अनेकदिव्याभरणं दिव्यानेकोद्यतायुधम् ॥१०॥
दिव्यमाल्याम्बरधरं दिव्यगन्धानुलेपनम् ।



आज सुब: से ही वर्षा बडी जोर से शुरू हुई. आज भी दोनो समय भी. जालेके घर सोना मन्दिर मे. यहां आज एक ब्राह्मण ब्रह्मचारी बुड्ढा आया था. इसको दो पैसे दिये थे. रात को इसके पैर रगड दिये सारा शरीर दबा दिया.

सर्वाश्चर्यमयं देवमनन्तं विश्वतोमुखम् ॥११॥
दिवि सूर्यसहस्रस्य भवेद्युगपदुत्थिता।
यदि भाःसदृशी सा स्याद्भासस्तस्य महात्मनः॥
तत्रैकस्थं जगत्कृत्स्नं प्रविभक्तमनेकधा।



आज लाले की जन्मपत्री देखी १५ - और थोडी मि श्री लाले ने दी.
भो. दोनो समय लाले के घर लाले का नाम गोपालदास है:
आज दूसरे दूकानदार लाले के उसके बुलाने से दूकान पर गये थे: यहां से न खाई.
ब्राह्मण ब्रह्मचारी के पैर रगड दिये आज भी.
आज मशीन से बाल कटाये. इस लाले ने ही काट दिये नाई था नहीं.

अपश्यद्देवदेवस्य शरीरे पाण्डवस्तदा ॥१३॥
ततः स विस्मयाविष्टो हृष्टरोमा धनंजयः ।
प्रणम्य शिरसा देवं कृताञ्जलिरभाषत ॥१४॥

अर्जुन उवाच

पश्यामि देवांस्तव देव देहे सर्वांस्तथा भूतविशेष-



आज दोनों समय श्री· जी के पास·
निकस मन्दिर में·

संघान्। ब्रह्माणमीशं कमलासनस्थमृषींश्च सर्वा-
नुरगांश्च दिव्यान् ॥१५॥ अनेकबाहूदरवक्त्रनेत्रं
पश्यामि त्वां सर्वतोऽनन्तरूपम्।नान्तं न मध्यं न
पुनस्तवादिं पश्यामि विश्वेश्वर विश्वरूप ॥१६॥



आज सुबः ५ उठकर रामपुर पैदल १५ मील
चलकर ११ बजे पहुंचा
यहां एक ठाकुरद्वारे में ठहरा. यहां पुजारी
एक बैरागी है. यहां एक परीयाले का बुढा
ब्राह्मण ठहरा था. यह पैसे का मारा है.
बैरागी ने आटा कह दिया. उस ब्राह्मण ने
रोटी बनाई. फिर हम दोनो ने खाई.
यह बैरागी खराब आदमी है. ब्राह्मण
पैसे से बहुत दुखी है. ))) चाय पी दाना.
))) किशमिश खाई. रातभर यहां सोये.

किरीटिनं गदिनं चक्रिणं च तेजोराशिं सर्वतो दीप्तिमन्तम्। पश्यामि त्वां दुर्निरीक्ष्यं समन्ताद्दीप्तानलार्कद्युतिमप्रमेयम्॥१७॥ त्वमक्षरं परमं वेदितव्यं त्वमस्य विश्वस्य परं निधानम्। त्वमव्ययः शाश्वतधर्मगोप्ता सनातनस्त्वं



आज सुबः उठकर चले सो १०॥ मील चलकर 'अटाली' पहुंचा यहां शिव मान्दिर में बैठा था. रास्ते में)॥ (चाय पीदाना)। छोहारा खाया. बटाली में १॥ घंटा बैठा था. यहां का ब्रह्मचारी भो.करके मेले को चला गया था. ताला लगाकर 'बात चीत' कुछ नहीं की. फिर मैं भी उठकर यहां से ११ मील और चलकर 'संरहान' में शाम को पहुंचा. यहां)॥। दूध-)॥ जलेबी खाई. यहां नरसिंह मान्दिर में ठहरा. मन्दिर के पुजारी ने रात को साग रोटी खिलाई. रात को मान्दिर में निवास पुजारी ने एक लोई बिछाने को दी थी.

पुरुषो मतो मे ॥१८॥ अनादिमध्यान्तमनन्तवीर्य-
मनन्तबाहुं शशिसूर्यनेत्रम्। पश्यामि त्वां दीप्त-
हुताशवक्त्रं स्वतेजसा विश्वमिदं तपन्तम्॥१९॥
द्यावापृथिव्योरिदमन्तरं हि व्याप्तं त्वयैकेन दिशश्च



आज प्रदोष. दिनभर मौन.
कुछ सेव एक ब्राह्मण ले आया था वह खाई
एक चावल का दाना खाकर रात को पारण
किया. रातभर नृसिंह मन्दिर में सोया.
यहां सामने भीमाकाली का बड़ा मन्दिर है.
पर बाहरी आदमी को दर्शन की मनाई है.
६ महीने राजा साहब भी शहर का दरबार
यहां रहता है. और ६ महीने रामपुर में.
भीमाकाली की माफी बहुत है. उसका फा
यदा वहीं के लोगों को है. साधु ब्राह्मणों का
इतना सम्मान नहीं है. पुजारी ने एक चाई
बिछाने दी थी. इसका नाम केशवराम है
यह टहलुआ है.

सर्वाः। दृष्ट्वाद्भुतं रूपमुग्रं तवेदं लोकत्रयं प्रव्यथितं महात्मन् ।२०। अमी हि त्वां सुरसंघा विशन्ति केचिद्भीताः प्राञ्जलयो गृणन्ति। स्वस्तीत्युक्त्वा महर्षिसिद्धसंघाः स्तुवन्ति त्वां स्तुतिभिः



आज सुबह ८ बजे सागरोटी खाई. दोपहर १०॥ बजे दाल भात खाया रात को सागरोटी खाई. आज यहां ठहरा हुआ उदासी साधु और एक गढवाली पण्डित मिलने आये थे. यह उदासी क्यारकोटी में मिला था वहां इसकी दाल नहीं गली थी. यहां यह परमहंस बनाकर बड़ा विद्वान कहलाकर अपना आडम्बर मचा रखा है. पं. चन्द्रमणि भट्ट यहां आया था. यह राजपण्डित है. इसने सिर्फ 'यहां कहां से आये? कब आये? कहां से आये? कौन हो? राजा साहब के पास रिपोर्ट की' इतना एकदम पूछा. जरा रुखाई भरी बात थी.

पुष्कलाभिः २१ रुद्रादित्या वसवो ये च साध्या विश्वेऽश्विनौ मरुतश्चोष्मपाश्च । गन्धर्वयक्षासुर-सिद्धसंघा वीक्षन्ते त्वां विस्मिताश्चैव सर्वे २२ रूपं महत्ते बहुवक्त्रनेत्रं महाबाहो बहुबाहूरुपादम् ।

श्रावण शुक्ल १४ गुरु ] २७ अगस्त [ भाद्रपद १०

( श्रावणीकर्म )

आज ज़रा तबियत ठीक नहीं थी. दोपहर भो. न्रसिंह मन्दिर में रतकोट वाली पण्डितके पास धर्मशालेमें उदासी साधु यहीं रहता है. इसको शास्त्रार्थकी बहुत इच्छा रहती है. शुष्क वैयाकरण और तार्किक है. अपने को बड़ा भारी समझता है. अस्तु. न्यायका (पंचलक्षणी माथुरीका क्रोड बलदेवीपास लिख रक्खी है. पारिभाषिक गुणका क्रोड भी रक्खा है.

बहूदरं बहुदंष्ट्राकरालं दृष्ट्वा लोकाः प्रव्यथितास्तथाहम् ॥ नभःस्पृशं दीप्तमनेकवर्णं व्यात्ताननं दीप्तविशालनेत्रम् । दृष्ट्वा हि त्वां प्रव्यथितान्तरात्मा धृतिं न विन्दामि शमं च विष्णो ॥२४॥



(रक्षाबन्धन)

आज दोनो समय गढवाली पं. लीलानन्द
के पास भोजन
निवास नृसिंह मन्दिर में. आज राजा की
तरफ से थोडा आटा गुड और 1 रु. आया
था हमने लौटा दिया.

दंष्ट्राकरालानि च ते मुखानि दृष्ट्वैव कालानल-
सन्निभानि। दिशो न जाने न लभे च शर्म प्रसीद
देवेश जगन्निवास ।२५। अमी च त्वां धृतराष्ट्रस्य
पुत्राः सर्वे सहैवावनिपालसंघैः । भीष्मो द्रोणः



आज सुबः उठकर पैदल चलकर 'बटाली'
शिव मन्दिर में पहुंचा यहां स्नानादिकर
के रोटी खाई. ऐसे टिकड कभी नहीं खाये थे.
आज पहिले पहिल खाये. प्रसङ्ग है प्रारब्ध
है. नमक मर्च डालकर मोटे इतने बनाये थे
कि मुझसे एक ही खाना मुश्किल होगया.
अस्तु. यहां के ब्रह्मचारी जी ने बात भी नहीं की
टिकड एक बैरागी ने बनाये थे. बटाली से
'सरहान' १० मील है. यहां से पैदल चलकर
शाम को रामपुर पहुंचा. यहां श्मशान के पास
एक जगह में रात भर सोया था. ।॥ (आय.
चीदाने 'जौरै' में लिये थे.

सूतपुत्रस्तथासौ सहास्मदीयैरपि योधमुख्यैः२६
वक्त्राणि ते त्वरमाणा विशन्ति दंष्ट्रा-
करालानि भयानकानि । केचिद्विलग्ना दशना-
न्तरेषु संदृश्यन्ते चूर्णितैरुत्तमाङ्गैः ॥२७॥ यथा



आजसुबः उठकर रामपुर से सतलुजपार करके
पैदल ५।। मील चढाई चढकर एक दूकानमें
)।।में श्रीरी काली मिर्च मिश्री खाकर यहां
आधसेर लस्सी = धाधपीकर। फिर २ मील
२ फर्लांग चलकर एक राणीकारायपुर जि.
अम्बालाके बानियेके दूकान पर पहुंचा. यहां
अपने हाथ खिचड़ी बना खाई. फिर थोड़ा
विश्राम करके फिर यहां से पैदल ७ मील
३ फर्लांग चलकर 'सिरहान' पड़ाव पहुंचा
यहां एक मन्दिर में (मैदान में) पड़ाव पर ठहरा.
इस रास्ते में ३।। मील खड़ी चढ़ाई चढ़-
नी पड़ती है. रात्री में बड़ी जोर से वर्षा हुई.
बैठकर रात काटी.

नदीनां बहवोऽम्बुवेगाःसमुद्रमेवाभिमुखा द्रवन्ति
तथा तवामी नरलोकवीरा विशन्ति वक्त्राण्य-
भिविज्वलन्ति ॥२८॥ यथा प्रदीप्तं ज्वलनं पतङ्गा
विशन्ति नाशाय समृद्धवेगाः। तथैव नाशाय



आज सुबः उठकर चला सो पैदल २ बजे दोपहर
को 'बनजार' पहुंचा. 'सिरहान से बनजार' १९ मील है
४ मील सख्त चढ़ाई है और ४ मील उतराई है.
रास्ते में बड़े मुश्किल से एक जगह ))॥ छाहारे ) खिड़-
डी मिली सो खाई बनजार में आकर ))। मिश्री काली
मिर्च के साथ खाई. यह बड़ा गांव है. यहां तह-
सील है. यहां से रामपुर ३४ मील है. कुल्लू ३२ मील
सिमला ९० मील है (कूरी के रास्ते से.
यहां पर स्नानादि करके ))॥ आलू धोले पकाये
ए.)॥ बर्फी ले खाई. रात भर निवास यहां नये
ठाकुरद्वारे के बरामदे में.

आज सुब: उठकर बनजार से चला सो ९॥ बजे
लर्जी पहुंचा यह जगह बनजार से ११ मील
५ फर्लांग है यहां स्नानादि करके होटल में
आलू की पत ली साग और ३ रोटी खाई.-)॥
दिये.)॥ मिश्री )। दाना चीनी. फिर यहां-
से शाम को औट में पहुंचा यहां कश्मीर में
रघुनाथ मन्दिर में मिला हुआ बुढा ब्राह्मण सीता
राम बैरागी मिला इसके साथ एक नाथ
भी था इसके आग्रह से मैं औट में रूक
रक श्री के दूकान में रात भर रहा. खाया कुछ
नही.

नमोऽस्तु ते देववर प्रसीद । विज्ञातुमिच्छामि भवन्तमाद्यं न हि प्रजानामि तव प्रवृत्तिम् ॥३१॥

श्रीभगवानुवाच

कालोऽस्मि लोकक्षयकृत्प्रवृद्धो लोकान्समा-



सुबह उठकर चला सो १२ मील चलकर भुवन्तारे पहुंचा. यहां ॥ मिश्री लेकर नाथ, बैरागी, और मैने खा ई. यहां से बैरागीनाथ आगे चले गये. मै भी थोडी देर बाद चला सो रास्ते में ॥ चने । ~~मि~~ मिश्री लेकर खाई. फिर सूर्यास्त समय एक ब्रह्मचारी के स्थान पर पहुंचे यहां सभी साधु इकट्ठा हुए थे. नाथने रोटी पकाई हमने भी १॥ रोटी और दाल खाई. यह जगह भुवन्तार से १० मील है. आज २२ मील चला.

हर्तुमिह प्रवृत्तः । ऋतेऽपि त्वां न भविष्यन्ति सर्वे येऽवस्थिताः प्रत्यनीकेषु योधाः ॥ तस्मात्त्वमुत्तिष्ठ यशो लभस्व जित्वा शत्रून्भुङ्क्ष्व राज्यं समृद्धम् । मयैवैते निहताः पूर्वमेव निमित्तमात्रं



आज सुबः उठकर यहांसे चला सो अकेला ११ मील चलकर 'मनीकरन' पहुंचा यहां एक बुढ़ी पण्डाके मकानमें मैं ठहरा.
)॥ मिश्री लाकर खाई. फिर बुढ़ीने दाल भात पकाकर खिलाया १ पाव चावल )॥ १ छटाक दाल )।≡ की हुई. बुढ़ीने पैसे नहीं लिये. फिर नाथ और बैरागी मिले इनको -) दिये थे. शामको मैं मैं नादेवी के मन्दिरमें आया. रातको इसी मन्दिरमें निवास. नाथ और बैरागी भी यहीं सोये थे.

भव सव्यसाचिन् ॥३३॥ द्रोणं च भीष्मं च जयद्रथं च कर्णं तथान्यानपि योधवीरान्। मया हतांस्त्वं जहि मा व्यथिष्ठा युध्यस्व जेतासि रणे सपत्नान् ॥३४॥

भाद्रपद कृष्ण ७ शुक्र] ४ सितम्बर [ भाद्रपद १८

(जन्माष्टमी व्रत)

आज उपवास जन्माष्टमी विभिन्न.
रातको =) कीसेव लाकर बैरागी, नाथ, और
मैने खाई. निवास इसी मन्दिरमें.

संजय उवाच

एतच्छ्रुत्वा वचनं केशवस्य कृताञ्जलिर्वेपमानः किरीटी। नमस्कृत्वा भूय एवाह कृष्णं सगद्गदं भीतभीतः प्रणम्य ॥३५॥

---



(जन्माष्टमी व्रत)

))। भिक्षी रना ई. ))। आयची दयारखाया.
सुब. शौचादि करके 'माणिकर्णी' तपकुण्ड में स्नान
किया. नाथ और बैरागी चले गये. मैं बुढ़ी
माई के कहने से उसके घर आया. आज भी.
बुढ़ी के घर. यह बुढ़ी कान्यकुब्ज ब्राह्मण
कानपुर की रहने वाली है. ))। ५. भि.ली.
आज भोजन के बाद बुखार आया था. फिर
यहीं सोया सारा दिन और सारी रात बेहोश
पड़ा था. बुढ़ी ने ओढ़ना बिछौना कर
दिया था. रात को खाना पीना कुछ नहीं.

अर्जुन उवाच

स्थाने हृषीकेश तव प्रकीर्त्या जगत्प्रहृष्यत्यनुरज्यते च। रक्षांसि भीतानि दिशो द्रवन्ति सर्वे नमस्यन्ति च सिद्धसंघाः ।३६। कस्माच्च ते न नमेरन्महात्मन्



आज सुबः उठकर शौचादि किया.
स्नान नही किया. बुद्धी माईने खिचड़ी बना
ई थी सो खाई. ) ॥ सेव खा खाई. फिर यहां
से चलकर ७ मील पर 'जरी' पर ठहरा रातभर
यहां निवास सरायमें. यहां बुड्ढा बैरागी फिर
मिला. रात को कुछ नही खाया.

गरीयसे ब्रह्मणोऽप्यादिकर्त्रे । अनन्त देवेश जगन्निवास त्वमक्षरं सदसत्तत्परं यत् ॥३७॥ त्वमादिदेवः पुरुषः पुराणस्त्वमस्य विश्वस्य परं निधानम् वेत्तासि वेद्यं च परं च धाम त्वया ततं विश्वमनन्त-



आज सुब: उठकर शौच स्नानादि करके
७।। चने चाय पी दाने खाकर पानी पीकर ३ मील
चलकर एक ब्रजवासी ब्रह्मचारी ब्राह्मण
के डेरे पहुंचा. यहां एक टिक्कड़ रखा था वह
खाकर पानी पीकर बैठा था ११ बजे ठंड लग-
ना शुरू हुआ। फिर बुखार जोर का आया.
६।। बजे शाम को उतरा. फिर कुछ नही खाया.
ब्रह्मचारी किसी गांव में चला गया था. मैं
रात भर यहां अकेला पड़ा रहा.

रूप ॥३८॥ वायुर्यमोऽग्निर्वरुणः शशाङ्कः प्रजा-
पतिस्त्वं प्रपितामहश्च । नमो नमस्तेऽस्तु सहस्र-
कृत्वः पुनश्च भूयोऽपि नमो नमस्ते ॥३६॥ नमः
पुरस्तादथ पृष्ठतस्ते नमोऽस्तु ते सर्वत एव सर्व ।



सुबः उठकर शौचादि करके चला सो आधा मील पर एक हट्टी पर ))। मिश्री ले खाई। फिर चलकर 'भुवन्तर' में हलवाई की दुकान से -)। जलेबी और ))॥ दूध लेकर क्षुधा शमन किया। बुखार आज भी कुछ मालूम हुआ. फिर मन्दिर के पास चौतरे पर पडे रहे. ब्रह्मचारी की कुटी से 'भुवन्तर' १० मील है. फिर -) दही ))॥ खण्ड खाई. यहां से फिर ४ बजे शाम चला सो ८ मील चलकर कुल्लू पहुंचा. यहां एक मन्दिर में एक साधु के धूनी पर ठहरा. रास्ते में 'कोटी स्टेट' का कुंवर भरतसिंग मिला. वह अपने सुसराल चलने को कहता था पर मैं नहीं गया. रात भर यहां निवास. बुखार आज दिन भर ही था.

अनन्तवीर्यामितविक्रमस्त्वं सर्वं समाप्नोषि ततो-
ऽसि सर्वः ॥४०॥सखेति मत्वा प्रसभं यदुक्तं हे कृष्ण
हे यादव हे सखेति।अजानता महिमानं तवेदं मया
प्रमादात्प्रणयेन वापि ॥४१॥ यच्चावहासार्थमसत्-



आज प्रदोष. मौन. नियमाऽनुसार पारण कि
धराक भर खाया. -) चावल -) दूध ) ।। ची
ी. आज बुखार इतना जोर से आया
जिसकी हद नहीं. प्राण केवल २ मिनट के कृप
से ही बचे. रातभर यहीं निवास. लोग निर्द
होगये हैं. समय बहुत बुरा आया है.
आज एक बड़ा दैवी चमत्कार हुआ—
आज जब प्राणान्त करने का जैसे बहुत जोर का
बुखार चढा था मैं बेहोश था उस समय प्राण
निकलना चाहते थे उतने में मैं तीन पुरुष
मेरे दायीं ओर से आये और मेरे पास खड़े
गये. मै डर गया. यद्यपि वे सूरत शकल से
भयानक नहीं थे. उतने में थोड़ी देर के बा
ऊपर की ओर से हाथ में त्रिशूल लिया हुआ
बड़ी लम्बी जटा वाला और बड़ी लम्बी क
एक आदमी बांयी ओर ही खड़ा होगया
उसने महामृत्युञ्जय मन्त्र का उपदेश दिया
और कहा कि खूब जप करो. मैं खड़ा हूं. इस

कृतोऽसि विहारशय्यासनभोजनेषु। एकोऽथवा-
प्यच्युत तत्समक्षं तत्क्षामये त्वामहमप्रमेयम् ४२
पितासि लोकस्य चराचरस्य त्वमस्य पूज्यश्च गुरु-
र्गरीयान्। न त्वत्समोऽस्त्यभ्यधिकः कुतोऽन्यो



आज सुबः उठकर यहां से पैदल चलकर
भुवनार आया. रास्ते में -) मुनक्का लेकर
खाया. फिर भुवनार में -)॥ बर्फी )॥।
दही खाया. फिर यहां से चलकर शाम
को 'औट' में पहुंचा. आज १८ मील
६ फर्लांग चला. पैरों में जूती भी नहीं है
यहां खत्री की दुकान में ऊपर के तबके में
रातभर निवास. रात को यहां २॥
फुलके खाये.

रा कोई इस समय उपाय नहीं है. मैंने अपना शुरू
किया. एक पांव धाती पर और दूसरा उस स्थान पर रहा.
घण्टों मैंने मात्र सजप किया होगा. फिर वेतीनो पुरुष
कहीं चले गये और थोड़ी देर बाद बुखार उतर गया.

लोकत्रयेऽप्यप्रतिमप्रभाव ॥४३॥ तस्मात्प्रणम्य प्रणिधाय कायं प्रसादये त्वामहमीशमीड्यम् । पितेव पुत्रस्य सखेव सख्युः प्रियः प्रियायार्हसि देव सोढुम् ४४ अदृष्टपूर्वं हृषितोऽस्मि दृष्ट्वा भयेन





आज सुबः उठकर यहां से पैदल चलकर
१३ मील पर पडाव पर एक दूकानदार के
उपर के छत पर आसन लगाकर पडा था.
आज ठंढ नहीं आयी पर बुखार आया.
शाम को ५ बजे बुखार उतर गया. इस
पडाव का नाम 'विडो' है. यहां रात
को रोटी खाई -)॥ रोटी -) दूध.
)॥ मीठा रात भर यहां दूकान में सोया.
बाद त्रिशूलधारी भी कहीं चला गया.

च प्रव्यथितं मनो मे। तदेव मे दर्शय देव रूपं प्रसीद देवेश जगन्निवास ॥४५॥ किरीटिनं गदिनं चक्रहस्तमिच्छामि त्वां द्रष्टुमहं तथैव। तेनैव रूपेण चतुर्भुजेन सहस्रबाहो भव विश्वमूर्ते ४६

भाद्रपद कृष्ण ३० शनि]१२ सितम्बर [भाद्रपद २६

आज सुबः यहां शौचादि करके चला सो
८।। मीलपर एक ब्राह्मणकी दूकानपर
रोटी खाई. -) रोटी )। पेडा )।। छोहारा
)। खण्ड. फिर यहां विश्राम करके ३ मील
चलकर 'मण्डी' शहर में पहुंचा.
यहां भूतनाथके मन्दिरमें पडा था.
यहां पानीकी तकलीफ होनेसे पारकी
मण्डीमें एक मन्दिरमे रातभर सोया.

श्रीभगवानुवाच

मया प्रसन्नेन तवार्जुनेदं रूपं परं दर्शितमात्मयोगात् । तेजोमयं विश्वमनन्तमाद्यं यन्मे त्वदन्येन न दृष्टपूर्वम् ॥४७॥ न वेदयज्ञाध्ययनैर्न दानैर्न च

भाद्रपद शुक्ल १ रवि ] १३ सितम्बर [ भाद्रपद २७

आज सुब: उठकर पैदल ११ मील चलकर
एक दूकान पर बैठा. उस समय बुखार चढ़ रहा
था. दूकानदार ने पानी तक नहीं दिया.
इधर के लोग बहुत ही निर्दयी हो गये हैं.
यहां से चलकर पक्के बावली पर बैठा था.
फिर सोया था. यहां बुखार पूरा चढ़ गया.
फिर आगे एक दूकान पर )।।। दूध मोठा पी
या. फिर आगे )।। पेड़े )।। छोहारे )।। दूध
खा पीकर यहां से पैदल चलकर शाम
को ओरला में पहुंचा. यहां एक बन्द दूका
न के बाहर के पासे रात भर सोया था. यह
जगह मण्डी से २३ मील ५ फर्लांग है. यहां
आधा सेर दूध -)। मीठा )। पीया.

क्रियाभिर्न तपोभिरुग्रैः। एवंरूपः शक्य अहं नृलोके द्रष्टुं त्वदन्येन कुरुप्रवीर ॥४८॥ मा ते व्यथा मा च विमूढभावो दृष्ट्वा रूपं घोरमीदृङ्ममेदम्। व्यपेतभीः प्रीतमनाः पुनस्त्वं तदेव मे रूपमिदं प्रपश्य ॥४९॥



आज सुबः उठकर चला ही था कि वर्षा शुरू होगयी। फिर यहांसे ३ फर्लांग पर एक दूकानमें बैठ गया. फिर यहांसे ओगिन्दर नगर पहुंचा यहां एक हलवाई के दूकानमें -)॥ जलेबी )॥। दूध लिया. खापीकर उस दूकानमें एक मञ्जेपर ३॥ बजे तक पडा रहा. आज भी थोडा बुखार आया था. फिर ४ बजे यहांसे पैदल चलकर रातको करीब ८ बजे 'बैजनाथ' पहुंचा यहां तारापुरमें धर्मशालेमें ठहरा यहां (तैलङ्ग ब्राह्मण रेलवे इञ्जिनियर दफ्तरमें नौकर) एक ठहरे मुसाफिर ब्राह्मणके पास रातको भोजन किया. यही रातभर सोया. यहांके साधु बेअन्न ने हमको पहचाना नही. आज २६ मील चला.

संजय उवाच

इत्यर्जुनं वासुदेवस्तथोक्त्वा स्वकं रूपं दर्शयामास भूयः । आश्वासयामास च भीतमेनं भूत्वा पुनः सौम्यवपुर्महात्मा ॥५०॥

---



(गणेश चतुर्थी)

आज सुबः शौचादि करके विनोदा नदीमें
स्नान किया। फिर डेरे पर आनेपर यहांके पं.
दुर्गाप्रसादने देखा और पहचान भी लिया.
आज भी दो पहर भो. उसी ब्राह्मणके पास
किया. फिर वहांसे आसन उठाकर पं. दुर्गाप्रसा-
दके आग्रहसे दूसरे कुटियामें लगाया.
आज बुखार नहीं आया पर सिर भारी रहा.
और नातकती बहुत होगयी है. रातको
पं. दुर्गाप्रसादके घरसे इसके भाई नन्द (महेशा
नन्द) ने रोटी साग लाई वह खाई.
रातभर यहीं सोया.

अर्जुन उवाच

दृष्ट्वेदं मानुषं रूपं तव सौम्यं जनार्दन।
इदानीमस्मि संवृत्तः सचेताः प्रकृतिं गतः ॥५१॥

श्रीभगवानुवाच

सुदुर्दर्शमिदं रूपं दृष्टवानसि यन्मम।

भाद्रपद शुक्ल ५ बुध ] १६ सितम्बर [ भाद्रपद ३०

( ऋषिपूजनम् )

भो. यहीं दोनों समय महेशानन्द के पास
और निवास भी यहीं
आज बैजनाथ दर्शन)। पठाया
)॥ = दूध = मीठा.

देवा अप्यस्य रूपस्य नित्यं दर्शनकाङ्क्षिणः॥५२॥
नाहं वेदैर्न तपसा न दानेन न चेज्यया।
शक्य एवंविधो द्रष्टुं दृष्टवानसि मां यथा॥५३॥
भक्त्या त्वनन्यया शक्य अहमेवंविधोऽर्जुन।
ज्ञातुं द्रष्टुं च तत्त्वेन प्रवेष्टुं च परंतप॥५४॥

भाद्रपद शुक्ल ६ गुरु ] १७ सितम्बर [ भाद्रपद ३१

आज दोपहर पं. दुर्गाप्रसाद के घर भो.
रात को महेशानन्द ने रोटी खाई थी. सो खाई.
रात भर निवास यहीं. आज सङ्क्रान्ति हुई.
कन्यासङ्क्रान्ति.

मत्कर्मकृन्मत्परमो मद्भक्तः सङ्गवर्जितः ।
निर्वैरः सर्वभूतेषु यः स मामेति पाण्डव ॥५५॥

ॐतत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे विश्वरूपदर्शनयोगो नामैकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

---

भाद्रपद शुक्ल ७ शुक्र ] १८ सितम्बर [बं० आश्विन १

आज दोनो समय भो. यहीं तथा रात्रि
निवास भी. आज एक ब्रह्मचारी ने घने
स्वामी दी और दूधको [illegible] ।। भीड़ ये.

ॐ

द्वादशोऽध्यायः

अर्जुन उवाच

एवं सततयुक्ता ये भक्तास्त्वां पर्युपासते।
ये चाप्यक्षरमव्यक्तं तेषां के योगवित्तमाः ॥१॥

भाद्रपद शुक्ल ८ शनि ] १९ सितम्बर [ आश्विन २

दोपहर शान्तिकृष्ण अन्नक्षेत्रमें भो. रातको पं. दुर्गाप्रसादके घर. रातभर निवासयहीं. आज सुबः ‑)। दूध )। मीठा शामको भी ‑)। दूध )। मीठा सुबः )॥ जलेबी भी पैसे और रद्दवी ब्रह्मचारीनोदिये.
पं. माधवप्रसाद (वजीर) कलको भोजन का निमन्त्रण देगया इसके बापदादे मण्डुमें तथा. और भी किसी स्टेटमें वजीरथे. यह तो कहींकुछ नहीं है. बाबा मुंगाजी. गुरुदासपुरके हाईस्कूलके पण्डित से जानपहचान हुई. यह पंजाबका शास्त्री है. त. पालमपुर जि. कांगड़ा जिला गुरुकारहनेवाला है.

श्रीभगवानुवाच

मय्यावेश्य मनो ये मां नित्ययुक्ता उपासते।
श्रद्धया परयोपेतास्ते मे युक्ततमा मताः ॥२॥
ये त्वक्षरमनिर्देश्यमव्यक्तं पर्युपासते।
सर्वत्रगमचिन्त्यं च कूटस्थमचलं ध्रुवम् ॥३॥
संनियम्येन्द्रियग्रामं सर्वत्र समबुद्धयः।

---

भाद्रपद शुक्ल ६ रवि ] २० सितम्बर [ आश्विन ३

आज दोपहर भो. पुजारी महेशानन्द के पास
पं. माधोप्रसाद के घरसे कोई बुलाने नहीं आया
इसलिये. मैं गया नहीं. दूध -)। )। मीठा
)।। जलेबी खाई. दवा और ≡)
ब्रह्मचारीने दिये थे. रात्रीमें रोटी यहीं
खाई महेशानन्दने घरसे लाई थी.
रात्रींमें निवास यहीं.

ते प्राप्नुवन्ति मामेव सर्वभूतहिते रताः ॥४॥
क्लेशोऽधिकतरस्तेषामव्यक्तासक्तचेतसाम् ।
अव्यक्ता हि गतिर्दुःखं देहवद्भिरवाप्यते ॥५॥
ये तु सर्वाणि कर्माणि मयि संन्यस्य मत्पराः ।
अनन्येनैव योगेन मां ध्यायन्त उपासते ॥६॥

---

भाद्रपद शुक्ल १० सोम ] २१ सितम्बर [आश्विन ४

आज भी. महेशानन्द के पास -)बकी
)॥ जो है लीखा है. रात को रोटी महेशानन्द
ले आया था. आज स्वामी तारानन्द यहां आये
थे शिमले में। मिले थे. स्वामी जी से रात को
११ बजे तक बातचीत हुई.

तेषामहं समुद्धर्ता मृत्युसंसारसागरात् ।
भवामि नचिरात्पार्थ मय्यावेशितचेतसाम् ॥७॥
मय्येव मन आधत्स्व मयि बुद्धिं निवेशय ।
निवसिष्यसि मय्येव अत ऊर्ध्वं न संशयः ॥८॥
अथ चित्तं समाधातुं न शक्नोषि मयि स्थिरम् ।

भाद्रपद शुक्ल ११ मंगल ] २२ सितम्बर [आश्विन ६

आज भो. दो पहर तारापुरमें. आज पुजारीको आशौच आया इसलिये तारा भगवतीकी और केदारनाथ शम्भुकी पूजा शामको आर्ती आदि हमने किया तथा रसोई भी हमने ही की ५ आद मियो की. आज भी स्वामीजीसे बातचीत बहुत हुई रातमें क्षेत्रमें फुलके खाये रातभर । निकास यही.

अभ्यासयोगेन ततो मामिच्छाप्तुं धनंजय ॥९॥
अभ्यासेऽप्यसमर्थोऽसि मत्कर्मपरमो भव।
मदर्थमपि कर्माणि कुर्वन्सिद्धिमवाप्स्यसि ॥१०॥
अथैतदप्यशक्तोऽसि कर्तुं मद्योगमाश्रितः।
सर्वकर्मफलत्यागं ततः कुरु यतात्मवान् ॥११॥

---

भाद्रपद शुक्ल १२ बुध ] २३ सितम्बर [ आश्विन ६

(वामन जयन्ती)

आज प्रो. व के के पास पंजाबी खत्री पुराने कश्मीर के दिवान खानदानवाले के यहां स्वामी तारानन्द के साथ गया था वहीं रोटी खाई. इस खत्री ने १रु. किराये के लिये दिया. फिर बैजनाथ स्टेशन पर आकर वहासे ।॥) देकर नगरोटा का टिकट लिया और १२ बजकर १५ मिनेट पर गाडी में सवार हो २॥ बजे नगरोटा पहुंचा. आज सुबः ताराभगवती की तथा केदारनाथ की पूजा मैंने ही की थी. नगरोटे में एक दूकान में २ घंटे बैठा था. यहां =)॥ बर्फी )॥ दही ले कर खाया. )॥ = दूध पी कर शाम को पं. बाहरीदत्त जी अवस्थी के घर शेरा ठाणा में पहुंचा. रात को यहां रोटी खाई तथा [illegible]

श्रेयो हि ज्ञानमभ्यासाज्ज्ञानाद्ध्यानं विशिष्यते।
ध्यानात्कर्मफलत्यागस्त्यागाच्छान्तिरनन्तरम्
अद्वेष्टा सर्वभूतानां मैत्रः करुण एव च।
निर्ममो निरहंकारः समदुःखसुखः क्षमी ॥१३॥
संतुष्टः सततं योगी यतात्मा दृढनिश्चयः।

---

भाद्रपद शुक्ल १३ गुरु ] २४ सितम्बर [आश्विन ७

आजप्रदोष. मौन नियमाऽनुसा
रात्रौपारण और निवास पं. बदरी
दत्त के घर.

मय्यर्पितमनोबुद्धिर्यो मद्भक्तः स मे प्रियः ॥१४॥
यस्मान्नोद्विजते लोको लोकान्नोद्विजते च यः।
हर्षामर्षभयोद्वेगैर्मुक्तो यः स च मे प्रियः ॥१५॥
अनपेक्षः शुचिर्दक्ष उदासीनो गतव्यथः।
सर्वारम्भपरित्यागी यो मद्भक्तः स मे प्रियः॥१६॥

---



(अनन्त चतुर्दशी)

आज दोपहर भो. बद. घर.
शामको पाठियार गये साथ पं. बदरीदत्त
भी थे. यहां पं. पद्मनाभके पास रामा
साव सदके यहां रातको रोटी खाई.
तथा निवास पं. पद्मनाभके घर रात
भर.

यो न हृष्यति न द्वेष्टि न शोचति न काङ्क्षति।
शुभाशुभपरित्यागी भक्तिमान्यः स मे प्रियः॥१७॥
समः शत्रौ च मित्रे च तथा मानापमानयोः।
शीतोष्णसुखदुःखेषु समः सङ्गविवर्जितः॥१८॥
तुल्यनिन्दास्तुतिर्मौनी संतुष्टो येन केनचित्।



( श्राद्धारम्भ ) ( चंद्रग्रहणम् )

आज सुबः उठकर चामुण्डा गये साथ
पं. पद्मनाभ तथा पं. बदरीदत्त थे. यहां
भो[जन] किया. इन्हीके पास. । फिर पद्मनाभ अप
ने घर पठियार चला गया. पं. बदरीदत्त भी
अपने घर शेराठाणा चला गया. हम यहीं
चामुण्डा में रहे. पद्मनाभ तो रात को फिर यहां
आ गया था. रात को चन्द्रग्रहण हुआ पर
बादल के कारण देखने में नहीं आया. अन्दाजे
से 'बाणगङ्गा' मे स्नान किया. रात्री मे यहां
एक कुमंइयाति बाऊ ब्राह्मण आया था इस
से [illegible]भ परिचय हुआ. यह बैरागी करता है
[illegible]वि नाहिल है. ३५ वर्ष की इसकी उमर है
[illegible]ता बहुत है. पर अच्छा है.)। चामुण्डा को

अनिकेतः स्थिरमतिर्भक्तिमान्मे प्रियो नरः॥ १६॥
ये तु धर्म्यामृतमिदं यथोक्तं पर्युपासते।
श्रद्दधाना मत्परमा भक्तास्तेऽतीव मे प्रियाः॥२०॥
ॐतत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां
योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे भक्तियोगो
नाम द्वादशोऽध्यायः ॥१२॥

---



आज सुबः ग्रहण छूटने का स्नान तथा रोज का स्नान एकत्र ही किया. ) ।।। ब्राह्मणों को दक्षिणा दिया फिर सन्ध्यादि करके उस वैद्य के आग्रह से और उसके साथ के राजपुर के सूद किशनदास के आग्रह से 'जिदरांगल' गये. यहां 'सहदेव' सूद के घर गये दोनों समय यहां भोजन किया. इसका हमारा पहिले से ही परिचय था. आज पं. पद्मनाभ की मनीषा अपने घर ले जाने की नहीं सी देखने में आई. वैद्य का नाम "ईश्वरदास" है. वृष्टी के कारण आज यहीं रहना पड़ा. रात्रि निवास यहीं. दोपहर रसोई इसी के घर ने बनाई थी.

ॐ

## त्रयोदशोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

इदं शरीरं कौन्तेय क्षेत्रमित्यभिधीयते ।
एतद्यो वेत्ति तं प्राहुः क्षेत्रज्ञ इति तद्विदः ॥१॥



आज सुबः उठकर वर्षा में ही लोई ओढ
कर २॥ मील चलकर 'तंगलोटी' पहुंचा.
यहां गोपा पण्डित के घर गया. कुम्हैया वैद्य
लीलाधर और किशनदास सूद आ के गये.
मैं बिलकुल भीग गया था. तंगलोटी में शौचादि
स्नानादि किया. दोनों समय भो. तथा रात्री
में निवास यहीं. वर्षा की झड़ी लगी रही.
पं. कृपाराम पुरोहित कुई मिलने आये थे.

क्षेत्रज्ञं चापि मां विद्धि सर्वक्षेत्रेषु भारत।
क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोर्ज्ञानं यत्तज्ज्ञानं मतं मम ॥२॥
तत्क्षेत्रं यच्च यादृक्च यद्विकारि यतश्च यत्।
स च यो यत्प्रभावश्च तत्समासेन मे शृणु ॥३॥
ऋषिभिर्बहुधा गीतं छन्दोभिर्विविधैः पृथक्।

---



आज सुब: उठकर शौच स्नानादि करके यहीं (गोपाल पण्डित के घर) दोनों समय भो. तथा निवास. तबियत आज खराब होगयी थी. रातको शुण्ठी का काढ़ा पीया था.

ब्रह्मसूत्रपदैश्चैव हेतुमद्भिर्विनिश्चितैः ॥४॥
महाभूतान्यहंकारो बुद्धिरव्यक्तमेव च ।
इन्द्रियाणि दशैकं च पञ्च चेन्द्रियगोचराः ॥५॥
इच्छा द्वेषः सुखं दुःखं संघातश्चेतना धृतिः ।
एतत्क्षेत्रं समासेन सविकारमुदाहृतम् ॥६॥

---



आजसुबः उठकर शेरा ठाणा पं. बदरी दत्त के
घर २॥ मील चलकर पहुंचा चलते समय
१ धोती एक अंगोछा ॥) जनेऊ पं. गोपाराम ने दिया. दोनासमय भो. तथा निवास
पं बदरीदत्त के घर. शाम को यहां कुमैया
वैद्य लीलाधर तिवाड़ी भी आया. यह
भी रात भर रहा.

अमानित्वमदम्भित्वमहिंसा क्षान्तिरार्जवम् ।
आचार्योपासनं शौचं स्थैर्यमात्मविनिग्रहः ॥७॥
इन्द्रियार्थेषु वैराग्यमनहंकार एव च ।
जन्ममृत्युजराव्याधिदुःखदोषानुदर्शनम् ॥८॥
असक्तिरनभिष्वङ्गः पुत्रदारगृहादिषु ।



आज सुबः शौचादि कर यहीं बछोरु खाये फिर गौरी के घर भोजन को जाना पापरं तु आज फिर बुखार आया. फिर रात्री को भी कुछ नहीं खाया कुमैया वैद्य आज यहीं रहा.

नित्यं च समचित्तत्वमिष्टानिष्टोपपत्तिषु ॥९॥
मयि चानन्ययोगेन भक्तिरव्यभिचारिणी ।
विविक्तदेशसेवित्वमरतिर्जनसंसदि ॥१०॥
अध्यात्मज्ञाननित्यत्वं तत्त्वज्ञानार्थदर्शनम् ।
एतज्ज्ञानमिति प्रोक्तमज्ञानं यदतोऽन्यथा ॥११॥

---

आश्विन कृष्ण ५ शुक्र ] २ अक्टूबर [ आश्विन १५

आज कुमैयावैधपठियार सुबेरे ही चला गया
दोनो समय भो. यहीं निवास भी यहीं

ज्ञेयं यत्तत्प्रवक्ष्यामि यज्ज्ञात्वामृतमश्नुते ।
अनादिमत्परं ब्रह्म न सत्तन्नासदुच्यते ॥१२॥
सर्वतःपाणिपादं तत्सर्वतोऽक्षिशिरोमुखम् ।
सर्वतःश्रुतिमल्लोके सर्वमावृत्य तिष्ठति ॥१३॥
सर्वेन्द्रियगुणाभासं सर्वेन्द्रियविवर्जितम् ।

आश्विन कृष्ण ६ शनि ] २ अक्टूबर [ आश्विन १६

आज दोनों समय भो. तथा नित्य समय ही.
आज भी थोड़ा बुखार आया था.

असक्तं सर्वभृच्चैव निर्गुणं गुणभोक्तृ च ॥१४॥
बहिरन्तश्च भूतानामचरं चरमेव च ।
सूक्ष्मत्वात्तदविज्ञेयं दूरस्थं चान्तिके च तत् ।१५।
अविभक्तं च भूतेषु विभक्तमिव च स्थितम् ।
भूतभर्तृ च तज्ज्ञेयं ग्रसिष्णु प्रभविष्णु च ॥१६॥



आज दोनो समय भो. तथा विश्वास यहीं.
नाता कती बहुत हो गयी है.

ज्योतिषामपि तज्ज्योतिस्तमसः परमुच्यते ।
ज्ञानं ज्ञेयं ज्ञानगम्यं हृदि सर्वस्य विष्ठितम् ॥१७॥
इति क्षेत्रं तथा ज्ञानं ज्ञेयं चोक्तं समासतः ।
मद्भक्त एतद्विज्ञाय मद्भावायोपपद्यते ॥१८॥
प्रकृतिं पुरुषं चैव विद्ध्यनादी उभावपि ।



आज दोनों समय भो. तथा निवास यही.
आज सिर्फ हरारत सी हुई थी. ।सिरदर्द थी.

विकारांश्च गुणांश्चैव विद्धि प्रकृतिसंभवान् ॥१९॥
कार्यकरणकर्तृत्वे हेतुः प्रकृतिरुच्यते ।
पुरुषः सुखदुःखानां भोक्तृत्वे हेतुरुच्यते ॥२०॥
पुरुषः प्रकृतिस्थो हि भुङ्क्ते प्रकृतिजान्गुणान् ।
कारणं गुणसङ्गोऽस्य सदसद्योनिजन्मसु ॥२१॥



आज दोनों समय भो. तथा निवास यहीं.
आज बड़े पुरोहित (पं. [illegible] जोतिरा[illegible]-
कानगरोया) को तर्कसंग्रह पढाना शुरू
किया.

उपद्रष्टानुमन्ता च भर्ता भोक्ता महेश्वरः ।
परमात्मेति चाप्युक्तो देहेऽस्मिन्पुरुषः परः ।२२।
य एवं वेत्ति पुरुषं प्रकृतिं च गुणैः सह ।
सर्वथा वर्तमानोऽपि न स भूयोऽभिजायते ॥२३॥
ध्यानेनात्मनि पश्यन्ति केचिदात्मानमात्मना ।

---



आज दो नौ समय भो. तथा निवास यहीं
आज भी बड़े को थोड़ा तर्कसंग्रह पढ़ाया

अन्ये सांख्येन योगेन कर्मयोगेन चापरे ॥२४॥
अन्ये त्वेवमजानन्तः श्रुत्वान्येभ्य उपासते ।
तेऽपि चातितरन्त्येव मृत्युं श्रुतिपरायणाः ॥२५॥
यावत्संजायते किंचित्सत्त्वं स्थावरजङ्गमम् ।
क्षेत्रक्षेत्रज्ञसंयोगात्तद्विद्धि भरतर्षभ ॥२६॥

---

आश्विन कृष्ण १२ गुरु ] ८ अक्टूबर [ आश्विन २१

आज दोनो समय भो. तथा निवास यहीं
आज बई आया ही नहीं.

समं सर्वेषु भूतेषु तिष्ठन्तं परमेश्वरम् ।
विनश्यत्स्वविनश्यन्तं यः पश्यति स पश्यति ।२७।
समं पश्यन्हि सर्वत्र समवस्थितमीश्वरम् ।
न हिनस्त्यात्मनात्मानं ततो याति परां गतिम् २८
प्रकृत्यैव च कर्माणि क्रियमाणानि सर्वशः ।



आज प्रदोष मौन दिनभर रात को
नियमाऽनुसार धारण तथा निवास यहीं

यः पश्यति तथात्मानमकर्तारं स पश्यति ॥२६॥
यदा भूतपृथग्भावमेकस्थमनुपश्यति ।
तत एव च विस्तारं ब्रह्म संपद्यते तदा ॥३०॥
अनादित्वान्निर्गुणत्वात्परमात्मायमव्ययः ।
शरीरस्थोऽपि कौन्तेय न करोति न लिप्यते ॥३१॥

---

आश्विन कृष्ण १४ शनि ] १० अक्टूबर [आश्विन २३

आज दोनो समय भो. तथा निवास यहीं.
आज दोपहर खाने के बाद फिर थोडी
बुखार की हरारत मालूम हुई थी.

यथा सर्वगतं सौक्ष्म्यादाकाशं नोपलिप्यते।
सर्वत्रावस्थितो देहे तथात्मा नोपलिप्यते ॥३२॥
यथा प्रकाशयत्येकः कृत्स्नं लोकमिमं रविः।
क्षेत्रं क्षेत्री तथा कृत्स्नं प्रकाशयति भारत ॥३३॥
क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोरेवमन्तरं ज्ञानचक्षुषा।

---

आश्विन कृष्ण ३० रवि ] ११ अक्टूबर [आश्विन २४

( पितृविसर्जन )

आज दोनों समय भो. तथा निवास यहीं.

भूतप्रकृतिमोक्षं च ये विदुर्यान्ति ते परम् ॥३४॥

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे क्षेत्रक्षेत्रज्ञविभाग-योगो नाम त्रयोदशोऽध्यायः ॥१३॥

---

आश्विन शुक्ल १ सोम ] १२ अक्टूबर [ आश्विन २५

( नवरात्र्यारम्भ )

आज दोनों समय भो. तथा निवास यहीं
आज अबलधर गया था साथ पं. बदरीदत्त भी
थे. वहां बालक स्वाये डाढी बनवाई. पैसे
पं. जी ने दिये. आज शङ्कराचार्य कृत
'देवी मानस पूजा स्तोत्र' पर व्याख्या लिखना
प्रारम्भ किया. रात्री को दुर्गा पाठ साथ कथा
बांचना शुरु किया.
आज कन्यार्जुन की जक कथा.

ॐ

चतुर्दशोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

परं भूयः प्रवक्ष्यामि ज्ञानानां ज्ञानमुत्तमम् ।
यज्ज्ञात्वा मुनयः सर्वे परां सिद्धिमितो गताः ।१।



दोनों समय भो॰ तथा निवास यहीं.
कथा रात को
आज दोपहर रसोई मैंने बनाई
आज प्रथमाऽध्याय सप्तशती कथा.

इदं ज्ञानमुपाश्रित्य मम साधर्म्यमागताः ।
सर्गेऽपि नोपजायन्ते प्रलये न व्यथन्ति च ॥२॥
मम योनिर्महद्ब्रह्म तस्मिन्गर्भं दधाम्यहम् ।
संभवः सर्वभूतानां ततो भवति भारत ॥३॥
सर्वयोनिषु कौन्तेय मूर्तयः संभवन्ति याः ।



दोनो समय भो. तथा निवास यहीं.
रात को कथा.
दोपहर रसोई मैंने बनाई
आज द्वितीयाध्याय सप्तशती कथा

तासां ब्रह्म महद्योनिरहं बीजप्रदः पिता ॥४॥
सत्त्वं रजस्तम इति गुणाः प्रकृतिसंभवाः ।
निबध्नन्ति महाबाहो देहे देहिनमव्ययम् ॥५॥
तत्र सत्त्वं निर्मलत्वात्प्रकाशकमनामयम् ।
सुखसङ्गेन बध्नाति ज्ञानसङ्गेन चानघ ॥६॥

---



दोनों समय भो. तथा निवास यहीं
रातको कथा
रसोई दोपहर की मैने बनाई
आज तृतीयाध्याय और चतुर्थाध्याय

रजो रागात्मकं विद्धि तृष्णासङ्गसमुद्भवम् ।
तन्निबध्नाति कौन्तेय कर्मसङ्गेन देहिनम् ॥७॥
तमस्त्वज्ञानजं विद्धि मोहनं सर्वदेहिनाम् ।
प्रमादालस्यनिद्राभिस्तन्निबध्नाति भारत ॥८॥
सत्त्वं सुखे संजयति रजः कर्मणि भारत ।



दोनो समय भोग यहीं तथा निवास भी
रसोई दोपहर की मैने बनाई थी.
आज पञ्चम तथा षष्ठाध्याय.

ज्ञानमावृत्य तु तमः प्रमादे संजयत्युत ॥ ९ ॥
रजस्तमश्चाभिभूय सत्त्वं भवति भारत।
रजः सत्त्वं तमश्चैव तमः सत्त्वं रजस्तथा ॥१०॥
सर्वद्वारेषु देहेऽस्मिन्प्रकाश उपजायते।
ज्ञानं यदा तदा विद्याद्विवृद्धं सत्त्वमित्युत ॥११॥

---



आज दोपहर भो. यहीं रातको आज
फिर बुखार आया. खाया कुछ नही
रात्रौ निवास यहीं.

आज सप्तम तथा अष्टम अध्याय कथा.

लोभः प्रवृत्तिरारम्भः कर्मणामशमः स्पृहा।
रजस्येतानि जायन्ते विवृद्धे भरतर्षभ ॥१२॥
अप्रकाशोऽप्रवृत्तिश्च प्रमादो मोह एव च।
तमस्येतानि जायन्ते विवृद्धे कुरुनन्दन ॥१३॥
यदा सत्त्वे प्रवृद्धे तु प्रलयं याति देहभृत्।



आज दोनो समय भो. तथा निवास यही
आज स्नान नहीं किया
आज नवम तथा दशम अध्याय.

तदोत्तमविदां लोकानमलान्प्रतिपद्यते ॥१४॥
रजसि प्रलयं गत्वा कर्मसङ्गिषु जायते ।
तथा प्रलीनस्तमसि मूढयोनिषु जायते ॥१५॥
कर्मणः सुकृतस्याहुः सात्त्विकं निर्मलं फलम् ।
रजसस्तु फलं दुःखमज्ञानं तमसः फलम् ॥१६॥

---



( दुर्गापूजनम् )

आजभो दोनो समय यही
११,१२,१३, अध्याय कथा.

सत्त्वात्संजायते ज्ञानं रजसो लोभ एव च।
प्रमादमोहौ तमसो भवतोऽज्ञानमेव च ॥१७॥
ऊर्ध्वं गच्छन्ति सत्त्वस्था मध्ये तिष्ठन्ति राजसाः
जघन्यगुणवृत्तिस्था अधो गच्छन्ति तामसाः १८
नान्यं गुणेभ्यः कर्तारं यदा द्रष्टानुपश्यति।

आश्विन शुक्ल ६ मंगल ] २० अक्टूबर [ कार्तिक २

( विजयादशमी )

आज दोपहर भो. यही रसोई मैने ही बनाई
आज राततुखा र बजा फिर आया
आज रहस्य त्रय कथा समाप्त.
आज सप्तशती कथा समाप्त. कुल ४ रु. ।।।=)
पुस्तक पर आये थे. इसमे १ रु. और धोती १
अंगोछा परखानी १ और एक कपडा ने दाभ
१ रु. पण्डित बद्रीदत्त १ रु. गौरी पण्डित ।=)
कन्हैया ब्राह्मण १ रु. पद्मनाभ कुई.

गुणेभ्यश्च परं वेत्ति मद्भावं सोऽधिगच्छति ॥१९॥
गुणानेतानतीत्य त्रीन्देही देहसमुद्भवान् ।
जन्ममृत्युजरादुःखैर्विमुक्तोऽमृतमश्नुते ॥२०॥

अर्जुन उवाच

कैर्लिङ्गैस्त्रीन्गुणानेतानतीतो भवति प्रभो ।



आजभी एकसमय रातको कुछ नहीं. बुखार दिनभर अबरहता है. अन्दर बाहर थोडा आता है.
जीर्णज्वर होगया है.

१-३-३२ मं - आज रवश्री दूध दे गया था उसको पीया. दोनो समय भी. तथा निवास यहीं.

२-३-३२ बु. - आज. रवश्री दूध दे गया था. दोनो समय भी. तथा निवास यहीं.

३-३-३२ बृ. - आज सुबः शौचादि करके नारायणगिरी के कुटी पर गया. भी. नहीं किया. दाल रोटी गंगापुत्र ने बनाई थी. व ४ बजे शाम को मन्दिर आया. रात बुखार आया अत: खाया नहीं रवश्री दूध दे गया था.

४-३-३२ शु. - आज प्रदोष मौन. नियमानुसार रात धारण. 1) स्वर्ज हुआ

५-३-३२ श. -
आज शिवरात्रि सुबः शौचादि करके रेलवे स्टेशन १ मील गया. -) टिकट 'कुनाला' यहां से एक मील चलकर 'चन्द्रभागा' - चिनाब में स्नानादि करके ३ मील

किमाचारः कथं चैतांस्त्रीन्गुणानतिवर्तते ॥२१॥

श्रीभगवानुवाच

प्रकाशं च प्रवृत्तिं च मोहमेव च पाण्डव ।
न द्वेष्टि संप्रवृत्तानि न निवृत्तानि काङ्क्षति ॥२२॥



भो. एक समय रात को कुछ नहीं.

चलकर 'शादीनाल' पहुंचा. यहां नये शिवमन्दिर में
ठहरा यहां एक लाहौर का पण्डित बैठा था. इसको वेद-
पाठी प कहते हैं. यह लाहौर में सनातनधर्म स्कूल में
उर्दू पढ़ाता है. स्वभाव तथा आचार उत्तम है.
इसने आधसेर दूध पिलाया. यहां एक सन्यासी
साधु से जान पहचान हुई. यह भी यहां की रहने
वाला है. स्वभाव इस का भी अच्छा है. आज
शिवरात्री, रात्रीभर जागरण किया. [illegible] चढाया.
रात को बदाम ठंढाई पीया. इस पण्डित को लाहौर
में 'शिवहर' कहते हैं. वाटरवर्क्स के पास इसका
घर है. इसका नाम सोहनलाल है.

५-३-३२ र. आज यहां सुबः शौचादि करके
यहां के लोगों के आग्रह से यहीं रहा. पं. सोहनलाल-
जी ने रसोई बनाई थी उसमें भो. रात को कुछ नहीं खा-
या. आज बुखार बडा आया. शाम को ९ बजे ही बुखार
हाहत सोहनलाल चला गया.

उदासीनवदासीनो गुणैर्यो न विचाल्यते।
गुणा वर्तन्त इत्येव योऽवतिष्ठति नेङ्गते ॥२३॥
समदुःखसुखः स्वस्थः समलोष्टाश्मकाञ्चनः।
तुल्यप्रियाप्रियो धीरस्तुल्यनिन्दात्मसंस्तुतिः२४



आज प्रदोष मौन नियमाऽनुसार पारण
आज १ रु. जगु कुईने पुस्तक पर कथानिमित्त चढाया.
आज तबियत बहुत बीमार हुई थी.

ता. ७-३-३२ सोम आज दोपहर लाला मुकुन्दी लाल के यहां भो. आज जेहलम के नहर पर गये थे. यहां स्नानादि किया. आज सोमवती अमावास्या हुई. रातको हमने अपने हाथ दाल भात मन्दिर में बनाया. स्वामी, नाथ, और हम ने खाया. निवास स्वामीके कमरे में. रात दूध मुकुन्दी लाल के ग-

ता. ८-३-३२ मं. आज सुबः शौचादि करके अपने हाथ बनाखाया. आज मुकुन्दी लालने एक धोती दी. रात को दूध पीया.

९-३-३२ बु. आज सुबः 'किपाधार' गया साथ यहां



का महन्त सन्यासी था. [illegible]

मानापमानयोस्तुल्यस्तुल्यो मित्रारिपक्षयोः।
सर्वारम्भपरित्यागी गुणातीतः स उच्यते ॥२५॥
मां च योऽव्यभिचारेण भक्तियोगेन सेवते।
स गुणान्समतीत्यैतान्ब्रह्मभूयाय कल्पते ॥२६॥



एक समय भो· यहीं रातको कुछ नहीं

पण्डितों का स्थान है. यहां एक धूनी मान्दिर है. यह एक
बउआ गाम है. मालूम के यत सारी का (मेरी) पण्डितों और
धूनी दर्शन करके एक गुरुद्वारे में गया था. यहां के
एक सिख वाले ने दवा दी थी. फिर जोर [illegible]
आया. अपने हाथ बनाकर दूध भात खाया.
पं· शङ्करदास ने भी दवा दी थी पर बुखार आया ही.
रात दूध पीया. कि आधीर का स्थान है नी [illegible] वजा.
मीर के साथ काश्मीर के राज का तस्मा है वो का है.

१०-३-३२ बु.- आज दवा खाई थी अपने हाथ
बनाकर भात दूध के साथ खाया रात को दूध पीया।

११-३-३२ बृ.- आज दवा खाई थी. अपने हाथ
बनाबनाकर दूध भात खाया. आज मुकुन्दी लाल ने
१ रु. का जद तो खरीद कर दिया. रात को कुछ नहीं.

१२-३-३२ श. आज दवा पं· शङ्करदास की खाई.
अपने हाथ बनाकर दूध भात खाया. रात को कुछ नहीं।
बुखार आया.

ब्रह्मणो हि प्रतिष्ठाहममृतस्याव्ययस्य च ।
शाश्वतस्य च धर्मस्य सुखस्यैकान्तिकस्य च २७

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे गुणत्रयविभाग-योगो नाम चतुर्दशोऽध्यायः ॥१४॥



आज दोनो समय भोजन नहीं.

१३-३-३२ र. आज सुबः उठकर शौचादि करके 'किलाधार' गया. यहां के महन्तों में प्रेम नहीं है. यहां भोजन करके पैदल ६ मील चलकर 'गुजरात' स्टेशन पर आया. यहां मन्दिर में थोडी हलुआ खाया. पानी पीया. फिर स्टेशन पर गया. १६.॥=) का टिकट लेकर ९ बजे के गाडी से रावलपिण्डी रवाना हुआ. मुकुन्दीलालने दी हुई धोती यहां के महन्त द्वारकादास को दे दी. ~~सर~~ लालामूसा स्टेशन पर ᠁। गंडेरी -॥ केले खाये.

१४-३-३२ सो. ~ आज सुबः ५ बजे 'रावलपिण्डी' स्टेशन पर उतरा ᠁ खोनाहिया। ६। बजे तक मुसाफर खाने मे था. फिर खोज करके शहर में यहां महात्मा लक्ष्मीनारायण के पास पहुंचा ये बोधराज के

ॐ

पञ्चदशोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

ऊर्ध्वमूलमधःशाखमश्वत्थं प्राहुरव्ययम् ।
छन्दांसि यस्य पर्णानि यस्तं वेद स वेदवित् ॥१॥

आश्विन शुक्ल १५ सोम] २६ अक्टूबर [ कार्तिक ८

(शरद पूर्णिमा कार्तिक-स्नानारम्भ)

आज दोनो समय भो. यहीं.
आज रात को खीर भोजन यहां.
आज पं. बदरीदत्त ने दिये हुए कपडे की दो लंगोटी
और दो बन्धन बनाये.

मन्दिर में सराफों के बाजार के पास रहते हैं.
यहां शौचादि करके दोनो समय भो. तथा
निवास किया. शाम को घूमने गया था
२॥ बराफ खाया.

१५-३-३२ मं.~आज दवा ली थी. दवा डा. सेन
की की बनाई है. दस्तुरा की शीशी है.
॥≡) दाम है. पैसे महात्मा ने दिये थे. रात को
रोटी नहीं खाई. ≡) दूध लापीया.
बुखार रुक आया. भो. ज्वालानिरंजन के पास.

अधश्चोर्ध्वं प्रसृतास्तस्य शाखा गुणप्रवृद्धा विषय-
प्रवालाः। अधश्च मूलान्यनुसंततानि कर्मानु-
बन्धीनि मनुष्यलोके ॥२॥ न रूपमस्येह तथोप-
लभ्यते नान्तो न चादिर्न च संप्रतिष्ठा। अश्वत्थमेनं
सुविरूढमूलमसङ्गशस्त्रेण दृढेन छित्त्वा ॥ ३ ॥



आज एकसमय भो. दूसरे समय कुछ
नहीं खाया. प्रकृती ठीक नहीं थी.

१६-३-३२ बु. आज सुबः 'चोहां (वावलीयां) पर
शौचादि करके महात्मा लक्ष्मीनिरञ्जन लाल के रसोंई
में भो. दोनो समय. यहां की लाइब्रेरी देखी.

१७-३-३२ बृ. आज सुबः शौचादि करके लारी
मोटर की टिकट ८ रु. देकर 'ताराचन्द से लिया.
आते समय २ रु. 'लक्ष्मीनिरंजन ने दिये. आना=)
के ले खाये (रावलपिण्डी में) फिर लारी पर सवार
होकर कश्मीर को लिये रवाना हुए. १० बजे लारी चली.
लारी नं. १२९८ था. ३॥ बजे 'कोहाला' पहुंचे. यहां
जेहलम का पुल टूटने के कारण लारी से उतर पुल पार
पैदल गये. वहां दूसरे लारी में बैठे. इसका नं. १३४४
था. यह ५। बजे चली. ७॥ बजे 'दोमेल' पहुंचे.
यहां ...) दूध ...) ...) जलेबी खाकर एक

ततः पदं तत्परिमार्गितव्यं यस्मिन्गता न निवर्तन्ति भूयः । तमेव चाद्यं पुरुषं प्रपद्ये यतः प्रवृत्तिः प्रसृता पुराणी ॥४॥ निर्मानमोहा जितसङ्गदोषा अध्यात्मनित्या विनिवृत्तकामाः । द्वन्द्वैर्विमुक्ताः सुखदुःखसंज्ञैर्गच्छन्त्यमूढाः पदमव्ययं तत् ॥५॥



आज दोनो समय भो. यहीं निवास भी.

गुलमार्ग में बाजार में रातभर सोया. पुल पर मह-
सूल लगा दिया था. लारी में ८ (दो नौ) ३ मुसल-
मान और एक अंग्रेज औरत और उसके दो
बच्चे थे. ७ माल इतनो भराथा कि बैठने को
भी अच्छी जगह न थी. बैठे मुश्किल से बैठना
था. लारी पिण्डी मोटर ट्रान्सपोर्ट सर्विस
की थी.

१८-३-३२ शु. एकादशी (फा. शु. १९८८ सं.
आज सुबः शौचादि करके यहां से (दो मेल से)
लारी पर सवार होकर शाम को ५ बजे
श्रीनगर काश्मीर पहुंचा. ऊंचाई में ५०। किश
मिश रना है. यहां लारी से उतर कर पं. क-
श्यप वासादत्त भाग्गी कदल श्री नगर के
घर गया. रात भो. तथा निवास यहां. आज
बुखार की बारी होने पर भी बुखार नहीं आया.

न तद्भासयते सूर्यो न शशाङ्को न पावकः।
यद्गत्वा न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम ॥६॥
ममैवांशो जीवलोके जीवभूतः सनातनः।
मनः षष्ठानीन्द्रियाणि प्रकृतिस्थानि कर्षति ॥७॥
शरीरं यदवाप्नोति यच्चाप्युत्क्रामतीश्वरः।



आज दोपहर भोजन तारियहां करके राम को चूमने को पाथा. वहां काबू पं चौधरी का लड़का मिला इसके आग्रह से आज इसी के घर रात्री भर रहे. और भो. रात्री का इसी पण्डित के घर किया. निवा सभी यही.
जिसको मैं काबू समझता था वह काबू नहीं बल्कि काबू का लड़का प्यारा राम है.

दूध पीया था. [illegible] के लड़के [illegible] ठिकाने से स्वागत अच्छा किया. [illegible] मन्त्रीपद के लिये खड़े हुआ है. [illegible] भी प्रेम करते है. पं. प्रेमनाथ मन्त्री भी मिला था. इस का व्यवहार कुछ रूखा सा ही था,

१९-३-३२ [illegible] आज [illegible] [illegible] करके [illegible]

गृहीत्वैतानि संयाति वायुर्गन्धानिवाशयात् ॥८॥
श्रोत्रं चक्षुः स्पर्शनं च रसनं घ्राणमेव च ।
अधिष्ठाय मनश्चायं विषयानुपसेवते ॥९॥
उत्क्रामन्तं स्थितं वापि भुञ्जानं वा गुणान्वितम्
विमूढा नानुपश्यन्ति पश्यन्ति ज्ञानचक्षुषः ॥१०॥



आज सुबः शौचादि यहीं के एक बाउ ड़ीपर करके फिर काह्नू पण्डितके घर आया. यहां भोजनकर के फिर स्कूल में थोडे देर बैठकर पं. बदरी दत्तके घर आया. रातको भी यहां.

ता. २०-३-३३ ई. - आज प्रदोष मौन. आज हरिपर्वत दर्शनको गया था. दिनको थोडी किश-मिश और खसखोर खाया. रातको नियमानुसार धारण. आज श्रीपालाल ने मेरे लिये १ डायरी (जीताडायरी) खरीद ले आया

यतन्तो योगिनश्चैनं पश्यन्त्यात्मन्यवस्थितम् ।
यतन्तोऽप्यकृतात्मानो नैनं पश्यन्त्यचेतसः॥११।
यदादित्यगतं तेजो जगद्भासयतेऽखिलम् ।
यच्चन्द्रमसि यच्चाग्नौ तत्तेजो विद्धि मामकम्॥१२।
गामाविश्य च भूतानि धारयाम्यहमोजसा ।



दोनोसमय भो. यहीं

पुष्णामि चौषधीः सर्वाः सोमो भूत्वा रसात्मकः।
अहं वैश्वानरो भूत्वा प्राणिनां देहमाश्रितः। प्राणा-
पानसमायुक्तः पचाम्यन्नं चतुर्विधम् ॥१४॥ सर्वस्य
चाहं हृदि संनिविष्टो मत्तः स्मृतिर्ज्ञानमपोहनं
च। वेदैश्च सर्वैरहमेव वेद्यो वेदान्तकृद्वेदविदेव



दोनो समय भो. यहीं

आज एक पत्र को टीके टीके को नत्थू पण्डितके हाथ भेजा इसीमे पं. भीमादत्तजोशी को भी चिट्ठी लिखदी है.

चाहम् ॥१५॥ द्वाविमौ पुरुषौ लोके क्षरश्चाक्षर एव
च। क्षरः सर्वाणि भूतानि कूटस्थोऽक्षर उच्यते १६
उत्तमः पुरुषस्त्वन्यः परमात्मेत्युदाहृतः।
यो लोकत्रयमाविश्य बिभर्त्यव्यय ईश्वरः ॥१७॥
यस्मात्क्षरमतीतोऽहमक्षरादपि चोत्तमः।

---

कार्तिक कृष्ण ७ सोम] २ नवम्बर [कार्तिक १९

आज दोनों समय भी. नहीं. आज यहां से ११ मील चलकर 'नयना' देवी का दर्शन किया)।
चढाया.

अतोऽस्मि लोके वेदे च प्रथितः पुरुषोत्तमः ॥१८॥
यो मामेवमसंमूढो जानाति पुरुषोत्तमम् ।
स सर्वविद्भजति मां सर्वभावेन भारत ॥१९॥
इति गुह्यतमं शास्त्रमिदमुक्तं मयानघ ।

कार्तिक कृष्ण ८ मंगल ] ३ नवम्बर [ कार्तिक १६

आज दोनो समय भी यही
चामुण्डा दर्शन को गया था)। पढाया.
साथ वेदगर्भ था

एतद्बुद्ध्वा बुद्धिमान्स्यात्कृतकृत्यश्च भारत२०

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे पुरुषोत्तमयोगो नाम पञ्चदशोऽध्यायः ॥१५॥

---

कार्तिक कृष्णा ६ बुध ] ४ नवम्बर [ कार्तिक १७

आज दोनो समय भी यही

ॐ

# षोडशोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

अभयं सत्त्वसंशुद्धिर्ज्ञानयोगव्यवस्थितिः ।
दानं दमश्च यज्ञश्च स्वाध्यायस्तप आर्जवम् ॥१॥

कार्तिक कृष्ण १० गुरु ] ५ नवम्बर [ कार्तिक १८

आज दोनो समय भी यही

अहिंसा सत्यमक्रोधस्त्यागः शान्तिरपैशुनम्।
दया भूतेष्वलोलुप्त्वं मार्दवं ह्रीरचापलम् ॥२॥
तेजः क्षमा धृतिः शौचमद्रोहो नातिमानिता।
भवन्ति संपदं दैवीमभिजातस्य भारत ॥३॥
दम्भो दर्पोऽभिमानश्च क्रोधः पारुष्यमेव च।



आज कोनो समय भो· यहीं

अज्ञानं चाभिजातस्य पार्थ संपदमासुरीम् ॥४॥
दैवी संपद्विमोक्षाय निबन्धायासुरी मता।
मा शुचः संपदं दैवीमभिजातोऽसि पाण्डव ॥५॥
द्वौ भूतसर्गौ लोकेऽस्मिन्दैव आसुर एव च।
दैवो विस्तरशः प्रोक्त आसुरं पार्थ मे शृणु ॥६॥



आज प्रदोष मौन रात को नियमानुसार पारण
आज पं. रंगीलाराम के साथ फतेसिंग चिर्थ
हमसे मिलने आया था. इसको संसार से
वैराग्य हो रहा है. यह भागसू धर्मशाला में
क्लार्क है.

प्रवृत्तिं च निवृत्तिं च जना न विदुरासुराः ।
न शौचं नापि चाचारो न सत्यं तेषु विद्यते॥७॥
असत्यमप्रतिष्ठं ते जगदाहुरनीश्वरम् ।
अपरस्परसंभूतं किमन्यत्कामहैतुकम् ॥८॥
एतां दृष्टिमवष्टभ्य नष्टात्मानोऽल्पबुद्धयः ।



आज दोनों समय भी - रही

प्रभवन्त्युग्रकर्माणः क्षयाय जगतोऽहिताः ॥ ९ ॥
काममाश्रित्य दुष्पूरं दम्भमानमदान्विताः ।
मोहाद्गृहीत्वासद्ग्राहान्प्रवर्तन्तेऽशुचिव्रताः १०
चिन्तामपरिमेयां च प्रलयान्तामुपाश्रिताः ।
कामोपभोगपरमा एतावदिति निश्चिताः ॥११॥

कार्तिक कृष्ण ३० सोम] ९ नवम्बर [कार्तिक २२

(दिपावली) (सोमवती अमावस्या)

आज दोनो समय भो· यही
आज रात को खीर खाई

आशापाशशतैर्बद्धाः कामक्रोधपरायणाः।
ईहन्ते कामभोगार्थमन्यायेनार्थसञ्चयान् ॥१२॥
इदमद्य मया लब्धमिमं प्राप्स्ये मनोरथम्।
इदमस्तीदमपि मे भविष्यति पुनर्धनम् ॥१३॥
असौ मया हतः शत्रुर्हनिष्ये चापरानपि।



(अन्नकूटम्)

दोनो समय भो. यहीं
आज से शीतोपलादि चूर्ण खाना शुरू किया.

ईश्वरोऽहमहं भोगी सिद्धोऽहं बलवान्सुखी ॥१४॥
आढ्योऽभिजनवानस्मि कोऽन्योऽस्ति सदृशो मया
यक्ष्ये दास्यामि मोदिष्य इत्यज्ञानविमोहिताः १५
अनेकचित्तविभ्रान्ता मोहजालसमावृताः ।
प्रसक्ताः कामभोगेषु पतन्ति नरकेऽशुचौ ॥१६॥



दोनोसमयभो· यहीं

आत्मसंभाविताः स्तब्धा धनमानमदान्विताः।
यजन्ते नामयज्ञैस्ते दम्भेनाविधिपूर्वकम्॥१७॥
अहंकारं बलं दर्पं कामं क्रोधं च संश्रिताः।
मामात्मपरदेहेषु प्रद्विषन्तोऽभ्यसूयकाः॥१८॥
तानहं द्विषतः क्रूरान्संसारेषु नराधमान्।



आज दोनों समय भो. यही

क्षिपाम्यजस्रमशुभानासुरीष्वेव योनिषु ॥१६॥
आसुरीं योनिमापन्ना मूढा जन्मनि जन्मनि ।
मामप्राप्यैव कौन्तेय ततो यान्त्यधमां गतिम् २०
त्रिविधं नरकस्येदं द्वारं नाशनमात्मनः ।
कामः क्रोधस्तथा लोभस्तस्मादेतत्त्रयं त्यजेत् २१



आज यहां भोजन करके शाम को 'पठियार' गया साथ पं. बदरीदत्त भी थे. यहां पं. पद्मनाभ के घर गये रात को भो. निवास यहीं.

एतैर्विमुक्तः कौन्तेय तमोद्वारैस्त्रिभिर्नरः।
आचरत्यात्मनः श्रेयस्ततो याति परां गतिम् ।२२।
यः शास्त्रविधिमुत्सृज्य वर्तते कामकारतः।
न स सिद्धिमवाप्नोति न सुखं न परां गतिम् ।२३।
तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ।

कार्तिक शुक्ल ५ शनि ] १४ नवम्बर [ कार्तिक २७

आज सुबह उठकर चामुण्डा गया यहां शौचादि
करके बाउली पर स्नान (दि करके भगवती का
दर्शन किया) चढाया. फिर यहां से पाठियार
पं. पद्मनाभ के घर आया. यहां भो. किया
आज पं. पद्मनाभ के लडके का प्रथमवर्षका जन्म
दिन था. रात को दूध पीया. रात को यहां खूब
गाना बजाना हुआ. रात भर यहीं थे. आज
कुमरस्या वैद्य पं. लीलाधर तिवाडी मिला यह भी पं.
पद्मनाभ के घर आया था. रात को दूध पीया.
एक पं. कृपाराम नाम का अपने घर ले गया था. इस
ने दूध भी पिलाया था. उस ने वैद्य से [illegible] कहा कि - पं. विश्व
नाथ कुई कहता था कि 'हां मैं उनको जानता हूं मुझे फलाने
जगह जाना है फिलाने जगह जाना है ऐसा कहकर लोगों से पैसे
मांगता है और लोगों को [illegible] ता है'

ज्ञात्वा शास्त्रविधानोक्तं कर्म कर्तुमिहार्हसि ॥२४॥

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे दैवासुरसंपद्विभागयोगो नाम षोडशोऽध्यायः ॥१६॥

---



आज पं. पद्मनाभके आग्रहसे यहीं भोजन किया. फिर शामको सदर जद्दूबतेसमय पाण्डे आये साथ पं. बदरीदत्त थे. आते हुए रास्ते में अनुनाउसें पं. जोगीश्वर शुक्लके यहां गये थे. पर यह मिला नहीं. रातको भो. यहीं. (बदरीदत्तजीके घर)



ॐ

सप्तदशोऽध्यायः

अर्जुन उवाच

ये शास्त्रविधिमुत्सृज्य यजन्ते श्रद्धयान्विताः ।
तेषां निष्ठा तु का कृष्ण सत्त्वमाहो रजस्तमः ॥१॥

कार्तिक शुक्ल ७ सोम] १६ नवम्बर [कार्तिक २९

आज दोनो समय भोजन तथा निवास यहीं.

ता. ५-१-३२ मं. — आज सुबः उठकर पैदल १० मील तक ठूआं आये. आज प्रदोष था. पर आज मौन [illegible] रहस का. यहां एक नाथ के पास शिवालेमें ठहरा. प्रदोष दोष ने पावन पर किया —) अफी —)॥ पेडे)॥। दही —)। नकडी)॥ किशमिश ।)। खंड.)॥। दूध रात में निवास यहीं नाथ के पास

ता. ६-१-३२ बु. — आज एक दुकान पर —)। फुलका दाल)॥ कचौरी दाल खाकर यहां से ~५ मील चल कर 'पडियारी' में सडक पर ही एक तपोवन में कुटी में ठहरा रात भों: कुछ नहीं. आज ठंड लगने लगी तब मैंने

श्रीभगवानुवाच

त्रिविधा भवति श्रद्धा देहिनां सा स्वभावजा ।
सात्त्विकी राजसी चैव तामसी चेति तां शृणु॥२॥
सत्त्वानुरूपा सर्वस्य श्रद्धा भवति भारत ।
श्रद्धामयोऽयं पुरुषो यो यच्छ्रद्धः स एव सः ॥३॥



दोनो समय भोजन व भी निवास यहीं.

भजन शुरू किया. फिर ठंड बन्द हो गयी. और बुखार बिलकुल मामुली आया. रात भर निवास यहीं.

---

ता. ७-१-३२ ई. ~ आज यहां शौचादि करके पैदल चल ७॥ मील पर एक गांव में एक ब्राह्मण नंबरदार के यहां भो. करके फिर पैदल शाम को 'शेरपुर' में आया. यह 'फ० ए'से १९ मील है वहां रात भर निवास और भो. नंबरदार ब्राह्मण नरसिंह दयाल के घर. [illegible] यह आदमी स्वभाव का अच्छा है

यजन्ते सात्त्विका देवान्यक्षरक्षांसि राजसाः।
प्रेतान्भूतगणांश्चान्ये यजन्ते तामसा जनाः ॥४॥
अशास्त्रविहितं घोरं तप्यन्ते ये तपो जनाः।
दम्भाहंकारसंयुक्ताः कामरागबलान्विताः ॥५॥
कर्षयन्तः शरीरस्थं भूतग्राममचेतसः।



आज दो मोसमयमो. तथा निवास यहीं . .
आज पं. शिवराम वेदपाठी यहां आये इनसे शिमले का समाचार मालूम हुआ. ये यहीं ठहरे.
ता. ८-१-३२ ई. — आज नरसिंहदयाल के आग्रह से यहीं रहा. सुबः यहां से २ फर्लांग पर एक बागमें बावडी पर शौचादि कर के सन्ध्यादि किया. यहां एक छोटासा शिवालय है स्थान बहुत उत्तम है. फिर नरसिंहदयाल के यहां से टीरवा कर ६ मील चैरवाय तक 'अपसयक' म रेल्वे स्टेशन पर शाम को पहुंचा. नरसिंहदयाल के घर के और लोग सब जंगली हैं. सिर्फ एक यह आदमी समझदार है. स्टेशन पर ७॥ = बाकी रख कर रात भर गाडी में सोया ॥) टिकट 'असाउ' का लिया.

मां चैवान्तःशरीरस्थं तान्विद्ध्यासुरनिश्चयान्
आहारस्त्वपि सर्वस्य त्रिविधो भवति प्रियः ।
यज्ञस्तपस्तथा दानं तेषां भेदमिमं शृणु ॥७॥
आयुःसत्त्वबलारोग्यसुखप्रीतिविवर्धनाः ।
रस्याः स्निग्धाः स्थिरा हृद्या आहाराः सात्त्विक-



दोनों समय भोजन तथा निवास यहीं

ता. ९-१-३२ शु. — आज सुबह ५ बजे
गाड़ी अमृतसर से चली सो ६ बजे 'जस्सड़'
पहुंची. यहां स्टेशन पर थोड़ा बैठकर 'जस्सड़'
नगर में आधमील पर पहुंचा. यहां पं. काशी
राम ज्योतिषी के पास पहुंचा इसकी रची है
यां कांगड़े में आयी थी. अभी ब्राह्मण के घर से
ब्राह्मण के घर से पं. कृष्णदत्त ब्रह्मचारी रोटी
दोनों समय ले आये. पर रात को रोटी नहीं
खाई है. बुखार आया था.
पं. काशीनाथ बड़े भानजे हैं. अमृतसर के
रहने वाले हैं. गृहस्थ हैं २८ वर्ष उमर है.
एफ. ए. पास है स्कूल में भी अध्या

भियाः ॥ कट्वम्ललवणात्युष्णतीक्ष्णरूक्षविदा-
हिनः। आहारा राजसस्येष्टा दुःखशोकामयप्रदाः॥
यातयामं गतरसं पूति पर्युषितं च यत्।
उच्छिष्टमपि चामेध्यं भोजनं तामसप्रियम् ॥१०॥
अफलाकाङ्क्षिभिर्यज्ञो विधिदृष्टो य इज्यते।

---

कार्तिक शुक्ल ११ शुक्र ] २० नवम्बर [ मार्गशीर्ष ३

(प्रबोधिनी ११ व्रतम्)

आज दोनो समय का आहार 'यहीं' तथा 'निवास भी'
व्युत्पन्न है. योग की तरफ बहुल प्रवृत्ती है
मांस, पष्पाद: है. दूध रातको पीया.

---

१०-१-३२ र. — दोनो समय हां उसी
ब्राह्मण के घर से रोटी आयी थी. निवास ही
इसी ज्योतिषी के पास. दूध.

११-१-३२ सो. — दोनो समय उसी
ब्राह्मणके यहां से रोटी आयी थी. निवास ही
यहीं. दूध.

---

१२-१-३२ मं. ✓ आज उस ब्राह्मण ने एक
भाकर दी थी. रात को भात खिलाया. दिन में
१॥ सेर पक्का दूध रात को आध सेर पक्का पी
कर चार बजे आदी गया.

यष्टव्यमेवेति मनः समाधाय स सात्त्विकः ॥११॥
अभिसन्धाय तु फलं दम्भार्थमपि चैव यत् ।
इज्यते भरतश्रेष्ठ तं यज्ञं विद्धि राजसम् ॥१२॥
विधिहीनमसृष्टान्नं मन्त्रहीनमदक्षिणम् ।
श्रद्धाविरहितं यज्ञं तामसं परिचक्षते ॥१३॥



आज दोनो समय भोजन तथा निवास भी यहीं.

१३-१-३२ बु. — दोनो समय उसी ब्राह्मण ने रोटी ... निवास आदि यहीं. दूध.

१४-१-३२ बृ. — आज मकर संक्रान्ति आज कूपोदक से स्नान किया. फिर उसी ब्राह्मण ने भोजन ... रात को पं. कृष्णदत्त ... के पास भोजन किया. दूध.

१५-१-३२ शु. — आज दवा ... उसी ब्राह्मण ने दी थी. दूध आधसेर पीया था. दिन को भोजन नहीं. रात को पं. कृष्णदत्त के पास दूध भात भोजन. फिर रात को दूध ... बुखार फिर भी ...

देवद्विजगुरुप्राज्ञपूजनं शौचमार्जवम् ।
ब्रह्मचर्यमहिंसा च शारीरं तप उच्यते ॥१४॥
अनुद्वेगकरं वाक्यं सत्यं प्रियहितं च यत् ।
स्वाध्यायाभ्यसनं चैव वाङ्मयं तप उच्यते॥१५॥
मनःप्रसादः सौम्यत्वं मौनमात्मविनिग्रहः ।

कार्तिक शुक्ल १२ रवि ] २२ नवम्बर [ मार्गशीर्ष ५

आज प्रदोष नियमानुसार रात्रीको पारण. दिनभर मौन. आज वेदपाठी पढ़िया रगया.

आज शङ्कराचार्यकृत देवीमानसपूजन स्तोत्रकी टीका समाप्तकी इसका नाम तिलक रक्खा है.

१६-१-३२ शनि. ~ आज दोपहरका भोजन पं. कृष्णदत्त ले आया था किसी ब्राह्मणके घरसे. रात्रीमें कृष्णदत्त के पास भो. दूध कृष्णदत्तके पास दूध रोजका

१७-१-३२ रवि. ~ दोपहरकाभो. उसी ब्राह्मणके घर से कृष्णदत्त ले आया था. रातको कृष्णदत्त के पास भो. निवासडेरेपर दूध.

भावसंशुद्धिरित्येतत्तपो मानसमुच्यते ॥१६॥
श्रद्धया परया तप्तं तपस्तत्त्रिविधं नरैः।
अफलाकाङ्क्षिभिर्युक्तैः सात्त्विकं परिचक्षते॥
सत्कारमानपूजार्थं तपो दम्भेन चैव यत्।
क्रियते तदिह प्रोक्तं राजसं चलमध्रुवम् ॥१८॥



आजदो नो समय भो. तथा निवासभी यहीं.
)॥ किशमीशि खाई.

१८-१-३२ सोम – दोपहर उसी ब्राह्मण के घरसे कृष्ण दत्त ले आया था रात को कृष्ण दत्तके पास भो. निवासादि स्थानपर. दूध.

१९-१-३२ मं. – दोपहर उसी ब्राह्मण के घरसे भो. कृष्ण दत्त ले आया. रात को कृष्ण दत्त के पास भो. निवास स्थानपर. दूध.

२०-१-३२ बु. आज दोपहर भो. कुछ नहीं
रातको कृष्णदत्त के पास
निवास स्थानपर दूध. आज कृष्ण मूर्ति प्राप्त
[illegible]

मूढग्राहेणात्मनो यत्पीडया क्रियते तपः।
परस्योत्सादनार्थं वा तत्तामसमुदाहृतम् ॥१९॥
दातव्यमिति यद्दानं दीयतेऽनुपकारिणे।
देशे काले च पात्रे च तद्दानं सात्त्विकं स्मृतम् २०
यत्तु प्रत्युपकारार्थं फलमुद्दिश्य वा पुनः।

---



आज दो नो समय भो. तथा निवास भी यही

२१-१-३२ बृहस्प. — आज प्रदोष मौन नियमाऽनुसार रात को पारण कृष्णदत्त के पास. दूध.

२२-१-३२ शु. दोपहर उसी ब्राह्मण के घर से रोटी आयी थी. रात को कृष्ण दत्त के पास. निवास स्थान पर. दूध.

२३-१-३२ शनि पौष शु. पूर्णिमा — आज दोपहर उसी ब्राह्मण के घर से रोटी आयी. रात को कृष्णदत्त के पास. निवास स्थान पर. आज पं. कारतेराम ने एक बुरी ... कह डाली जिससे चित्त हमारा

दीयते च परिक्लिष्टं तद्दानं राजसं स्मृतम् ॥२१॥
अदेशकाले यद्दानमपात्रेभ्यश्च दीयते ।
असत्कृतमवज्ञातं तत्तामसमुदाहृतम् ॥२२॥
ॐ तत्सदिति निर्देशो ब्रह्मणस्त्रिविधः स्मृतः ।
ब्राह्मणास्तेन वेदाश्च यज्ञाश्च विहिताः पुरा ॥२३॥



(कार्तिक पूर्णिमा)

आज भोजन [illegible]र के शामको यहांसे 'समलोटी' गया
सूरज डूबते समय 'समलोटी' पहुंचा.
'अगस्त्वाउ' पं. बदरी दत्तके घरसे 'समलोटी'
पं. गोपाराम का घर २॥ मील है रातको
पं. गोपाराम के घरभो. तथा निवास.

बहुत दुखी हुआ.

२४-११-३२ र. आज जानेको रेलवे
स्टेशनपर गया था. वहांसे कृष्णदत्तके साथ
चलनेकी प्रतिज्ञा के कारण लौट आया.
आजभो. एक ब्राह्मण के घर. रातको रोजका
दूध. कृष्णदत्तने आज बहुत बुरा बर्ताव किया
और [illegible] कहे अस्तु

तस्मादोमित्युदाहृत्य यज्ञदानतपःक्रियाः।
प्रवर्तन्ते विधानोक्ताः सततं ब्रह्मवादिनाम् ॥२४॥
तदित्यनभिसंधाय फलं यज्ञतपःक्रियाः।
दानक्रियाश्च विविधाः क्रियन्ते मोक्षकाङ्क्षिभिः
सद्भावे साधुभावे च सदित्येतत्प्रयुज्यते।

मार्गशीर्ष कृष्ण १ गुरु ] २६ नवम्बर [मार्गशीर्ष ६

आज यहां बाउडी पर शौ- चस्नानादि करके
दोनो समय भो- तथा निवास यहीं.

हमारे जाने का आज का मुहूर्त सभों ने मिलकर
न करा किया.

२५-१-३२ सो. ~ आज दोपहर उसी
ब्राह्मण के घर से रोटी आयी थी. रात को कुछ
नहीं खाया. दूध. निवास स्थान पर

२६-१-३२ मं. ~ आज उसी ब्राह्म-
ण के यहां से रोटी आयी थी. रात को नहीं
खाया. दूध. निवासा स्थान पर.

[illegible]-१-३२ बु. ~ आज उसी ब्राह्म-
[illegible] हां से रोटी आयी थी. रात को

प्रशस्ते कर्मणि तथा सच्छब्दः पार्थ युज्यते ॥२६॥

यज्ञे तपसि दाने च स्थितिः सदिति चोच्यते।

कर्म चैव तदर्थीयं सदित्येवाभिधीयते ॥२७॥

अश्रद्धया हुतं दत्तं तपस्तप्तं कृतं च यत्।

---



आज यहां बाउली पर स्नानादि किया तथा दोपहर
भोजन यहां.
आज डाढी हजामत) ॥ दिये ० -) मिसमिस
फिर शाम को गणे आया शाम को रोटी खाता
त पाति पास पड़ीं.
पं. जगदीशराम जी के यहां गया था उनका लड़का बहुत
बीमार है.

कुछ नही खाया. दूध. निवासा दिये हीं.

---

२८-१-३२ बृ - आज सुबः रेल
से स्यालकोट गया. ॥)- टिकट उसी
ब्राह्मणने दिया. ३ रु. पं. काशीराम
ने दिये. उस ब्राह्मण का नाम पं: केदारनाथ
पांडा है.

असदित्युच्यते पार्थ न च तत्प्रेत्य नो इह ॥२८॥

ॐतत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे श्रद्धात्रयविभाग-योगो नाम सप्तदशोऽध्यायः ॥१७॥

---

मार्गशीर्ष कृष्ण ३ शनि ] २८ नवम्बर [मार्गशीर्ष ११

आज दोनों समय भोजन तथा निवास यहीं
आज भी जगाधरी शहर के पास गया था. इसका नक्शा
रात को भर गया था.

गाडीसे उतरनेके बाद यहां तेजा सिंह का मन्दिर देखकर फिर कणकमण्डी के मन्दिर में आकर ठहरा. सन्यासियों के अधिकार में यह मन्दिर है. दिन में कुछ नहीं खाया. तबियत बीमार थी इसलिये. रातको ≡)॥ दूध )। मीठा.
रात भर निवास यहां मन्दिर में.

२९-१-३२ शु.
आज सुबः शौचादि करके बाजार गया. आज यहां हडताल थी. ≡) जलेबी एक अधखुले दूकान से ली पर बहुत खराब होनेसे

ॐ

अष्टादशोऽध्यायः

अर्जुन उवाच

संन्यासस्य महाबाहो तत्त्वमिच्छामि वेदितुम् ।
त्यागस्य च हृषीकेश पृथक्केशिनिषूदन ॥ १ ॥

मार्गशीर्ष कृष्ण ४ रवि ] २९ नवम्बर [मार्गशीर्ष १२

आज दोनों समय भोजन तथा निवास यहीं

फेंक दी. फिर दोपहर यहांके बडे डेरेमें
रोटी खाई. रातको कुछ नहीं खाया।
निवास यहीं.

30-9-32 श. — आज सुबः शौचा
दिकरके दोपहर बडे डेरे रोटी खाई
एक नागर ब्राह्मण से जानपहचान हुई.
इसकी जन्मपत्री देखी थी. इसने ।) दिये.
–) रेवडी मैंने खाई रातको कुछ नहीं.
निवास यहीं.

31-9-32 र. — आज सुबः शौचादि
करके ॥) देकर वजीराबाद आया यहां –)॥
दूध –)। जलेबी खाकर एक मन्दिरमें बैठकर
फिर ॥) देकर टांगेसे गुजरात

श्रीभगवानुवाच
काम्यानां कर्मणां न्यासं संन्यासं कवयो विदुः ।
सर्वकर्मफलत्यागं प्राहुस्त्यागं विचक्षणाः ॥२॥
त्याज्यं दोषवदित्येके कर्म प्राहुर्मनीषिणः ।
यज्ञदानतपःकर्म न त्याज्यमिति चापरे ॥३॥

मार्गशीर्ष कृष्ण ५ सोम ] ३० नवम्बर [मार्गशीर्ष १२

दोनों समय भो. तथा निवास यहीं

आया. यहां एक मन्दिर में ठहरा यहां का बैरागी साधु मजाबारीनाथ रहे. यहां रात को रोटी खाई. निवास भी यहीं. रात को एक खत्री ने दूध पिलाया.

१-२-३२ सोम — आज यहीं मन्दिर मे दोनो समय रोटी खाई. एक खत्री ने आज बहुत आग्रह से ठहराया. उसके दोनो लड़कों की जन्मपत्रिकाएं देखीं. रात को उसने दूध भेजा था. एक रजाई एक तलाई (गद्दी) भेज दी थी. रात को निवास मन्दिर में ही. आज एक कार्ड डेराडून भेजा.

ता. २-२-३२ मं. — आज यहीं खत्री नी ३ सेर आटा २ सेर चावल १ सेर माष की दा

निश्चयं शृणु मे तत्र त्यागे भरतसत्तम।
त्यागो हि पुरुषव्याघ्र त्रिविधः संप्रकीर्तितः॥४॥
यज्ञदानतपःकर्म न त्याज्यं कार्यमेव तत्।
यज्ञो दानं तपश्चैव पावनानि मनीषिणाम्॥५॥
एतान्यपि तु कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा फलानि च।



आज गौरी मन्दिरके पर भो. दोपहर. रा. भो
डेरे पर रोटी खाना तथा निवास.
जोशीके लडकेका जन्मदिनथा.
२॥ [illegible]

आधसेर मूंगकी दाल १॥ पावघी और
१५. देगई. आज दोनोसमय खाना तथा रात
सोना यहीं. दूध. यह सब मैने मन्दिरके साधुको
दे दिया. रुपया भी दे दिया.

ता. ३-२-३२ बु. ~ आज दोनो समय भो.
तथा निवास यहीं. रातको दूध.

ता. ४-२-३२ बृ. ~ आजप्रदोष.
दिनभरमौन रातको नियमाऽनुसारपारण.

ता. ५-२-३२ शु. ~ आज भंजरि देवी
स्वश्रानीके पतिकीजन्मपत्री देखा दिया,
दोनोसमय मन्दिरमें भो. तथा निवास.
रातको दूध.

कर्तव्यानीति मे पार्थ निश्चितं मतमुत्तमम् ॥६॥
नियतस्य तु संन्यासः कर्मणो नोपपद्यते।
मोहात्तस्य परित्यागस्तामसः परिकीर्तितः ॥७॥
दुःखमित्येव यत्कर्म कायक्लेशभयात्त्यजेत्।
स कृत्वा राजसं त्यागं नैव त्यागफलं लभेत् ॥८॥



दोनो समय भो. तथा निवास यहीं.

६-२-३२ श. ~ आज मौजी अमावास्या. स्नान यहां कुए पर किया. दोनो समय भो. यहां निवास भी यहां. रात को दूध.

७-२-३२ र. ~ आज दोनो समय भो तथा निवास यहीं. रात को दूध.

८-२-३२ सोम आज दोनो समय भो तथा निवास यहीं. ग्सा बुन. आज रात को फिर बुखार आया. आज शहर में घूमने गये थे.

९-२-३२ मं. ~ दोनो समय भो. तथा निवास यहीं. रात को दूध. तबियत ठीक नहीं है

१०-२-३२ बु. ~ आज श्रीकृष्ण ने हरद्वकी चिट्ठी लिखी. दोनो समय भो. तथा निवास यहीं

कार्यमित्येव यत्कर्म नियतं क्रियतेऽर्जुन।
सङ्गं त्यक्त्वा फलं चैव स त्यागः सात्त्विको मतः
न द्वेष्ट्यकुशलं कर्म कुशले नानुषज्जते।
त्यागी सत्त्वसमाविष्टो मेधावी छिन्नसंशयः।१०।
न हि देहभृता शक्यं त्यक्तुं कर्माण्यशेषतः।

---

मार्गशीर्ष कृष्ण ९ गुरु ] २ दिसम्बर [मार्गशीर्ष १६

दोनो समय भो. तथा निवास यहीं.

११-२-३२ बृ. ~ आज श्रीकण्ठ नेहरू का भेजा ११रु. (ग्यारा) रु. मनी आर्डर मिला. १रु. मन्दिर में समर्पण किया. दोनो समय भो. तथा निवास यहीं. रात को दूध. आज यहां [illegible] गया था
वसंत पंचमी
[illegible]

१२-२-३२ शु. — आज दोनो समय भो. तथा निवास यहीं. आज रात बुखार आया. रात दूध.

१३-२-३२ श. रथ सप्तमी आज दोपहर भोजन यहीं. आज पुरण पोळी खाई. रातको भोजन नहीं किया

१४-२-३२ र. ~ दोनो समय भो. तथा निवास यहीं आज रात बुखार आया. रातको दूध पीया

१५-२-३२ सोम — दोनो समय भो. तथा निवास यहीं. रातको दूध पीया

१६-२-३२ मं. - आज दोनो समय भो. तथा निवास यहीं.

यस्तु कर्मफलत्यागी स त्यागीत्यभिधीयते ॥११॥
अनिष्टमिष्टं मिश्रं च त्रिविधं कर्मणः फलम्।
भवत्यत्यागिनां प्रेत्य न तु संन्यासिनां क्वचित् १२
पञ्चैतानि महाबाहो कारणानि निबोध मे।
सांख्ये कृतान्ते प्रोक्तानि सिद्धये सर्वकर्मणाम् ॥



आजयहां भोजनादि करके शामको 'शमकोटी' पहुंचा. साथ पं. जोगी ख़र्जुर्था भांद्रेयाल तक. रातको रोटी नहीं खाई दूध पीया। पं. निहालचन्द पण्डितके घर निवास

१७-२-३२ बु. आज दोनो समय भो. तथा निवास यहीं.

१८-२-३२ वृ. - आज महाशुद्ध एकादशी. दोनो समय भो. तथा निवास. रातको दूध

१९-२-३२ शु. - आज प्रदोष. नियमानुसार रातको पारण. दिनभर मौन.

२०-२-३२ श. - आज दोनो समय भो. तथा निवास यहीं. आज हमारे कैम्प से जूते कोई चुरा ले गया। आज दो महीने हुए थे. नये के नये थे. अस्तु.

२१-२-३२ र. - आज दोनो समय भो. तथा निवास यहीं. रातको दूध पीया.

अधिष्ठानं तथा कर्ता करणं च पृथग्विधम् ।
विविधाश्च पृथक्चेष्टा दैवं चैवात्र पञ्चमम् ॥१४॥
शरीरवाङ्मनोभिर्यत्कर्म प्रारभते नरः ।
न्याय्यं वा विपरीतं वा पञ्चैते तस्य हेतवः ॥१५॥
तत्रैवं सति कर्तारमात्मानं केवलं तु यः ।

मार्गशीर्ष कृष्ण ११ शनि] ५ दिसम्बर [मार्गशीर्ष १८

आज सुबः शौचादि करके बाउडी पर
स्नानादि किया. यहां पं. उमादत्त अवस्थी
मिला इससे बातचीत हुई. बाद दोनो समय
पं. निहालचन्द के घर दोनो समय भो. तथा
निवास. आज यहां रेलवे स्टेशन 'समजोटी'
घूमने गया था. साथ निहाल पण्डित था.
वहां से आकर समजोटी बाजार देखा एक
महाजन के दुकान पर बैठे थे.

२२-२-३२ सो. माघ २५. पूर्णिमा - आज दोनो सम-
-य भो. तथा निवास यहीं. ।। रेवडी.

२३-२-३२ मं. - दोनो समय मन्दिर में भो. तथा
निवास. आज बुखार आया. ।। कितना भी [illegible]
।। रेवडी [illegible]

पश्यत्यकृतबुद्धित्वान्न स पश्यति दुर्मतिः ॥१६॥
यस्य नाहंकृतो भावो बुद्धिर्यस्य न लिप्यते।
हत्वापि स इमाँल्लोकान्न हन्ति न निबध्यते ॥१७॥
ज्ञानं ज्ञेयं परिज्ञाता त्रिविधा कर्मचोदना।
करणं कर्म कर्तेति त्रिविधः कर्मसंग्रहः ॥१८॥

मार्गशीर्ष कृष्ण १२ रवि] ६ दिसम्बर [मार्गशीर्ष १६

आज सुबः बाउडी पर शौचादि कर के स्नाना-
दि करके एक महाजनणी के घर गया था
यह 'भवन' के ढुण्ढी ब्रह्मचारी की शिष्या है
यहां हलवा खाया दूध पीया। फिर पं. नि-
हालचन्द के घर भोजन करके शाम को
'अमुवाडी' पं. जोगीश्वर कुर्द के घर पहुंचा
रात को भोजन। निवास यहीं. बैजनाथ से
मिला हुआ ब्रह्मचारी फिर यहां मिला. अपनी
गउवी पं. निहालचन्द पण्डित के घर भेज आया.

२४-२-३२ बु. आज दोनों समय भो. तथा
निवास यहीं. दूध पीया ।॥ बरफ.

२५-२-३२ वृ.- आज दोनों समय भो. तथा
निवास यहीं.

ज्ञानं कर्म च कर्ता च त्रिधैव गुणभेदतः।
प्रोच्यते गुणसंख्याने यथावच्छृणु तान्यपि॥१९॥
सर्वभूतेषु येनैकं भावमव्ययमीक्षते।
अविभक्तं विभक्तेषु तज्ज्ञानं विद्धि सात्त्विकम्॥२०
पृथक्त्वेन तु यज्ज्ञानं नानाभावान्पृथग्विधान्

मार्गशीर्ष कृष्ण १२ सोम] ७ दिसम्बर [मार्गशीर्ष२०

आज प्रदोष मौन। नियमाऽनुसार रातको पारण. आज चामुण्डा गया था शौचस्नाना-दि करके नान्दिकेश्वर दर्शन किया)। पश्चात् चामुण्डा दर्शन)। पढाया शाम को अम्बुवाडी आया. रात्री में यहां निवास. रात को बुखार आया.

२६-२-३२ गु. दोनो समय भो. तथा निवास यहीं

२७-२-३२ श. ~ आज दोनो समय भो. तथा निवास यहीं. आज भंगपीया था. आधपाव दूध गंगापुत्रने

२८-२-३२ र. दोनो समय भो. तथा निवास यहीं रातको दूध पीया. एक रबडी दे गया था.

२९-२-३२ सो. भो. एक समय. रात को कुछ नहीं रबडी दूध दे गया था और रुपया भी. पर आज बुखार बहुत जोरका आया. दूध नहीं पी सका. आज. नारायण गिरी देखने आया था.

वेत्ति सर्वेषु भूतेषु तज्ज्ञानं विद्धि राजसम् ॥२१॥
यत्तु कृत्स्नवदेकस्मिन्कार्ये सक्तमहैतुकम् ।
अतत्त्वार्थवदल्पं च तत्तामसमुदाहृतम् ॥२२॥
नियतं सङ्गरहितमरागद्वेषतः कृतम् ।
अफलप्रेप्सुना कर्म यत्तत्सात्त्विकमुच्यते ॥२३॥



आज सुब: शौचास्नानादि यहां करके
दोपहर भो. यहीं. फिर नगरोटा गया.
रातको भो. तथा निवास पं. किरूजो तसीकेघर
रातको बुखार आया.
जोगीश्वर कुई से एक गडवी ली.

यच्तु कामेप्सुना कर्म साहंकारेण वा पुनः।
क्रियते बहुलायासं तद्राजसमुदाहृतम् ॥२४॥
अनुबन्धं क्षयं हिंसामनवेक्ष्य च पौरुषम्।
मोहादारभ्यते कर्म यत्तत्तामसमुच्यते ॥२५॥
मुक्तसङ्गोऽनहंवादी धृत्युत्साहसमन्वितः।



आज सुबः यहां शौचादि करके एक बाउडी पर
स्नानादि करके पं. चौधरी के यहां दोपहर का
भो. करके पं. केशव श्रोत्रियसे मिलकर 'भवन'
गया. १रु. चौधरी ने जबरदस्ती दिया
शामको ७ मील पैदल चलकर 'भवन' पहुंचा.
भगवतीदर्शन १। चढाया. रात्रीमें निवास
श्री लक्ष्मणचूण्डी के घर. रात रोटी नहीं खाई
रातको बुखार [illegible] आया. जोगीश्वर कुंड से
ली हुई गडवी फूटी। निकली उसको पं. किरू
जोतसी के घर रखकर वहांसे दूसरी गडवी
ली.

सिद्धयसिद्धयोर्निर्विकारःकर्ता सात्त्विक उच्यते
रागी कर्मफलप्रेप्सुर्लुब्धो हिंसात्मकोऽशुचिः।
हर्षशोकान्वितः कर्ता राजसः परिकीर्तितः॥२७॥
अयुक्तः प्राकृतः स्तब्धः शठो नैष्कृतिकोऽलसः।
विषादी दीर्घसूत्री च कर्ता तामस उच्यते॥२८॥

---

मार्गशीर्ष शुक्ल १ गुरु ] १० दिसम्बर [मार्गशीर्ष २३

आज शौ-चस्नाना। दीरभग्में करके
भगवतीका दर्शना किया.
११ पेड़ा। दही खाया.
। फिर बालकृष्णके घर भो. करके गौरीशाह
के दूकानपर बैठाथा। फिर दुर्गी ब्रह्मचारी
के पास गयाथा. वहां दूधपीकर पद्मनाभ
कुई के साथ। फिर शामको ठाणे आया.
रातको पं. बदरीदत्तके घर निवास,
रोटी नहीं खाई रातको बुखार आया.

बुद्धेर्भेदं धृतेश्चैव गुणतस्त्रिविधं शृणु।
प्रोच्यमानमशेषेण पृथक्त्वेन धनंजय ॥२९॥
प्रवृत्तिं च निवृत्तिं च कार्याकार्ये भयाभये।
बन्धं मोक्षं च या वेत्ति बुद्धिः सा पार्थ सात्त्विकी
यया धर्ममधर्मं च कार्यं चाकार्यमेव च।

---



आज भो. एकसमय.
रात को नहीं क्यों कि बुखार की शिकायत
आज स्नान नहीं किया.
)॥ किशमिश

अयथावत्प्रजानाति बुद्धिः सा पार्थ राजसी ॥३१॥
अधर्मं धर्ममिति या मन्यते तमसावृता ।
सर्वार्थान्विपरीतांश्च बुद्धिः सा पार्थ तामसी ३२
धृत्या यया धारयते मनः प्राणेन्द्रियक्रियाः ।
योगेनाव्यभिचारिण्या धृतिः सा पार्थ सात्त्विकी

मार्गशीर्ष शुक्ल २ शनि] १२ दिसम्बर [मार्गशीर्ष २५

आज भो. यहीं. एकसमय
स्नान नहीं किया. रातको कुछ नहीं खाया
रातको बुखार आया
)॥ किशोर.

यया तु धर्मकामार्थान्धृत्या धारयतेऽर्जुन।
प्रसङ्गेन फलाकाङ्क्षी धृतिः सा पार्थ राजसी॥
यया स्वप्नं भयं शोकं विषादं मदमेव च।
न विमुञ्चति दुर्मेधा धृतिः सा पार्थ तामसी ३५
सुखं त्विदानीं त्रिविधं शृणु मे भरतर्षभ।



आज भी एक समय . रात को कुछ नहीं
)॥ कि राम्ति रा आजस्ना ना किया.
आज बुखार जूडी का रात को बहुत
जोरसे आया.
४ रु. ठंजीके कोदिये जूते और
२ कमीजें लाने को

अभ्यासाद्रमते यत्र दुःखान्तं च निगच्छति ॥३६॥
यत्तदग्रे विषमिव परिणामेऽमृतोपमम् ।
तत्सुखं सात्त्विकं प्रोक्तमात्मबुद्धिप्रसादजम् ।३७।
विषयेन्द्रियसंयोगाद्यत्तदग्रेऽमृतोपमम् ।
परिणामे विषमिव तत्सुखं राजसं स्मृतम् ॥३८॥



आज भी एक बार. रात को कुछ नही.
आज बुखार नही आया. पर पसीना आया.
आज स्नान नही किया.
ऐसे तबियत ठीक थी.

यदग्रे चानुबन्धे च सुखं मोहनमात्मनः ।
निद्रालस्यप्रमादोत्थं तत्तामसमुदाहृतम् ॥३९॥
न तदस्ति पृथिव्यां वा दिवि देवेषु वा पुनः ।
सत्त्वं प्रकृतिजैर्मुक्तं यदेभिःस्यात्त्रिभिर्गुणैः॥४०॥
ब्राह्मणक्षत्रियविशां शूद्राणां च परंतप ।



आज भी. दोनो समय. रात सिर्फ एक रोटी
स्नान नहीं.

कर्माणि प्रविभक्तानि स्वभावप्रभवैर्गुणैः ॥४१॥
शमो दमस्तपः शौचं क्षान्तिरार्जवमेव च।
ज्ञानं विज्ञानमास्तिक्यं ब्रह्मकर्म स्वभावजम् ॥४२॥
शौर्यं तेजो धृतिर्दाक्ष्यं युद्धे चाप्यपलायनम्।
दानमीश्वरभावश्च क्षात्रं कर्म स्वभावजम् ॥४३॥



आज भी एकबार रात को नहीं खाया.
आज बुखार आया रात को.
स्नान नहीं.

कृषिगौरक्ष्यवाणिज्यं वैश्यकर्म स्वभावजम् ।
परिचर्यात्मकं कर्म शूद्रस्यापि स्वभावजम् ॥४४॥
स्वे स्वे कर्मण्यभिरतः संसिद्धिं लभते नरः ।
स्वकर्मनिरतः सिद्धिं यथा विन्दति तच्छृणु ॥४५॥
यतः प्रवृत्तिर्भूतानां येन सर्वमिदं ततम् ।

---



आज दोनो समय पाठ किया.
बुखार नहीं आया.
स्नान नहीं किया.

स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य सिद्धिं विन्दति मानवः ॥४६॥
श्रेयान्स्वधर्मो विगुणः परधर्मात्स्वनुष्ठितात्।
स्वभावनियतं कर्म कुर्वन्नाप्नोति किल्बिषम् ॥४७॥
सहजं कर्म कौन्तेय सदोषमपि न त्यजेत्।
सर्वारम्भा हि दोषेण धूमेनाग्निरिवावृताः ॥४८॥



आज एक समय भो. रातको कुछ नहीं
रातको बुखार आया.
)॥ किसमिस )॥ छोहारे खाये.

असक्तबुद्धिः सर्वत्र जितात्मा विगतस्पृहः ।
नैष्कर्म्यसिद्धिं परमां संन्यासेनाधिगच्छति ४६
सिद्धिं प्राप्तो यथा ब्रह्म तथाप्नोति निबोध मे ।
समासेनैव कौन्तेय निष्ठा ज्ञानस्य या परा ॥५०॥
बुद्ध्या विशुद्धया युक्तो धृत्यात्मानं नियम्य च ।

---

मार्गशीर्ष शुक्ल १० शनि] १६ दिसम्बर [पौष ३

आज दो२ कमीजें और जूता रंगीला
ले आया. दो कमीजोंमें ६ गज कपड़ा
१रु. ।।।=) का ।।) सिलाई -) बटन १रु. ।।-
जूता क्रेपसोल ३६ नं. का जापानी
आज एक समय भो.
रातको बुखार आया.

शब्दादीन्विषयांस्त्यक्त्वा रागद्वेषौ व्युदस्य च
विविक्तसेवी लघ्वाशी यतवाक्कायमानसः ।
ध्यानयोगपरो नित्यं वैराग्यं समुपाश्रितः ॥५२॥
अहंकारं बलं दर्पं कामं क्रोधं परिग्रहम् ।
विमुच्य निर्ममः शान्तो ब्रह्मभूयाय कल्पते ॥५३॥

मार्गशीर्ष शुक्ल ११रवि ] २० दिसम्बर [ पौष ४

(गीता-जयन्ती)

आज एकसमयभी. रातको कुछ नही
रातको बुखार आया.
आजगीतापारायण कियाथा.

ब्रह्मभूतः प्रसन्नात्मा न शोचति न काङ्क्षति ।
समः सर्वेषु भूतेषु मद्भक्तिं लभते पराम् ॥५४॥
भक्त्या मामभिजानाति यावान्यश्चास्मि तत्त्वतः
ततो मां तत्त्वतो ज्ञात्वा विशते तदनन्तरम् ॥५५॥
सर्वकर्माण्यपि सदा कुर्वाणो मद्व्यपाश्रयः ।

---

मार्गशीर्ष शुक्ल १२ सोम] २१ दिसम्बर [ पौष ५

आज एकसमय यहां भो·
शामको कान्हू पण्डितके घर गया था रातमें
वहीं रहा. रातको भोजन भी नहीं किया.

मत्प्रसादादवाप्नोति शाश्वतं पदमव्ययम् ॥५६॥
चेतसा सर्वकर्माणि मयि संन्यस्य मत्परः ।
बुद्धियोगमुपाश्रित्य मच्चित्तः सततं भव ॥५७॥
मच्चित्तः सर्वदुर्गाणि मत्प्रसादात्तरिष्यसि ।
अथ चेत्त्वमहंकारान्न श्रोष्यसि विनङ्क्ष्यसि ५८



आजसुबः उठकर बद्रीदत्तके यहाँ आया.
आजप्रदोषानियमाऽनुसार पारणरातको.
रातकोफिरबुखार आया.

यदहंकारमाश्रित्य न योत्स्य इति मन्यसे।
मिथ्यैष व्यवसायस्ते प्रकृतिस्त्वां नियोक्ष्यति५६
स्वभावजेन कौन्तेय निबद्धः स्वेन कर्मणा।
कर्तुं नेच्छसि यन्मोहात्करिष्यस्यवशोऽपि तत्॥
ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति।

मार्गशीर्ष शुक्ल १४ बुध ] २३ दिसम्बर [ पौष ७

आज सुबः उठकर सूर्योदयके पहिले नागूरोटे आये. यहां स्टेशनपर जाकर चौने नौकरे गाडी में बैठे साथ पं. बदरीदत्त थे टिकट मंगवालनका १रु. का मेरा पं. बदरीदत्तने ही लिया. फिर ११॥ बजे हमदोनों मंगवालउतरे यहांस उमीलहरीडों' में दीनानाथ से मिलकर। फिर उसके घर कलनौर' गये. रास्तेमें गाडीमें 'तुलाराम पुरोहित' भी मिलाथा. रातको यहांदो दीरवाई रातमें निवास रहा।

भ्रामयन्सर्वभूतानि यन्त्रारूढानि मायया ॥६१॥
तमेव शरणं गच्छ सर्वभावेन भारत ।
तत्प्रसादात्परां शान्तिं स्थानं प्राप्स्यसि शाश्वतम्
इति ते ज्ञानमाख्यातं गुह्याद्गुह्यतरं मया ।
विमृश्यैतदशेषेण यथेच्छसि तथा कुरु ॥६३॥



आज यहां (दीनानाथ पाधा मास्टर of कन्या पाठशाला हटाड़ा) भोजन करके भगरोल स्कूल यहां से ४ मील गये थे साथ पं. बद्रीदत्त, दीनानाथ, तुलाराम, थे. आज दीनानाथ ने सत्यनारायण पूजा की पं. बद्रीदत्त ने कथा बांची. रात को भो. तथा निवास यहीं.

सर्वगुह्यतमं भूयः शृणु मे परमं वचः।
इष्टोऽसि मे दृढमिति ततो वक्ष्यामि ते हितम्।६४।
मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु।
मामेवैष्यसि सत्यं ते प्रतिजाने प्रियोऽसि मे॥६५॥
सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।



आज यहां (दीनानाथ के घर)
खा पी कर 'जिणोटा' गये थे. साथ
पं. बदरी दत्त और दीनानाथ थे.
आज रात को दीनानाथ के ससुर के घर
'जिणोटा' में ही रहे हमको बुखार आया.
इस कारण हमने कुछ खाया नहीं
दीनानाथ के साले नाम पं. जगतराम पण्डि
त है. आज 'प्रभाव' 'पण्डितेड' हो कर
फिर जिणोटे ही आये.

अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः ६६
इदं ते नातपस्काय नाभक्ताय कदाचन ।
न चाशुश्रूषवे वाच्यं न च मां योऽभ्यसूयति ॥६७॥
य इमं परमं गुह्यं मद्भक्तेष्वभिधास्यति ।
भक्तिं मयि परां कृत्वा मामेवैष्यत्यसंशयः ॥६८॥



आज यहां (जगतराम के यहां जिणोटा) रोटी खाकर 'कतनौर' आये. फिर शाम को पुरोहित 'ध्रुव' के यहां 'डाड' मे होके आये. साथ पं. बदरीदत्त थे. रात को भो. तथा निवास यहां ध्रुव के घर.

न च तस्मान्मनुष्येषु कश्चिन्मे प्रियकृत्तमः ।
भविता न च मे तस्मादन्यः प्रियतरो भुवि ॥६९॥
अध्येष्यते च य इमं धर्म्यं संवादमावयोः ।
ज्ञानयज्ञेन तेनाहमिष्टः स्यामिति मे मतिः ॥७०॥
श्रद्धावाननसूयश्च शृणुयादपि यो नरः ।



आज यहां से वापिस 'डुमेटा' गये साथ पं. बद-रीदत्त और पं. दीनानाथ थे. वहां आध घण्टा ठहरकर फिर लौटकर 'कतनौर' आये. रास्ते में अंधेरा हो गया 'गजनदी' को लांघना था नकुल तक रोशनी पाई. कतनौर से डुमेटा' २॥ मील पक्का है. रात को दीनानाथ के यहां। दिन को 'ध्रुव पुरोहित' के यहां भोजन किया.

सोऽपि मुक्तः शुभाँल्लोकान्प्राप्नुयात्पुण्यकर्मणाम्
कच्चिदेतच्छ्रुतं पार्थ त्वयैकाग्रेण चेतसा।
कच्चिदज्ञानसंमोहः प्रनष्टस्ते धनंजय ॥७२॥
अर्जुन उवाच
नष्टो मोहः स्मृतिर्लब्धा त्वत्प्रसादान्मयाच्युत।



आज यहां (दीनानाथ के घर) भोजन
करके ध्रुवपुरोहित के घर पं. बदरीदत्त के
साथ गया. रात को निवास यहीं. भो. कुछ नहीं
किया. रात को बुखार आया.

स्थितोऽस्मि गतसन्देहः करिष्ये वचनं तव ॥७३॥
संजय उवाच
इत्यहं वासुदेवस्य पार्थस्य च महात्मनः ।
संवादमिममश्रौषमद्भुतं रोमहर्षणम् ॥७४॥
व्यासप्रसादाच्छ्रुतवानेतद्गुह्यमहं परम् ।



आज सुबः पं. बक्षीराम कां गङा चले गये
मैं कत नौर' दीनानाथके घर आया.
आज दोनो समय भो. तथा निवास
दीनानाथके घर.

योगं योगेश्वरात्कृष्णात्साक्षात्कथयतः स्वयम्
राजन्संस्मृत्य संस्मृत्य संवादमिममद्भुतम् ।
केशवार्जुनयोः पुण्यं हृष्यामि च मुहुर्मुहुः ॥७६॥
तच्च संस्मृत्य संस्मृत्य रूपमत्यद्भुतं हरेः ।
विस्मयो मे महान्राजन्हृष्यामि च पुनः पुनः ॥

---



आज दो नो समय भो-तथा निवास दीनानाथ के घर आज पड़ आ गये थे. एक साधु के डेरे पर बैठे थे.

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः ।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम ॥७८॥
ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां
योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे मोक्षसंन्यास-
योगो नामाष्टादशोऽध्यायः ॥१८॥

पौष कृष्ण ७ गुरु ] ३१ दिसम्बर [ पौष १९

आज दोनो समय भो-तथा निवास
दीनानाथ के घर. आज बुखार आया.

हे. धा.

यादद्दाश्त

ता. १-१-३२ शु. —
आज दोनों समय भो. तथा निवास दीनानाथ के घर. बुखार आया था.
ता. २-१-३२ श. —
आज दीनानाथ के पास खाना खाकर चलते समय दीनानाथ ने १ रु. दिया मैं 'फतनौर' से पैदल 'सीको ठाकुरान' शामको पहुंचा यह १६ मील है.
यहां एक महात्मा बूढे ब्रह्मचारी से मुलाकात हुई. इन्होने बडे प्रेम से आग्रह पूर्वक रख्खा. रात को वृन्दालाल ब्राह्मण के घर भोजन तथा निवास महात्मा के साथ.
ता. ३-१-३२ र. आज भी यहीं महात्मा के साथ एक ब्राह्मण के घर भो. रात को बुखार
ता. ४-१-३२ सो. आज यहां वृन्दालाल ब्राह्मण के घर रोटी खाकर यहां से पैदल १० मील आकर 'नूरपुर मोड' पर तांगे पर सवार होकर 'मवाना कोर' ५।।। बजे ।) तांगा ~) मीठा रातभर धर्मशाले में सोये.

## याद्दाश्त

पं· [illegible] [illegible] [illegible] कांगड़ा
पं· [illegible] शर्मा अजमेरी पो· [illegible]
शेरी [illegible] ([illegible]) कांगड़ा
पं· [illegible] पुजारी [illegible] [illegible]

सलीमार नाथ
रियासी [illegible] कुम्हार दी
सुमेरगीर नयाशहर के पास
कठूआ प्रेमनाथ जी के मकान
सन्तराम -चेन्द्र [illegible]
तहसील उधमपुर
पं· ईश्वरीप्रसाद शर्मा.
[illegible] डा· [illegible]
[illegible] फलोदी [illegible]
कांगड़ा.

ता.
आज
दीना
ता.
आज
चलते
मैं का
पहुंच
यहां
हुई
रातको
निवा
ता.
साथ
ता. ४
के घर
नूरपु
५॥।

## याददाश्त

गिर आनन्द [illegible] १ [illegible] — काशीदास [illegible]

३ ओदाडजी, २ [illegible] —

को [illegible] बाजारसे [illegible]

मे [illegible] को [illegible]

[illegible] भाग [illegible] —

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

यादृदाश्त

यादृदाश्त

बरोट —

यह जगह बहुत रमणीक है. यहां 'उहल' द
बहता है. यहां उहल से हाइडल बना है. इस
दरिया को रोक कर टनल से जोगेन्द्र नगर
नगर में बिजली निकाली जा रही है. बरोट
मण्डी स्टेट में है यहां से कांगडे की हद शु
रू होती है. देवदार के जंगल है. आब
व हवा अच्छी है.
साधारण

---

जोगेन्द्र नगर

यह मण्डी स्टेट में है. यहां बिजली का कारखा
तैयार हो रहा है. बाजार होगया है.
आबहवा अच्छी है. बरोट के इतनी यह
जगह सुन्दर नहीं. इसके आसपास
है.

# याददाश्त

अमीरचन्द खत्री और उमा ये दो तो
आदमी पत्थर से भी नीच हैं।
पहला एक का पैसा न मारता रहे और दूसरा
हैरे [illegible] में जो करे। उमा [illegible]
रहे [illegible]
[illegible]

## याद्दाश्त

## याद्दाश्त

याददाश्त

जन्म सं. १९६० आषा. शु. ९ शुक्रवार
जन्मकालमें दशमी सूर्यास्तसमयमें
अंग्रेजीतारीख ३ जुलाई १९०३ सन् ज

याददाश्त

सन १९२३ मे विक्रमज्योति व नाकल्पद्रपाद
सन १९३६ में आधि[illegible] की तृतीय
सम्पादन.
सन १९२७ में [illegible] कर नारायणी
का सम्पादन
[illegible] १९२९ में [illegible]
[illegible] व प्रदीप का सम्पादन.
सं. १९८५ मार्ग. कृ. ३ शु. को घर से
निकल जाना.

द्वारु चन्द्रिका